Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.com

भिक्षु वाणी

जो थारे दिल कांय न बेंसें
तो सगलो झगड़ो चूको।
समता आदर नें कजीया छोड़ो,
जिण-तिण आगें म कूको।।

यदि तुम्हारे हृदय में कुछ नहीं बैठता है तो सब झगड़ों को छोड़ो। समता में रहो, कलह को छोड़ो, किसी के सामने रोना मत रोओ।

– आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली • वर्ष 27 • अंक 42 • 20 जुलाई - 26 जुलाई 2026 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 11-07-2026 • पेज 24 ₹ 10 रुपये

आद्य अनुशास्ता आचार्य श्री भिक्षु की 'त्रिजन्मशताब्दी पूर्णाहुति' पर श्रद्धावनत कृतज्ञता-वंदन

कंटालिया का वह दिव्य सूर्य, जिससे आलोकित यह संसार है,
एक आचार और एक आचार्य का नियम ही, शासन का सच्चा श्रृंगार है।
तुलसी-महाप्रज्ञ का आशीष लिए, लाडनूं से महाश्रमण करते उपकार हैं,
त्रिजन्मशताब्दी की इस पूर्णाहुति पर, गूँज रहा 'तेरापंथ' का जयकार है!

श्रद्धाप्रणत अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स परिवार

'ज्ञान और चारित्र के तेजस्वी सूर्य थे आचार्य महाप्रज्ञ' : आचार्यश्री महाश्रमण

अध्यात्म, साहित्य और प्रेक्षाध्यान के अमर प्रणेता आचार्य महाप्रज्ञ जी का 107वां जन्म दिवस

पूज्य प्रवर ने याद किया आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का पुरुषार्थ; संस्कृत वैदुष्य से लेकर प्रेक्षाध्यान के अंतरराष्ट्रीय डंके का किया बखान

लाडनूं।
12 जुलाई, 2026

जैन विश्व भारती परिसर में योगक्षेम वर्ष का मंगल प्रवास कर रहे जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्म संघ के ग्यारहवें अधिशास्ता, युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की मंगल सन्निधि में तेरापंथ धर्म संघ के दसवें अधिशास्ता, प्रेक्षा प्रणेता आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का १०७वां जन्म दिवस आध्यात्मिक रूप में समायोजित हुआ।

शारीरिक, मानसिक और भावात्मक स्वास्थ्य का महत्त्व : प्रातःकालीन मुख्य मंगल प्रवचन कार्यक्रम में आचार्यप्रवर ने 'प्रज्ञा से समीक्षा करें' विषय पर पावन देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि–

१. आदमी का शरीर पुष्ट, शक्तिशाली और स्वस्थ हो तो वह अनुकूलता से कार्य, परिश्रम, यात्रा और प्रवचन कर सकता है। शरीर की ऐसी अनुकूलता रहनी चाहिए कि कम से कम डॉक्टर और दवाइयों की आवश्यकता पड़े।

२. शारीरिक स्वास्थ्य के साथ जीवन में मानसिक स्वास्थ्य का भी बड़ा महत्त्व है, जिससे मन में शांति व समाधि रहे तथा भय, चिंता व क्रोध के कारण जीवन में उथल-पुथल की स्थिति पैदा न हो।

> रटा हुआ ज्ञान कुंड का ठहरा पानी है, और भीतर से जागी प्रज्ञा कुएं का बहता झरना है।
> **–आचार्यश्री महाश्रमण**

३. मानसिक स्वास्थ्य से भी आगे भावात्मक स्वास्थ्य का महत्त्व है। हमारे भीतर घृणा व नफरत के भाव न हों और अध्यवसाय पूरी तरह शुद्ध रहें।

४. हमारे भाव जगत का मूल कारण कार्मण शरीर है। कर्मों के अनुरूप ही भाव व अध्यवसाय होते हैं और उनका सीधा असर हमारे मन व शरीर पर पड़ता है।

ज्ञान के दो रूप : कुएं और कुंड का पानी : आचार्यश्री ने ज्ञान प्राप्ति के पुरुषार्थ को सुंदर उदाहरण से समझाते हुए फरमाया कि–

१. रटकर व पढ़कर प्राप्त किया गया ज्ञान 'कुंड के पानी' जैसा है, जिसमें उतना ही जल रहता है जितना बाहर से डाला जाता है।

२. इसके विपरीत, अवधि ज्ञान, मनःपर्यव ज्ञान और मति-श्रुत ज्ञान 'कुएं के पानी' के समान है, जिसमें भीतर से स्वतः ज्ञान का निरंतर प्रवाह आता रहता है।

३. आचार्य महाप्रज्ञ जी ने बालमुनि की अवस्था में आचार्य तुलसी के सान्निध्य में कड़ा श्रम करके संस्कृत व हिंदी दोनों भाषाओं का असाधारण वैदुष्य हासिल किया था।

साहित्य संपदा, आगम संपादन और प्रेक्षाध्यान का अवदान : गुरुदेव के महान कार्यों को रेखांकित करते हुए आचार्यप्रवर ने फरमाया कि-

१. आचार्य महाप्रज्ञ जी की संस्कृत आशु श्लोक रचना और उनकी महान ग्रंथ रचना 'जैन दर्शनः मनन और मीमांसा' उनके अद्वितीय ज्ञान का जीवंत प्रमाण हैं।

२. आचार्य तुलसी के तत्वावधान में आगम संपादन और प्रेक्षाध्यान के विकास में उन्होंने अपने श्रम व समय का जो नियोजन किया, उसी के कारण आज प्रेक्षाध्यान की पहुंच अंतरराष्ट्रीय स्तर पर है।

३. समण श्रेणी का विकास और ज्ञानवर्धन का सशक्त माध्यम बनी 'महाप्रज्ञ श्रुताराधना' पाठ्यक्रम धर्मसंघ को उनका बहुत बड़ा अवदान है।

(शेष पेज 18 पर)

आचार्य महाप्रज्ञ जी का ऐतिहासिक संयम काल

पूज्य प्रवर ने दशम् अधिशास्ता के गौरवशाली जीवन वृत्त पर प्रकाश डालते हुए फरमाया कि–

1. आज आषाढ़ कृष्णा त्रयोदशी के दिन आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का 107वां जन्म दिवस है, जिन्होंने महज 11 वर्ष की बाल्यावस्था में मुनि दीक्षा स्वीकार कर ली थी।
2. तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्यों में सबसे लंबा संयम पर्याय और अब तक का सर्वाधिक जीवन पर्याय आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का ही रहा है।

हवा, जल और भोजन हैं जीवन का आधार, पर संयम के बिना सब बेकार : आचार्यश्री महाश्रमण

उत्तरज्झयणाणि आगम के माध्यम से पूज्यप्रवर ने दिया स्वाद का त्याग करने और सहज जीवन जीने का संदेश

लाडनूं।
13 जुलाई, 2026

तेरापंथ धर्म संघ के ग्यारहवें अधिशास्ता, अहिंसा यात्रा प्रणेता महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने 'उत्तरज्झयणाणि' आगम के माध्यम से 'एषण समितिः स्वरूप और विधि' विषय पर गंभीर विवेचन किया। आचार्यश्री ने फरमाया कि साधु जीवन में पांच महाव्रत, पांच समितियां और तीन गुप्तियां होती हैं। इनमें तीसरी 'एषणा समिति' सीधे भोजन, पानी और वस्त्र की शुद्धता से जुड़ी है।

लाइफ की ३ फर्स्ट-क्लास जरूरतें : आचार्यश्री ने समझाया हवा-पानी का असली गणित पूज्यप्रवर ने आज की भागदौड़ भरी

जिंदगी में इंसानी शरीर की प्राथमिकताओं को बहुत ही सरल क्रम में समझायाः

१. **हवा (ऑक्सीजन):** यह जीवन की सबसे पहली और अनिवार्य जरूरत है। इसके बिना कुछ दिन तो क्या, कुछ घड़ी (मिनट) भी निकालना नामुमकिन है।

> आवश्यकताएं सिर्फ शरीर की होती हैं, आत्मा की तृप्ति तो अनासक्ति और संतोष में है।
> **–आचार्यश्री महाश्रमण**

२. **जल (पानी) :** जीवन का दूसरा सबसे बड़ा आधार। भोजन के बिना इंसान कई दिन गुजार सकता है, लेकिन पानी के बिना लंबा वक्त निकालना बेहद कठिन है।

३. **भोजन (फूड):** यह तीसरे स्थान पर आता है। सिर्फ पानी पीकर भी इंसान कई दिनों तक जीवित रह सकता है।

नो-सिग्नल नो-टेस्ट : गोचरी के कड़े नियम और अनासक्ति का सिद्धांत : आचार्यश्री ने साधु जीवन की गोचरी की शुचिता के लिए 'कंट्रोल' का महत्व बताते हुए फरमाया।

१. **१६ उद्‌गम दोषों से बचाव :** साधु को गोचरी में पूरी गवेषणा (जांच-पड़ताल) करनी चाहिए, ताकि आधाकर्मी जैसे दोषों से बचा जा सके। कोई भी चीज लेने से पहले अच्छी तरह पूछताछ जरूरी है।

२. **स्वाद के लिए कोई इशारा नहीं :** चारित्रात्माओं को स्वाद वृत्ति के वशीभूत होकर गृहस्थ के घर में किसी भी तरह का इशारा या संकेत करने से पूरी तरह बचना चाहिए।

(शेष पेज 18 पर)

रिश्तों का मेला तो बस एक छलावा है, निश्चय में आत्मा हमेशा अकेली है : आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री ने दिए मुक्ति के ४ अचूक सूत्र; फरमाया—दुराग्रह छोड़ो और आग्रहहीन चिंतन के द्वार हमेशा खुले रखो

लाडनूं।
11 जुलाई, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने 'पाश बहुल संसारः कैसे मुक्त विहार?' विषय पर पावन अमृत देशना प्रदान की। आचार्यश्री ने उत्तरज्झयणाणि आगम के माध्यम से महात्मा केशी और महात्मा गौतम के ऐतिहासिक संवाद का प्रसंग रखते हुए फरमाया कि जब मुनि केशी ने पूछा कि इस पाश बद्ध संसार में रहते हुए भी आप मुक्त रहकर कैसे विहार कर रहे हो? तब गौतम स्वामी ने उत्तर दिया कि संसार के जितने भी पाश हैं, उन्हें मैंने उपाय पूर्वक काट दिया है और अब मैं मुक्त पाश व लघुभूत होकर आनंदपूर्वक विहार कर रहा हूँ।

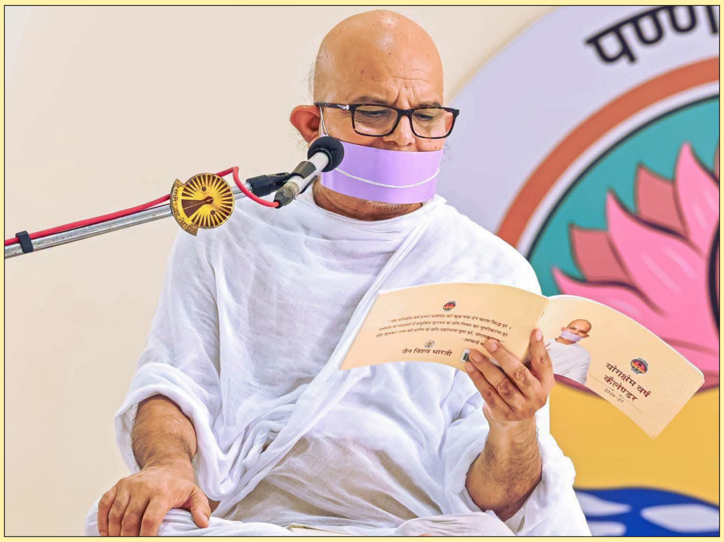

आगम के अनुसार ये हैं संसार के वे भयंकर पाश : पूज्यप्रवर ने विस्तार से स्पष्ट किया कि संसार में प्राणी किन अदृश्य बंधनों में जकड़ा हुआ है और साधु की स्थिति उससे कैसे भिन्न होती है।

१. राग, द्वेष और स्नेह का बंधन : महात्मा गौतम स्वामी के अनुसार इस संसार में प्राणी सबसे ज्यादा राग, द्वेष और स्नेह के भयंकर पाशों में बंधा हुआ है, जो जीव के पतन का मूल कारण बनते हैं।

२. मोह का गहरा जाल : गृहस्थ लोग जीवन भर स्नेह और मोह के पाश में बुरी तरह फंसे रहते हैं। उनके लिए धन-दौलत, पद-प्रतिष्ठा, मान-सम्मान और कुल-खानदान आदि ही वे सांसारिक पाश हैं, जिससे मानव पूरी तरह आबद्ध रहता है।

३. साधु की संबंधातीत दुनिया : साधु की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह हर प्रकार के सांसारिक संयोगों से विप्रमुक्त होता है। जैसे कमल पानी के भीतर रहकर भी उससे अलिप्त रहता है, ठीक वैसे ही साधु इन तीव्र पाशों का छेदन कर संसार के बीच रहते हुए भी अलिप्त रहता है।

४.धार्मिक संगठन का प्रोटोकॉलः आचार्यश्री ने फरमाया कि दीक्षा लेकर हमने एक छोटे परिवार को भले ही छोड़ दिया हो, किन्तु अब हम धर्मसंघ के एक बहुत बड़े परिवार में आ गए हैं। इस धार्मिक संगठन के अपने विशेष रीति-रिवाज और प्रोटोकॉल होते हैं, जिनका निष्ठापूर्वक पालन करना कर्तव्य है।

> बाहर कोई बंधन नहीं; आपका अपना राग, द्वेष और मोह ही सबसे बड़ी जेल है।
> –आचार्यश्री महाश्रमण

पाशों से मुक्ति के अचूक उपाय और पावन सूत्रः आचार्यश्री ने इन आत्मिक बंधनों को हमेशा के लिए काटने और साधना पथ को सुदृढ़ बनाने के लिए गहरे व्यावहारिक सूत्र प्रदान किए।

१. अन्यत्व भावना का गहरा प्रयोग : जीवन में १२ अथवा १६ अनुप्रेक्षाओं का निरंतर उपयोग करके हम अपने राग-द्वेष के भावों को कम कर सकते हैं। अनित्य और अशरण आदि भावनाओं का अनुचिंतन करें कि यह आत्मा बिल्कुल अलग है और ये सांसारिक लोग अलग हैं; व्यवहार में चाहे जितने संबंध हों, पर निश्चय में आदमी हमेशा अकेला ही होता है।

२. राग से क्रमिक मुक्ति की अनिवार्यता : संसार में किसी के प्रति द्वेष की भावना से मुक्त होना तो अपेक्षाकृत सरल है, परन्तु पूर्णतया राग का नाश सबसे अंत में यानी बारहवें गुणस्थान में ही संभव होता है। जब तक आत्मा से राग पूरी तरह समाप्त नहीं होगा, तब तक कोई भी साधु पूर्ण वीतराग नहीं बन सकता।

३. आग्रहहीन चिंतन के द्वार : वर्तमान समय में यदि पूर्णतया राग की समाप्ति न भी हो सके, तो भी निरंतर राग-द्वेष को कम करने की साधना का प्रयास अवश्य करना चाहिए। साधु के भीतर दुराग्रह के रूप में कभी राग नहीं होना चाहिए, बल्कि ज्ञान की अच्छी बात जहाँ से भी प्राप्त हो, उसे ग्रहण करने के लिए चिंतन के द्वार हमेशा खुले रखने चाहिए।

४. दोहरे दृष्टि राग से पूर्ण बचावः साधु को अपने दर्शन या सिद्धान्त के प्रति दुराग्रह रूपी राग से हमेशा दूर रहना चाहिए, क्योंकि यह दृष्टि राग का ही एक रूप है। इसका दूसरा रूप अवांछनीय या सांसारिक दृश्यों को देखने का तीव्र आकर्षण है। प्रवचन के उपरान्त जैन विश्व भारती द्वारा मुनि जय कुमार जी की कृति 'उसको' पुस्तक आचार्यश्री के समक्ष लोकार्पित की गई।

वेश केवल 'विजिटिंग कार्ड' है, मोक्ष तो पवित्र चारित्र से ही संभव : आचार्यश्री महाश्रमण

जैन विश्व भारती में 'वेश और साधुता' विषय पर बही अमृत देशना;बिना साधु-वेश के भी मरुदेवा माता और चक्रवर्ती भरत को मिला मोक्ष

लाडनूं।
09 जुलाई, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने 'वेश और साधुता' विषय पर पावन पाथेय प्रदान किया। आचार्यश्री ने उत्तरज्झयणाणि आगम के माध्यम से कुमार श्रमण केशी और गौतम स्वामी के ऐतिहासिक संवाद का प्रसंग रखते हुए फरमाया कि वेश और साधुता दो अलग-अलग चीजें हैं। वस्त्र या उपकरण केवल बाहरी पहचान हैं, मूल साधुता आत्मा के भीतर होती है।

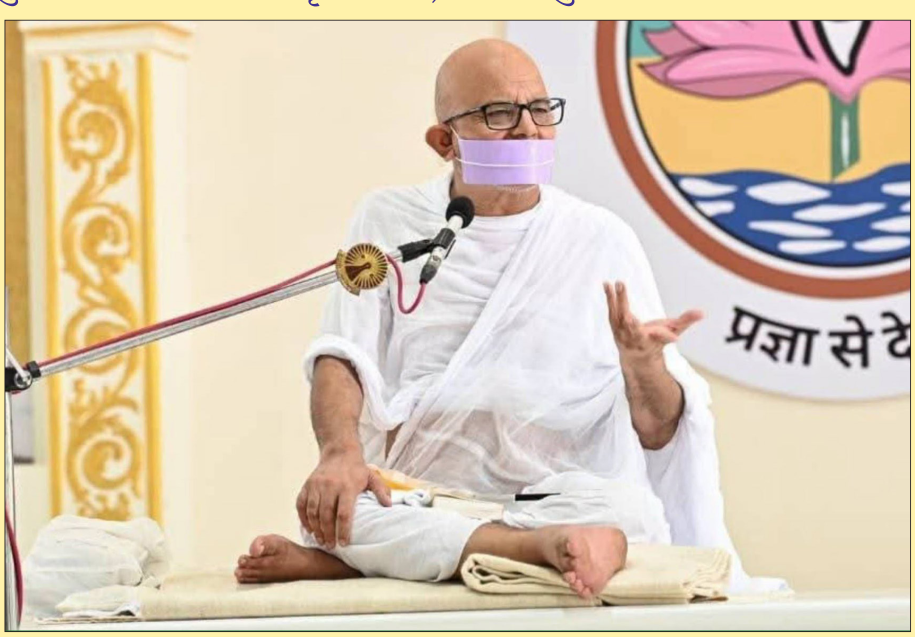

वेश, लिंग और धर्मोपकरण के ३ मुख्य कारण : पूज्यप्रवर ने व्यवहार जगत में साधु वेश धारण करने के तीन प्रमुख व्यावहारिक कारण स्पष्ट किए।

१. लोक प्रतीति (पहचान): वेश से समाज में यह पहचान होती है कि ये साधु हैं, ताकि लोग उनके पास आकर धार्मिक ज्ञान ले सकें और उनके सम्प्रदाय को समझ सकें।

२. जीवन यात्रा का निर्वाह : सर्दी-गर्मी आदि मौसम से शरीर के बचाव और जीवन यात्रा को सुचारू रूप से चलाने के लिए वेश और वस्त्रों की अपेक्षा होती है।

३. आत्म-बोध (स्वयं को ध्यान रहना) : गृहस्थों से अलग वेश साधु को हर पल यह अहसास कराता रहता है कि "मैं साधु हूँ" और मुझे किसी भी गलत कार्य या आचरण से बचना है।

साधुता के लिए वेश अनिवार्य नहीं, ज्ञान-दर्शन-चारित्र ही मूल : आचार्यश्री ने आध्यात्मिक गहराई को छूते हुए परम सत्य को सामने रखा।

१. व्यवहार और निश्चय का भेद : वेश केवल व्यवहार की चीज़ है। निश्चय (आध्यात्मिक) दृष्टि से देखें तो वेश के बिना भी साधुता संभव है। साधुता मुखवस्त्रिका, रजोहरण या वस्त्रों में नहीं है।

२. बिना वेश के भी मोक्ष : मरुदेवा माता और चक्रवर्ती भरत को गृहस्थ वेश में ही केवलज्ञान (परम ज्ञान) की प्राप्ति हो गई थी। मोक्ष के लिए वेश नहीं, बल्कि ज्ञान, दर्शन और चारित्र अनिवार्य हैं।

३. मर्यादा का ध्यान : वर्तमान में सभी संप्रदायों में अपने-अपने वेश की व्यवस्था है। हमें भी हमारे संप्रदाय की मर्यादा और व्यवस्था के प्रति हमेशा सजग रहना चाहिए। प्रवचन के उपरान्त आचार्यश्री ने चारित्रात्माओं की जिज्ञासाओं का समाधान भी किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
20 जुलाई - 26 जुलाई 2026

पण्णा समिक्खए
प्रज्ञा से देखो
योगक्षेम वर्ष
लाडनूं 2026-2027

आचार्य श्री भिक्षु
जन्म त्रिशताब्दी वर्ष
2025-26

भिक्षु वाणी

कोई जीव किसी दूसरे को बचाता है, उससे स्नेह राग का अनुबंध हो जाता है। वह परभव में मिलता है तो उसे देखते ही स्नेह जाग जाता है।

महामना आचार्यश्री भिक्षु के जन्म त्रिशताब्दी

के पावन अवसर पर श्रद्धासिक्त वंदन

Acharya Tulsi® Diagnostic Centre Dental Care

राजाजीनगर, आडुगुड़ी, पैलेस गुट्टहल्ली

:: संचालित ::

तेरापंथ युवक परिषद, गांधीनगर-बेंगलुरु

पण्णा समिक्खए
प्रज्ञा से देखो
योगक्षेम वर्ष
लाडनूं 2026-2027

आचार्य श्री भिक्षु
जन्म त्रिशताब्दी वर्ष
2025-26

महामना आचार्यश्री भिक्षु के जन्म त्रिशताब्दी

के पावन अवसर पर अभिवंदना

:: श्रद्धाप्रणति ::

तेरापंथ युवक परिषद, जयपुर

प्रज्ञा से देखो
योगक्षेम वर्ष
लाडनूं 2026-2027
आचार्य श्री भिक्षु
भिक्षु वाणी
जो दान मात्र में धर्म कहता है वह जैन धर्म की शैली को नहीं समझ पाया।
वह अज्ञानी मनुष्य गाय और आक के दूध को एक साथ मिला रहा है।
महामना आचार्यश्री भिक्षु के जन्म त्रिशताब्दी
के पावन अवसर पर वंदन, अभिनंदन।
Acharya Tulsi
Diagnostic Centre
Dental Care
848D & 847A, Block-A, Lake Town, Kolkata-700089
Acharya Mahapragya
Medicals
848B, Block-A, Lake Town,
Kolkata-700089
तेरापंथ युवक परिषद, पूर्वांचल कोलकाता

अणुव्रत वाटिका का हुआ शुभारंभ

नोखा।

अणुव्रत के सिद्धांतों को जन-जन तक पहुंचाने और पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्य से शनिवार को नोखा में अणुव्रत वाटिका का शुभारंभ राजकीय राठी उच्च माध्यमिक विद्यालय मैदान में समारोहपूर्वक किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विनोद मेलाना सचिव,अपना संस्थान राजस्थान ने पौधा लगाकर वाटिका का उद्घाटन किया। क्षेत्र पर्यावरण संरक्षण गतिविधि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ राजस्थान के संयोजक मेलाना ने कहा कि अणुव्रत वाटिका केवल पौधों का संग्रह नहीं है, बल्कि यह संयम, नैतिकता और पर्यावरण प्रेम का प्रतीक है। अणुव्रत के नियमों को जीवन में अपनाकर हम स्वस्थ समाज और स्वच्छ पर्यावरण दोनों का निर्माण कर सकते हैं। अखिल भारतीय पर्यावरण राजस्थान नारी शक्ति प्रमुख साधना मेलाना ने इस अवसर पर प्लास्टिक के उपयोग को त्यागने, रसोईघर को इको फ्रेंडली बनाने का आह्वान किया। अणुव्रत समिति अध्यक्ष रमेश व्यास ने बताया कि इस वाटिका में नीम, बरगद, अशोक, जामुन सहजन सहित 400 औषधीय पौधे लगाए जा रहे हैं। बूंद बूंद से सिंचाई सिस्टम विकसित किया जा रहा है। अणुव्रत समिति, सामाजिक संगठनों एवं नोखा के नागरिकों के सहयोग से वाटिका निर्माण किया जा रहा है l साथ ही वाटिका में श्रमदान एवं आर्थिक सहयोग की अपील की कार्यक्रम के संयोजक सतीश झंवर ने पर्यावरण संबंधी किया जा रहे कार्यों की जानकारी देते हुए सभी का आभार व्यक्त किया।

अणुव्रत व्याख्यानमाला का आयोजन

अहमदाबाद।

साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी के तत्त्वावधान में उस्मानपुरा स्थित गुजरात विश्वकोष-भवन में अणुव्रत समिति अहमदाबाद, अणुव्रत लेखक मंच एवं इन्स्टीट्यूट ऑफ जैनोलॉजी के संयुक्त तत्त्वावधान में 'युद्ध, अहिंसा एवं अणुव्रत' विषय पर व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया।

इस गरिमामय कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में साहित्यकार एवं जैन-दर्शन चिंतक पद्मश्री कुमारपालभाई देसाई तथा अणुव्रत लेखक मंच के संयोजक जिनेन्द्र कोठारी उपस्थित हुए। कार्यक्रम में भाई-बहनों की भारी उपस्थिति से पूरा हॉल खचाखच भर गया था। साध्वी अणिमाश्रीजी ने अपने प्रेरणादायी उद्बोधन में कहा— 'आचार्य तुलसी ने असंप्रदायिक धर्म की व्याख्या कर मानवता की सुंदर भूमि पर अणुव्रत का दीप प्रज्ज्वलित किया, जिससे पूरी मानवजाति आलोकित हुई। अणुव्रत चरित्र निर्माण का एक व्यापक दर्शन है। इंसान के भीतर इंसानियत जागृत होने पर धरती से युद्ध व हिंसा का तांडव समाप्त हो जाएगा। युद्ध का सबसे महत्वपूर्ण कारण असंयम है, जबकि अणुव्रत संयम की बात करता है। यदि हर व्यक्ति में संयम की चेतना जाग जाए, तो युद्ध जैसी समस्याओं का स्वतः समाधान हो जाएगा।' उन्होंने आगे कहा कि कुमारपालभाई अनवरत ज्ञानोपयोग में रहने वाले व्यक्ति हैं, जिन पर तीनों आचार्यों (आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ व आचार्य महाश्रमण) की विशेष कृपा रही है। वे महावीर के दर्शन को जन-जन तक पहुँचाते रहें, यही मंगलकामना है। मुख्य वक्ता पद्मश्री डॉ. कुमारपाल देसाई ने कहा— 'भारत के हजार वर्ष के इतिहास में आचार्य तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञजी जैसी दुर्लभ जोड़ी मिलना कठिन है। आकाश का सूरज रोज धरती को आलोकित करता है, किंतु आचार्य तुलसी ने अणुव्रत रूपी ऐसा सूरज दिया जो मानव-मन के अंधेरे को दूर करता है। अणुव्रत नई दुनिया का सृजनहार है। अगर आदमी बदल जाए तो युद्ध की समस्याएं समाप्त हो जाएंगी। आचार्य महाप्रज्ञजी एकमात्र ऐसे जैनाचार्य हैं, जिन्होंने अहिंसा समवाय की बात कही। हिंसा से नहीं, बल्कि अहिंसा से ही शांति आएगी।' उन्होंने साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में एक 'पीस कॉन्फ्रेंस' आयोजित करने का निवेदन भी किया। डॉ. साध्वी सुधाप्रभाजी ने पृष्ठभूमि पर चर्चा करते हुए कहा— 'आचार्य तुलसी ने चरित्र सम्पन्नता एवं नीति-निष्ठा की बुनियाद पर अणुव्रत आन्दोलन का सूत्रपात किया। उन्होंने मशाल हाथ में लेकर लाखों किलोमीटर की पदयात्रा की और लाखों लोगों को इस मिशन से जोड़ा।' कार्यक्रम में अणुव्रत लेखक मंच के राष्ट्रीय संयोजक जैनेन्द्र जैन ने मंच की जानकारी देकर आचार-संहिता का वाचन किया। नलिनी देसाई ने इन्स्टीट्यूट ऑफ़ जैनोलॉजी का परिचय दिया। समिति की अध्यक्ष डिम्पल श्रीमाली ने स्वागत भाषण दिया और आभार ज्ञापन मंत्री मनीषा दक ने किया। भिक्षु भजनमंडल ने अणुव्रत गीत के द्वारा मंगल संगान किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन अणुव्रत लेखक मंच के सहसंयोजक संतोष सुराणा ने किया।

दम्पति कार्यशाला का हुआ आयोजन

दादर

शासन श्री साध्वी कंचन प्रभाजी, तथा शासनश्री साध्वी मंजु रेखाजी के सानिध्य एवं दादर महिला मण्डल के तत्वावधान में नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। साध्वी वृन्द द्वारा गीत का संगान हुआ। शासन श्री साध्वी कंचनप्रभाजी ने कहा दम्पती परिवार की एक ताकत है अनेक उतार-चढाव बावजूद भी परिवार के पोषण में अहं भूमिका निभाते हैं। शासनश्री साध्वी मंजु रेखा ने कहा 'सुहाना सफर' कार्यशाला संस्कारों के सृजन के साथ घर-घर चेतना का दीया जला रही है। साध्वी श्री चेलना श्री ने जी कहा यह कार्यशाला प्रेरणा का हिस्सा है इसका मतलब यही है कि संस्कार और सौहार्द जिन्दगी को पैदा करते हैं। साध्वी उदित प्रभाजी ने विचार व्यक्त करते हुए कहा- आज की इस आपा -धापी भरी होड़ में व्यक्ति बदल रहा है परिवार बदल रहे है ऐसे नाजुक दोर में हर संभव जागृति पैदा कर परिवार में एक नया आलेख लिखना चाहिये। साध्वी मंजुरेखाजी ने प्रश्नों के द्वारा पूरी कार्यशाला को एक नया उपहार दिया। दादर महिला मण्डल की अध्यक्षा पुनम कोठारी, सभा के अध्यक्ष अर्जुन धाकड़ निवर्तमान अध्यक्ष गणपत मारू ने विचार व्यक्त किए। महिला मण्डल की मंत्री स्नेहलता कोठारी ने आभार ज्ञापन किया।

बाग़बान कार्यक्रम आयोजित

गुलाब बाग।

आचार्य श्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि प्रशांत कुमारजी और मुनि कुमुद कुमारजी के सान्निध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित 'बाग़बान' कार्यक्रम गुलाब बाग महिला मंडल द्वारा आयोजित किया गया। जनसभा को संबोधित करते हुए मुनि प्रशांत कुमारजी ने कहा, 'बगीचे में अनेक तरह के फल-फूल के पौधे होते हैं। बगीचा हरा-भरा रहता है तो सबको अच्छा लगता है। पक्षी भी वहीं जाते हैं जहाँ हरियाली हो। परिवार भी एक बगीचा है। परिवार रूपी बगीचा हरा-भरा रहे तो आने वाले व्यक्ति को प्रसन्नता होती है और आनंद मिलता है। यदि मन सूखा हो, तो बाहरी साज-सज्जा जीवन को सुंदर नहीं बना सकती। एक-दूसरे के प्रति प्रेम, समर्पण भाव और स्वार्थ-त्याग की भावना होनी चाहिए। जब परिवार को सुखी रखने और उसे आगे बढ़ाने की भावना रहती है, तो परिवार हरा-भरा रहता है। जहाँ दिमाग में पैसा हावी हो जाता है, वहाँ परिवार सुखी नहीं रह पाता।' उन्होंने आगे कहा, 'बड़े-बुजुर्गों के मन को शांति मिलनी चाहिए। अपनी सुविधाओं को गौण करके अभिभावकों की सेवा करें और अपने-अपने कर्तव्य का पालन करें। यदि माता-पिता के मन में अशांति रहती है, तो घर में आनंद नहीं रहता। बड़ों का आशीर्वाद जीवन में बहुत बड़ा सहायक होता है। बड़े-बुजुर्ग परिवार की छत होते हैं। बड़ों को भी चाहिए कि वे छोटों को वात्सल्य एवं स्नेह देते रहें और अपने आप को कमजोर न समझें।' मुनि कुमुद कुमारजी ने कहा, 'आचार्य भिक्षु ने व्यवहारनय की दृष्टि से दिशा-बोध देते हुए कहा था कि सभी साधु-साध्वी आपस में सौहार्द, मैत्री और प्रेम भाव से रहें। जब एक से अधिक सदस्य एक साथ रहते हैं, तो आपसी स्नेह और सहयोग का भाव होना बहुत ज़रूरी है। हमें परिवार के साथ रहना और जीना सीखना चाहिए। सप्ताह में कम से कम एक बार सामूहिक भोजन, भजन और संवाद होता रहे, तो विचारों का आदान-प्रदान होता है और एक-दूसरे के साथ समय व्यतीत होता है। इससे मन में गाँठ बंधने की स्थिति नहीं बनती और बहुत सारी समस्याएँ स्वतः ही दूर हो जाती हैं। हमें अपेक्षाओं से भी बचना चाहिए। अपेक्षा की पूर्ति न होना और उपेक्षा का शिकार होने से व्यक्ति अपने आप को दुखी बना लेता है। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल के मंगलाचरण से हुआ। लीला ललवाणी ने अपने विचार व्यक्त किए। आभार ज्ञापन महिला मंडल अध्यक्षा बबिता मालू ने किया, जबकि कार्यक्रम का कुशल संचालन संतोष श्रीमाल द्वारा किया गया।

'स्वर गूंजे निर्माण के' कार्यशाला का किया गया आयोजन

जयपुर।

परम पूज्य युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के पावन प्रवास स्थल लाडनूं स्थित आचार्य तुलसी ऑडिटोरियम में तेरापंथ युवक परिषद, जयपुर द्वारा 'स्वर गूंजे निर्माण के' कार्यशाला का आयोजन किया गया।

परिषद के अध्यक्ष प्रवीण जैन के नेतृत्व में आयोजित इस कार्यशाला में परिषद के पदाधिकारियों एवं कार्यसमिति सदस्यों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता निभाई।कार्यशाला को बहुश्रुत मुनि दिनेशकुमार जी स्वामी, अभातेयुप के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि योगेशकुमार जी स्वामी तथा मुनि मर्यादा कुमार जी का प्रेरणादायी सान्निध्य एवं मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। अपने प्रेरक उद्बोधन में संतों ने युवकों एवं किशोरों को संगठन से जुड़कर सेवा, संस्कार एवं आध्यात्मिक मूल्यों को जीवन में आत्मसात करने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा निर्धारित सेवा, संस्कार एवं संगठन के आयामों को प्रभावी रूप से क्रियान्वित कर समाज में आध्यात्मिक जागृति का वातावरण निर्मित करना युवाओं की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। उन्होंने यह भी कहा कि तेरापंथ युवक परिषद, जयपुर देशभर की शाखा परिषदों में अपनी विशिष्ट पहचान रखती है और उससे सदैव अनुकरणीय कार्यों की अपेक्षा रहती है। तेरापंथ युवक परिषद, जयपुर के अध्यक्ष प्रवीण जैन ने अपने उद्बोधन में कहा कि परिषद का प्रत्येक कार्यकर्ता समाज एवं धर्मसंघ के प्रति समर्पण की भावना के साथ कार्य करते हुए संगठन को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने के लिए संकल्पित है।

संक्षिप्त खबर

'जॉय बियॉन्ड रिस्पॉन्सिबिलिटीज़' विषय पर कार्यशाला का आयोजन

दिनहाटा। तेरापंथ महिला मंडल, दिनहाटा के तत्वावधान में रविवार को 'जॉय बियॉन्ड रिस्पॉन्सिबिलिटीज़' विषय पर एक प्रेरणादायी एवं संवादात्मक कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया। कार्यशाला का संचालन सीपीएस एकेडमी फॉर लीडरशिप एंड एक्सीलेंस के मार्गदर्शन में प्रोविजनल नेशनल ट्रेनर दीया ओसवाल द्वारा किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण के साथ हुआ। इसके पश्चात तेरापंथ महिला मंडल, दिनहाटा की अध्यक्षा चंदा बैद ने दीया ओसवाल का स्वागत किया। कार्यशाला पूर्णतः सहभागितापूर्ण रही, जिसमें विभिन्न गतिविधियों, संवाद एवं चिंतन के माध्यम से प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। लगभग 60 महिलाओं की गरिमामयी उपस्थिति ने कार्यक्रम को सफल बनाया।

सम्यक दर्शन कार्यशाला 2025 के अंतर्गत सम्मानित

विजयनगर। आचार्य भिक्षु पर आधारित वर्ष 2025 की सम्यक दर्शन कार्यशाला में उत्कृष्ट कार्य के लिए तेरापंथ युवक परिषद, विजयनगर को समण संस्कृति संकाय, लाड़नूं द्वारा पूज्य आचार्य महाश्रमण के पावन सान्निध्य में देशभर में तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। इस अवसर पर तेयुप विजयनगर के अध्यक्ष पवन बैद को सम्यक दर्शन कार्यशाला में उत्कृष्ट योगदान के लिए 'श्रेष्ठ कार्यकर्ता' सम्मान से सम्मानित किया गया। यह उपलब्धि साध्वी संयमलता जी ठाणा-4 की विशेष प्रेरणा एवं मार्गदर्शन से संभव हुई, जिनकी प्रेरणा से 300 से अधिक फॉर्म भरवाए गए। कार्यक्रम में अभातेयुप अध्यक्ष पवन मांडोत एवं कार्यकारिणी सदस्य उत्तम बागरेचा की गरिमामयी उपस्थिति रही। इस कार्यशाला की सफलता में कमलेश चौपड़ा, मनीष श्यामसुखा एवं बरखा पुगलिया का विशेष श्रम एवं सहयोग सराहनीय रहा।

श्री उत्सव का भव्य आयोजन

राउरकेला। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वाधान के अंतर्गत राउरकेला में स्थित तेरापंथ भवन में श्री उत्सव का आयोजन तेरापंथ महिला मंडल द्वारा किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नवकार महामंत्र से की गई तत्पश्चात इस आयोजन के लिए विशेष रूप से पधारे अतिथिगण राउरकेला के वन प्रमंडल अधिकारी रविकांत मीणा एवं उड़ीसा मॉड्यूल ऑफ एन्वॉयरमेंट फॉरेस्ट क्लाइमेंट चेंज प्रमोशन काउंसिल के चेयरमैन अमिताभ एवं अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की श्री उत्सव संयोजिका सुषमा बैगानी का राउरकेला तेरापंथ के अध्यक्ष नेमू जैन एवं महिला मंडल की अध्यक्षा संगीता दूगड़ और युवक परिषद के अध्यक्ष विशाल कोठारी द्वारा स्वागत अभिनंदन किया गया। इसके बाद अतिथियों द्वारा 'श्री' उत्सव का उद्‌घाटन किया गया इस उत्सव में सभी ने बहनों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। जहां एकतरफ बहनों द्वारा ज्वैलरी,कपड़े, होम मेड आइटम्स, ओर राखियों का एक्जिबिशन लगाया वही दूसरी तरफ बहनों ने जैन फूड का स्टाल लगाया। कन्यामंडल की बहनों द्वारा गेम्स भी रखा गया।सभी भाइयों ,बहनों और बच्चों ने इस उत्सव को हर्षोल्लास से मनाया।इस कार्यक्रम का कुशल संचालन मोनिका बोथरा एवं प्रियंका बोथरा ने किया आभार ज्ञापन उड़ीसा प्रभारी नीतू कोठारी द्वारा किया गया।श्री उत्सव में लक्की ड्रॉ भी रखा गया था, जिनके नाम आए उन्हें गिफ्ट्स देकर प्रोत्साहित किया गया।इस उत्सव को सफल बनाने में तेरापंथ सभा,महिला मंडल एवं युवक परिषद का मुख्य रूप से सहयोग मिला उसके लिए।

❖ जो व्यक्ति भाग्य भरोसे बैठ जाता है, पुरुषार्थ नहीं करता, मेरी दृष्टि में वह दुनिया का अभागा व्यक्ति है।
– आचार्य श्री महाश्रमण

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

जैन संस्कार विधि

नूतन प्रतिष्ठान शुभारम्भ

■ **हनुमानगढ़ टाउन।** विद्याधर बोरड़ के नवीन प्रतिष्ठान प्राइम कंसल्टेंट का शुभारंभ जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक संजय कुमार जैन एवं रोहित दुगड़ द्वारा मंगलमय वातावरण में करवाया गया।

■ **साउथ हावड़ा।** छापर निवासी एवं साउथ हावड़ा प्रवासी प्रदीप कुमार–स्व. सरिता दुधोड़िया के सुपुत्र पंकज दुधोड़िया के नूतन प्रतिष्ठान का पूजन जैन संस्कार विधि से कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के सामूहिक संगान से संस्कारक राजेश कुमार चंडालिया एवं ऋषभ सिपानी ने विधि-विधान, मंगल मंत्रोच्चार एवं आध्यात्मिक भावनाओं के साथ सम्पूर्ण पूजन सम्पन्न करवाया।

नूतन गृह प्रवेश

■ **साउथ कोलकाता।** राकेश भादाणी के नवीन आवास का जैन संस्कार विधि से गृह प्रवेश समारोह संपन्न हुआ। तेरापंथ युवक परिषद साउथ कोलकाता एवं तेरापंथ युवक परिषद बेहाला के संयुक्त तत्वावधान में कार्यक्रम का संचालन संस्कारक विनोद सुराणा, सुशील बाफना एवं महावीर दूगड़ ने श्रद्धायुक्त विधि-विधान एवं मंगल भावना के साथ संपन्न कराया।

■ **पूर्वांचल कोलकाता।** सरदारशहर निवासी एवं पूर्वांचल कोलकाता प्रवासी श्री सीमांत जी नाहटा के नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कारक महेन्द्र दुगड़ एवं अनूप गंग ने सिद्धा स्काई, कैनल साउथ रोड,तिलजला, कोलकाता में किया गया।

■ **अलीपुर कोलकाता।** टमकोर निवासी एवं अलीपुर कोलकाता प्रवासी मनोज चोरड़िया के नूतन गृह के शुभारंभ का मंगल कार्यक्रम जैन संस्कारक अनूप गंग ने सुखोबृष्टि, न्यूटाउन, कोलकाता में सम्पूर्ण विधि विधान द्वारा किया गया।

■ **सूरत।** सायरा निवासी सूरत प्रवासी फतेहलाल सोलंकी के पुत्र मितेश सोलंकी के नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक बजरंग बैद, पंकज बुच्चा ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया

नामकरण संस्कार

■ **पूर्वांचल कोलकाता।** श्री क्रांति दुगड़ (सुपुत्र अमरचंद - प्रभा दुगड़) एवं नेहा दुगड़ के पुत्री का नामकरण जैन संस्कार विधि से विवेक विहार, फेस 4, ब्लॉक 4, फ्लैट 3D, G.T.Road, हावड़ा मे जैन संस्कारक पुष्पराज राना ने बड़े ही सुंदर और पूर्ण मंत्रोच्चार से कार्यक्रम को संचालित करवाया।

■ **जयपुर।** ज्योत्सना-अमित जैन गेलड़ा के सुपुत्र, विमला देवी- सुमेरमल गेलड़ा के सुपौत्र एवं शुभांगी -जेठमल सेठिया के दोहिते का नामकरण संस्कार उनके आवास (फ्लेट नंबर एस-7, श्याम अपार्टमेंट, तीसरा माला, सी-77 सरोजनी मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर हॉट ब्रेड के पास, महर्षि दधीचि सर्किल के पास, जयपुर) में संस्कारक पवन जैन ने जैन संस्कार विधि से मंगल भावना पत्रक स्थापित करवाकर सम्पूर्ण प्रक्रिया को सम्पन्न करवाया।

'मन की बात' का श्रवण एवं सम्मान समारोह

भुवनेश्वर।

तेरापंथ युवक परिषद्, भुवनेश्वर द्वारा स्थानीय तेरापंथ भवन में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के लोकप्रिय रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' का सामूहिक श्रवण एवं सम्मान समारोह गरिमामय वातावरण में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में 400 से अधिक लोगों की उत्साहपूर्ण उपस्थिति रही। कार्यक्रम के मुख्य अतिथियों में अपराजिता सारंगी (सांसद, भुवनेश्वर), धरित्री जेना (पार्षद, वार्ड नं. 33), सुरेश कुमार जेना (मंडल अध्यक्ष), रुद्र नारायण सामंतराय (सदस्य, भाजपा ओडिशा) तथा सुजीत कुमार (राज्यसभा सांसद, भारतीय जनता पार्टी) उपस्थित रहे। इस अवसर पर तेरापंथ समाज की विभिन्न क्षेत्रों में दीर्घकालीन एवं उल्लेखनीय सेवाओं के लिए समाज के समर्पित सदस्यों एवं संस्थाओं को माननीय सांसद द्वारा सम्मानित किया गया। सम्मानित होने वालों में शामिल रहे— सिंघी चैरिटेबल ट्रस्ट – जैन लाइब्रेरी के माध्यम से वर्ष 2016 से संचालित सेवा कार्यों एवं पिछले 20 वर्षों से पुस्तकालय विकास में उल्लेखनीय योगदान के लिए। प्रताप सिंघी – जैन लाइब्रेरी एवं समाज सेवा के क्षेत्र में दीर्घकालीन योगदान के लिए। नयन तारा सुखानी – तेरापंथ ज्ञानशाला की प्रमुख के रूप में लगभग 20 वर्षों से सतत एवं समर्पित सेवा के लिए। मनसुखलाल सेठिया – तेरापंथ सभा के पूर्व अध्यक्ष एवं पूर्ववर्ती महासभा अध्यक्ष के रूप में उत्कृष्ट सेवाओं के लिए। साथ ही तेरापंथ सभा, भुवनेश्वर एवं तेरापंथ युवक परिषद्, भुवनेश्वर को भी समाज एवं संगठन के प्रति उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित किया गया। अवसर पर तेरापंथ सभा एवं तेरापंथ युवक परिषद्, भुवनेश्वर की ओर से सभी अतिथियों का आत्मीय स्वागत एवं अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम में मुनि मोहजीत कुमार जी आदि ठाणा 3 का प्रेरणादायी उद्बोधन भी हुआ। अपने संबोधन में आपने सेवा, संस्कार, राष्ट्रभक्ति एवं सामाजिक उत्तरदायित्व के महत्व पर प्रकाश डालते हुए सभी को समाज एवं राष्ट्रहित में निरंतर कार्य करने की प्रेरणा प्रदान की। मुख्य अतिथियों ने भी अपने विचार व्यक्त किए तथा मुनिवृंद के श्रीचरणों में श्रद्धासिक्त वंदना अर्पित की। उन्होंने तेरापंथ युवक परिषद्, भुवनेश्वर द्वारा आयोजित इस प्रेरणादायी कार्यक्रम की सराहना करते हुए परिषद् के प्रति आभार एवं शुभकामनाएँ व्यक्त कीं।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
20 जुलाई - 26 जुलाई 2026

आचार्य श्री भिक्षु त्रिजन्मशताब्दी पूर्णाहुति पर विशेष

आचार्य भिक्षु दिव्य पुरुष थे

● मुनि कमलकुमार ●

आचार्य भिक्षु एक दिव्य पुरुष थे। उनका जीवन अहिंसा, संयम और तप से परिपूर्ण था। बाल्यकाल से ही वे प्रतिभावान थे। स्कूल में उन्होंने महाजनी विद्या पढ़ी, परंतु साधु-संतों के सम्पर्क में रहने के कारण वे जैन तत्वों के अच्छे ज्ञाता बन गये। साधु-संतों की संगति से साधना के प्रति उनका मनोभाव बनता रहा। शादी के बाद भी आपका साधना के प्रति आकर्षण बढ़ता रहा। एक पुत्री होने के बाद आप पूर्ण विरक्त होकर रहने लगे। आपकी धर्मपत्नी सुगुणी के मन पर भी आपके वैराग्य का अच्छा प्रभाव पड़ा और दोनों ही रात्रि-भोजन के त्याग (परिहार) के साथ ब्रह्मचर्य और एकांतर तपस्या में लग गये। दोनों ही गुप्त रूप से साधुत्व की तैयारी में लीन हो गए।

परन्तु सुगुणी बाई का अकस्मात स्वर्गवास हो गया। अब तो आपका मन इतना सुदृढ़ हो गया कि उन्होंने सोचा—'आयुष्य का कोई पता नहीं, कहीं मैं साधुत्व से वंचित न रह जाऊँ।' भिक्षु ने माता से दीक्षा की अनुमति मांगी, परंतु माता मोहातुर होकर बोलीं, 'मैं तुम्हारी पुनः शादी करूँगी। तुम्हारे जन्म से पूर्व मुझे सिंह का सपना आया था। सिंह-स्वप्न से जन्मा बालक पराक्रमी होता है; वह बहुत बड़ा आदमी या राजा बनता है।' भिक्षु ने सोचा— 'माता की आज्ञा के बिना दीक्षा कैसे हो?' तब उन्होंने पूज्य रघुनाथ जी से सारी बात कही। पूज्य रघुनाथ जी माता को समझाने पधारे और युक्तिपूर्वक माता को समझाकर दीक्षा की अनुमति दिलवाई। भिक्षु की दीक्षा वि. सं. १८०८ में बगड़ी नगर में नदी के किनारे वट वृक्ष की सघन छाया में हुई और पूज्य रघुनाथ जी ने उस समय यह आशीर्वाद प्रदान किया कि 'इस वट वृक्ष की तरह तेरा भी विस्तार हो।'

भिक्षु इस अयाचित आशीर्वाद को प्राप्त कर उसे सफल बनाने में तत्पर हो गये। उन्होंने आगमों का तलस्पर्शी अध्ययन किया और उन्हें लगा कि हमारा जीवन आगम-वाणी के अनुकूल नहीं है। जब-जब भी वे अपनी जिज्ञासाएँ लेकर पूज्य-चरणों में उपस्थित होते, तब उनका समुचित समाधान नहीं हो पाता था; फिर भी उन्होंने अपना विनय-भाव वर्धमान (बनाए) ही रखा।

राजनगर के श्रावकों ने जब जयमल जी के शिष्यों से आगम की बातें सुनीं, तब उनका मन पूज्य रघुनाथ जी के टोले से हटने लगा। यह बात जब पूज्य प्रवर ने सुनी, तब भिक्षु को राजनगर के श्रावकों के सम्मुख प्रतिबोध देने भेजा। राजनगर के श्रावक भिक्षु स्वामी के आचार, विचार और तपस्या के प्रति नतमस्तक थे। उन्होंने अपनी जिज्ञासाएँ भिक्षु के चरणों में प्रस्तुत कीं। भिक्षु स्वामी के हृदय में भी वे जिज्ञासाएँ पहले से ही उभर रही थीं, परंतु भिक्षु स्वामी ने गुरु का महत्त्व समझते हुए उनका समुचित उत्तर नहीं दिया और सोचा कि गुरु-चरणों में पहुँचकर ही इसका समाधान करेंगे।

परन्तु उसी रात्रि में भिक्षु को भयंकर ज्वर (बुखार) आ गया। भिक्षु ने सोचा— 'अगर इस समय आयुष्य पूर्ण हो गया, तो मेरी सद्गति कठिन है।' उन्होंने संकल्प किया कि 'अगर मेरा ज्वर शांत हो जाए, तो मैं श्रावकों को सारी स्थिति स्पष्ट कर दूँगा।' उनका ज्वर तत्काल शांत हो गया। सुबह उन्होंने श्रावकों के सामने सारी स्थिति स्पष्ट की। चातुर्मास के बाद गुरु दर्शन कर सारी स्थिति सामने रखी, परंतु समुचित समाधान नहीं मिला।

लगभग दो वर्षों के बाद वि. सं. १८१७ चैत्र सुदी नवमी के दिन बगड़ी नगर से अभिनिष्क्रमण (गृहत्याग) किया। भयंकर संघर्षों के बाद भी आपका मनोबल सुदृढ़ रहा। वि. सं. १८१७ आषाढ़ सुदी नवमी को उन्होंने भाव-दीक्षा स्वीकार की। कुछ वर्षों तक साध्वियों की दीक्षा नहीं हुई। वि. सं. १८२१ में तीन बहनों की दीक्षा हुई, फिर तो समय-समय पर दीक्षाएँ होती रहीं। वि. सं. १८३२ में प्रथम 'मर्यादा पत्र' लिखा गया और अपने उत्तराधिकारी की घोषणा कर दी गई, जिससे चारों तीर्थों में अच्छा उत्साह दृष्टिगोचर हुआ।

आचार्य भिक्षु एक निर्भीक और आत्मार्थी संत थे। उनके द्वारा चलाया गया यह पंथ देश-विदेश में फैल गया। उनकी जन्म-त्रिशताब्दी (३००वीं जयंती) पर उनके नवम पट्टधर महातपस्वी, महामनस्वी आचार्य श्री महाश्रमण जी (वर्तमान में आचार्य महाश्रमण जी ग्यारहवें पट्टधर हैं, यह संदर्भ तत्कालीन पट्टधर का है) ने 'भिक्षु चेतना वर्ष' की जो कल्पना की, वह अपने आप में अद्वितीय, अनुपम और संघ-प्रभावक रही।

पूज्य प्रवर ने भिक्षु-रचित ग्रंथों का समुचित परायण करके जन-जन को भिक्षुमय बना दिया। वर्षभर स्थान-स्थान पर कार्यशालाएँ चलीं, जिनमें आचार्य भिक्षु के सिद्धांतों को गहराई से समझाया गया।

इन कार्यशालाओं के माध्यम से आबाल-वृद्ध (बच्चे से लेकर बूढ़े तक) भिक्षु स्वामी के सिद्धांतों से परिचित हो सके, जिससे लोगों के मन में भिक्षु स्वामी के प्रति गहरी आस्था का जागरण हुआ है।

धर्मक्रान्ति के पुरोधा : आचार्य श्री भिक्षु

● मुनि कुमुद कुमार ●

दुनिया उसी को याद करती है जो दूसरों के लिए जीता है। कोई भी व्यक्ति जन्म से नहीं, बल्कि अपने विशिष्ट व्यक्तित्व और कर्तृत्व से महान बनता है। आचार्य भिक्षु ने अपने कर्तृत्व से जो अमिट रेखाएं खींची, वे हजारों लोगों के लिए जीवन की पथ-प्रदर्शक बन गईं। उन्होंने अपने समय के धार्मिक समाज में व्याप्त मिथ्या मान्यताओं और रूढ़ियों के अंधकार को मिटाकर ज्ञान की नई रोशनी बिखेरी। उन्होंने आध्यात्मिक एवं सामाजिक धरातल की भिन्नता का जो मौलिक चिंतन किया, वह अपने आप में विशिष्ट था। इसी कारण उनके विचारों की तुलना पाश्चात्य सुधारक मार्टिन लूथर किंग और जर्मनी के विख्यात दार्शनिक काण्ट से की जाती है। तेरापंथ के आद्यप्रवर्तक होने पर भी उनका चिंतन संपूर्ण मानव जाति के कल्याण के लिए था।

अनुशासन के पुरोधा पुरुष

आचार्यश्री भिक्षु ने तत्कालीन सामाजिक स्थिति को गहराई से परखकर यह अनुभव किया कि धर्मसंघ में अनुशासन और मर्यादाओं का होना नितांत जरूरी है। इसी लक्ष्य को ध्यान में रखकर उन्होंने साधु समाज के लिए एक सुदृढ़ संविधान बनाया।

आत्मानुशासन

उन्होंने अनुशासन को किसी पर थोपा नहीं, क्योंकि थोपा हुआ अनुशासन कभी कारगर नहीं होता। मर्यादाओं को बनाते समय उन्होंने अपने सहवर्ती संतों के विचारों को भी पूरा महत्व दिया।

अनाग्रही दृष्टिकोण

उन्होंने उदारतापूर्वक लिखा कि भविष्य में आने वाले आचार्य यदि चाहें तो काल परिस्थिति के अनुसार इन मर्यादाओं में संशोधन, परिवर्तन एवं संवर्धन कर सकते हैं।

आज के समय में जब अनुशासन की प्रणालियां क्षीण हो रही हैं और लोग मर्यादाओं की धज्जियां उड़ा रहे हैं, तेरापंथ धर्मसंघ में आचार्य श्री भिक्षु द्वारा करीब ढाई सौ वर्ष पूर्व खींची गई अनुशासन की रेखा का आज भी अक्षरसःपालन किया जाता है। उनकी इस दूरदर्शी व्यवस्था ने पूरे धर्मसंघ को आज तक एकसूत्र में बांधे रखा है।

श्रमनिष्ठ आत्मार्थी साधक

वर्तमान की सुविधावादी मनोवृत्ति के विपरीत आचार्य श्री भिक्षु ने श्रम और पुरुषार्थ को बहुत महत्व दिया। सत्तत्तर (77) वर्ष की अवस्था होने पर भी वे अपना कार्य स्वयं करते थे, जबकि उनके अनेक शिष्य उनकी सेवा में सदैव तत्पर रहते थे।

रात्रि जागरण का एक प्रेरक प्रसंग

आचार्य भिक्षु जब पाली में प्रवास कर रहे थे, तब रात्रि प्रवचन के बाद विजयचंद जी पटवा अपने साथी के साथ तत्व-चर्चा के लिए आए। चर्चा में ऐसा रस आया कि दोनों रातभर गहराई से तत्व समझते रहे और भोर में गुरु धारणा स्वीकार कर लौटे। जब सुबह प्रतिक्रमण के समय संतों ने आचार्य श्री से आश्चर्यचकित होकर पूछा— 'क्या आप सारी रात चर्चा ही करते रहे? आप कब विराजे?' तब आचार्य भिक्षु ने मंद-मंद मुस्कुराते हुए कहा— 'यह पूछो कि मैं सोया कब? जब किसी को सम्यक् दृष्टि मिलती है, तो रात्रि का जागना भी आनंद देने वाला होता है।' उन्होंने श्रम को भार न मानकर निर्जरा का साधन माना। उनकी यह अप्रमत्त आत्मचेतना आज भी साधकों के लिए मील का पत्थर है।

अनासक्त योगी

योगी का अर्थ ही है संसार में रहकर भी अनासक्ति का जीवन जीना। आचार्य भिक्षु की जीवनशैली पूर्णतः अनासक्ति परक थी। संघबद्ध साधना करते हुए भी वे उसमें लिप्त नहीं थे। उन्होंने स्वयं लिखाः 'गण में रहूं निरदाव अकेलो'। उन्हें न संघ से आसक्ति थी, न शरीर से और न ही विचारों से। भंयकर गर्मी में नदी की तप्त बालू रेत में आतापना लेते हुए वे स्वयं को साधना की कसौटी पर कसते रहे। संत कबीर की तरह ही आचार्य भिक्षु ने भी अपनी आचार-प्रवणता और सिद्धांतवादिता को निष्कलंक बनाए रखा।

कुशल कवि एवं सफल साहित्यकार

संत कबीर, तुलसी, नानक की भांति कविसंत परंपरा में आचार्य भिक्षु का नाम अत्यंत आदर से लिया जाता है। उन्होंने भगवान महावीर के दर्शन को युगानुरूप साहित्य के माध्यम से जनता तक पहुंचाया।

१. वे भाषा के अनुगामी नहीं बने, बल्कि भाषा उनकी अनुगामी बनी।
२. राजस्थानी भाषा के इस समृद्ध साहित्यकार की कलम ने ३८,००० पद्य प्रमाण साहित्य की रचना की, जिसमें इतिहास, दर्शन, आचार-विचार और तत्त्व बोध समाहित है।
३. उनके विचारों को गहराई से समझने के लिए आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी द्वारा रचित पुस्तक 'भिक्षु विचार दर्शन' एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है।

दूरद्रष्टा संविधान निर्माता

आचार्य भिक्षु के दूरदर्शी चिंतन ने एक अनूठा संविधान बनाकर एकतंत्र में लोकतंत्र की स्थापना की। उन्होंने संघ की सुरक्षा और एकता के लिए जो नियम बनाए, उसे बिना किसी भय या प्रलोभन के सबने सहर्ष स्वीकार किया।

उनका दिया हुआ 'संविभाग एवं समानता' का सूत्र आदर्श समाजवाद का प्रतीक है। उन्होंने विकास के लिए सबको अवसर दिया, तो गलती के परिष्कार के लिए प्रायश्चित का विधान भी किया।

जहां आज दुनिया में सत्ता और पद के लिए संघर्ष होता है, वहीं तेरापंथ धर्मसंघ में पद-प्राप्ति या अहंकार का कोई स्थान नहीं है। भगवान महावीर के परम पथ-अनुगामी, पुरुषार्थ के प्रतीक और तप की तेजस्विता से परिपूर्ण आचार्य श्री भिक्षु को अनंत-अनंत श्रद्धा समर्पण!

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
20 जुलाई - 26 जुलाई 2026

आचार्य श्री भिक्षु त्रिजन्मशताब्दी पूर्णाहुति पर विशेष

जगत के क्षितिज पुरुष – आचार्य भिक्षु

● मुनि मोहजीत कुमार ●

संसार की विशालता में परिवर्तनों का दौर कालक्रम के साथ जुड़ा हुआ है। इन परिवर्तनों के क्रम में कभी प्राकृतिक, कभी सांस्कृतिक, कभी साम्प्रदायिक, कभी धार्मिक, तो कभी एकल क्रांतियों का प्रभाव मुखर रहा है। इसमें क्षेत्र और काल का योग तो है ही, पर व्यक्ति की मानसिकता और भावात्मक चेतना का जुड़ाव भी प्रमुखता से योगभूत है।

कालक्रम की गणना में अनेक युगों का प्रभाव व्यक्ति के व्यवहार के साथ जुड़ा हुआ था एवं आज भी है। ऐसे में ईसा की अठारहवीं सदी को धार्मिक क्रांति के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है, जिसमें अनेकानेक जातियों और धर्मों में सार्वभौमिक क्रांतिकारी व्यक्तित्व उभरे।

इसी समयावधि में अध्यात्म जगत में दो बड़े वैचारिक परिवर्तन हुए–

१.जहाँ रामस्नेही सम्प्रदाय के प्रणेता स्वामी रामचरण जी ने निवृत्ति मार्ग का शंखनाद किया।

२. वहीं जैन परम्परा में सम्यक् आचार-चर्या के खोजकर्ता, अध्यात्म जगत के क्षितिज पुरुष आचार्य भिक्षु ने एक नए परिवेश को जन्म दिया।

आचार्य भिक्षु ने समाज और धर्म में व्याप्त कई विसंगतियों पर कड़ा प्रहार किया–

१.रूढ़िवादी विचारधारा का विरोध

२. धर्मगुरुओं की मठाधीशता पर चोट

३. शिष्य-प्रथा की जड़ों पर प्रहार

४.लोक-चेतना को यथार्थ सत्य से अवगत कराना

आचार्य भिक्षु ने उस काल में जो मौलिक विचार और दर्शन प्रकट किया, वह पूर्ववर्ती एवं वर्तमान युग के विचारकों तथा समकालीन चिन्तकों के लिए चिन्तन का एक सुदृढ़ आधार बन गया। आचार्य भिक्षु की अपरिमित मेधा और विलक्षण प्रतिभा, युगीन संदर्भों में सत्यों का बेबाक प्रकटीकरण है।

उन्होंने धर्म, पुण्य, दया, दान और साध्य-साधन आदि के संदर्भ में प्रवाहित पुरानी धारणाओं के विपरीत अपनी मति से नई प्रस्थापनाएँ कीं।

यह उनके मेधाबल का परिचायक था। उनकी इन प्रस्थापनाओं में अर्हत्-वाणी के रहस्यों का प्रवाह था।

आचार्य भिक्षु के अंतःकेंद्र और परिधि में केवल आत्म-शुद्धि का ही स्वर मुखर था। उनमें आत्मा की अमरता का अटल विश्वास था, इसलिए वे अभय थे। उनका चिन्तन इस सूक्ति से और अधिक प्रखर सिद्ध होता है कि— **'मर पूरा देस्यां आत्मा रा कारज सारस्यां'**। ये कालजयी वचन उनकी आत्म-साधना की उच्चतम अभिव्यक्ति थे। आचार्य भिक्षु ने आदि तत्व की मुखरता के लिए अनेक उदाहरणों से जन-जीवन को प्रतिबोधित किया। इसी प्रसंग में एक बार आचार्य भिक्षु से किसी ने पूछा— 'इतने सम्प्रदाय हैं, उनमें साधु कौन है और असाधु कौन?'

आचार्य भिक्षु ने अपनी प्रत्युत्पन्नमति से उसे एक सुंदर दृष्टांत के माध्यम से समझाया:

१.मान लो कोई व्यक्ति अचक्षु (नेत्रहीन) है। उसने किसी वैद्य से पूछा कि शहर में नंगे कितने हैं और वस्त्र पहने हुए कितने?

२.वैद्य जी ने कहा कि मैं तुम्हारी आँखों में सूरमा (दवा) डाल देता हूँ, जिससे तुम्हें दिखने लग जाएगा; फिर तुम स्वयं ही देख लेना।

३.इसी प्रकार साधु-असाधु की पहचान की दृष्टि तो हम बता देते हैं, इसका निर्णय तुम स्वयं कर लेना।

आचार्य भिक्षु त्रिकालदर्शी प्रवर थे। उन्होंने साधुता और असाधुता को अपनी कसौटी पर कसते हुए कहा था–

वैराग घट्यो ने भेख बधियो,
हाथ्यां रो भार गधालदियो।
थक गया बोज दियो रालो,
एहवा भेख धारी पंचम कालो।।

उनका यह कथन साधुत्व वेश के साथ आचार की शिथिलता एवं चितकबरेपन पर कड़ा प्रहार था। उन्होंने अर्हत्-आज्ञा को ही सर्वोपरि प्रमाण माना। यह उनकी अर्हत्-वाणी के प्रति समर्पण की चेतना का मूर्त उदाहरण है। उन्होंने कहा कि–

१. जहाँ आज्ञा है, वहाँ साधना की उत्कृष्टता है।

२. वहीं संयम की वृद्धि है।

३. इसी के साथ ज्ञान, दर्शन तथा चारित्र का संरक्षण भी प्रगाढ़ होता है।

आचार्य भिक्षु क्रांतिदृष्टा और युग-प्रणेता प्रवर थे। उनकी सहिष्णुता और दूरदर्शिता का माप करना या उसकी थाह पाना अत्यंत कठिन है। उन्होंने जिन मूल्यों की भविष्य के संदर्भ में स्थापना की, उसे तत्कालीन युग ने स्वीकार करने में आनाकानी की, पर सत्य तो सत्य ही रहेगा।

आचार्य भिक्षु अपने युग के धर्म-दिशादर्शक थे। ऐसे तेरापंथ के प्रथम प्रवर की त्रिजन्म शताब्दी की संपन्नता पर आस्था का अर्घ्य समर्पित है।

आचार्य भिक्षु : कर्तृत्व एवं व्यक्तित्व

● साध्वी निर्भयप्रभा ●

आचार्य भिक्षु का कर्तृत्व एवं व्यक्तित्व निराला था। भगवान महावीर के विशुद्ध दर्शन एवं शुद्ध साधुत्व का पालन करना ही उनके जीवन का एकमात्र लक्ष्य था। उन्होंने आगमों का गहरा अध्ययन किया और आगम-वाणी को हृदयंगम किया। आगम का एक प्रसिद्ध सूक्त है— 'सच्चम्मि छिर कुव्वहं' अर्थात् अपनी बुद्धि को सत्य में लगाओ। वे सत्य के प्रति पूर्णतः समर्पित थे। उन्होंने संकल्प लिया था कि राह में कितनी ही कठिनाइयाँ आएँ, वे उन्हें समता भाव से झेलेंगे।

आगम के गहन अध्ययन से उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि जिस श्रद्धा की ऊँचाई से पूर्व में निष्क्रमण किया गया था, वर्तमान में उसमें कुछ कमी नज़र आ रही है। अतः अब मुझे शुद्ध आचार-विचार का पालन करना ही होगा। वे कुछ वर्षों तक स्थानकवासी संप्रदाय में रहे, तत्पश्चात् आत्म-साधना हेतु सत्य मार्ग पर अग्रसर होने के लिए वे वहाँ से पृथक हो गए।

उन्होंने बगड़ी में रात्रि प्रवास 'जेतसिंहजी की छतरी' (विश्राम स्थल/शमशान) में किया। जो स्थान सामान्यतः मनुष्य का अंतिम पड़ाव होता है, वह स्वामीजी की एक नई और महान यात्रा का प्रथम प्रस्थान-बिंदु बन गया। वह रामनवमी का पावन दिन था, जो स्वामीजी के लिए आत्मविजय के पथ पर अभिनिष्क्रमण का एक पुनीत अवसर सिद्ध हुआ।

केलवा का ऐतिहासिक प्रसंग और 'तेरापंथ' का उदय

पूर्ण रात्रि ध्यान और आत्म-चिंतन में लीन रहने के बाद, अगले दिन विहार करके वे केलवा पहुँचे। वहाँ उनका भारी विरोध हुआ; उन्हें न तो ठहरने के लिए स्थान मिला और न ही गोचरी (आहार-पानी)। विरोधी तत्वों का सोचना था कि भीखण (आचार्य भिक्षु का पूर्व नाम) को कोई स्थान न दिया जाए, और जो भी उनकी सहायता करेगा, उसका संघ से सामाजिक बहिष्कार कर दिया जाएगा।

इसके बाद विरोधियों ने कुटिलतापूर्वक विचार किया कि इन्हें कोई ऐसा स्थान दिया जाए जहाँ 'साँप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे'। उन्होंने स्वामीजी को एक ऐसी अंधेरी कोठरी (ओरी) देने का निर्णय किया, जिसमें यक्षदेव का भयंकर प्रकोप माना जाता था और जहाँ जाने वाला कोई भी व्यक्ति जीवित नहीं बचता था।

परंतु, स्वामीजी इस संकट से तनिक भी विचलित नहीं हुए। स्वामीजी की कठोर साधना, त्याग और अद्भुत तपोबल को देखकर वह यक्षदेव भी उनके चरणों में नतमस्तक हो गया। अंततः उस महापुरुष के तप के आगे विरोधियों का अहंकार भी चूर-चूर हो गया। वहीं पर उन्होंने पूर्व दिशा में विराजमान सीमंधर स्वामी को भावपूर्ण वंदना करते हुए ऐतिहासिक उद्घोष किया— 'हे प्रभो! यह तेरापंथ।'

आदर्श सिद्धांत एवं युगप्रवर्धक मर्यादाएँ

आचार्य भिक्षु सिद्धांतों के पक्के थे। उनमें ज्ञान, श्रद्धा और क्रिया का अनूठा समन्वय था। वे अपने लक्ष्य के प्रति सदैव दृढ़-संकल्पित रहे।

सतत जागरूकता

वे आकाश में स्वच्छंद विचरते पक्षी की तरह निर्लिप्त भाव से चलते रहे। पूर्ण जागरूकता के साथ वे ज्ञान-यज्ञ में समर्पित हो गए। उन्होंने समय के एक-एक पल को पूरी प्राणवत्ता के साथ जिया। 'खणं जाणाई पंडिए' (पंडित वही है जो समय के एक-एक क्षण को जानता है) उनके जीवन का महान मूलमंत्र था।

विवेक-शक्ति:

हिंसा और धर्म के बीच क्षीर-नीर (दूध का दूध, पानी का पानी) का विवेक दिखाने वाली प्रतिरोधात्मक शक्ति उनमें जागृत थी। वे सामाजिक और धार्मिक बुराइयों के विरुद्ध चट्टान की तरह अडिग खड़े रहे, जिसके परिणामस्वरूप बड़ी से बड़ी समस्याएँ भी समाधान पाकर स्वयं नतमस्तक हो गईं। उनमें सही समय पर सही निर्णय लेने की अद्भुत क्षमता थी। उन्होंने समाज को शुद्ध सम्यक्त्व की वास्तविक परिभाषा समझाई।

प्रबल आत्मविश्वास:

उन्हें अपने आप पर पूरा भरोसा था और उनका आत्मविश्वास अडिग था। उद्देश्य के प्रति उनकी गहरी आस्था थी और उनकी विवेक-चेतना सदा जागृत रहती थी।

अभय वृत्ति: जीवियासा मरणभय विमुक्के' — वे जीवन की आसक्ति और मरण के भय से पूरी तरह मुक्त थे। युगद्रष्टा एवं मर्यादा-पुरुषोत्तमः उन्होंने भविष्य की नब्ज को पहचाना और संघ के सुचारू संचालन के लिए ऐतिहासिक मर्यादाओं का निर्माण किया। उन्होंने 'एक आचार, एक अनुशासन एवं एक आचार्य' का अद्वितीय सिद्धांत दिया। उन्होंने यह कठोर नियम बनाया कि कोई भी साधु या साध्वी अपना व्यक्तिगत चेला-चेली नहीं बनाएगा; जो भी दीक्षित होंगे, वे सब सामूहिक रूप से संघ के आचार्य के ही शिष्य कहलाएँगे।

इसी महान दूरदर्शिता का सुपरिणाम है कि आज तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान अनुशास्ता, युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी उन्हीं के पदचिह्नों पर आगे बढ़ते हुए अद्वितीय पुरुषार्थ कर रहे हैं। आज 'तेरापंथ' संपूर्ण जैन समाज में अनुशासन और शुद्धाचार का एक अनुपम उदाहरण बना हुआ है और इसने विश्व क्षितिज पर अपना नाम स्वर्णाक्षरों में रोशन किया है।

आचार्य श्री भिक्षु त्रिजन्मशताब्दी पूर्णाहुति पर विशेष

भीखण से प्रीत मेरी जुड़ जाये

● साध्वी राकेशकुमारी 'बायतु' ●

भीखण का नाम चमत्कारी, मंत्राक्षर-वत संकटहारी,
सांस-सांस में भीखण मेरे रम जाये।
'भीखण से प्रीत मेरी जुड़ जाये'

लौह पुरुष भीखण स्वामी, घट-घट ज्ञाता अन्तर्यामी,
सोते-उठते भीखण नाम जपते जाये।

राजनगर में ज्वर उठा, वंदन करना भी छोड़ दिया,
भीखण नाम से काम सिद्ध हो जाये।

आगम मंथन अर, चिंतन कर, पथ दिखलाया धीरज धर,
उन्हें समझाने संत भीखण चल जाये।
तेज ज्वर भी भीखण का उतर जाये।

श्रावक-गण सारे बोल उठे, वाह वाह वाह भीखण की छाती को,
बोधि पाकर भक्त सारे झुक जाये।

भीषण कष्टों को सहन किया, लौकिक-लोकोत्तर ज्ञान दिया,
भ्रांत धारणा के बादल छंट जाये।

ओरी अंधेरी दीप जला, धर्मक्रांति का बिगुल बजा,
सारी दुनिया में आलोक फैल जाये।

तृतीय शताब्दी वर्ष समापन है, जागो महाश्रमण भगवान है,
सारी दुनिया में भीखण नाम चमकाये।

तर्ज : प्राण प्राण में शांति

भिक्षुत्रय जन्म शताब्दी है, इस वीर भिक्षु का क्या कहना

● साध्वी मलयप्रभा (गोगुन्दा) ●

भिक्षुत्रय जन्म शताब्दी है, इस वीर भिक्षु का क्या कहना।
श्रद्धा से शीश झुकाते हैं, इस परम पुरुष का क्या कहना॥

तेरस दिन भिक्षु आया था, तेरस दिन स्वर्ग सिधाया था।
ग्रह नक्षत्र सभी शुभ आये थे, इस अबुध तेरस का क्या कहना॥

माँ दीपा लाल दुलारे हो, बल्लूशा कुल उजियारे हो।
कंटालिय वाले प्यारे हो, इस पुण्य धरा का क्या कहना॥

भिक्षु का जाप निराला है, भिक्षु तप हीरत प्याला है।
भिक्षु की नित फेरें माला, इस भिक्षु नाम का क्या कहना॥

कितनों के कष्ट निवारे हैं, कितनों के काज संवारे हैं।
कितनों को पार उतारे हैं, इस तारणहार का क्या कहना

गण की तुम अमर निशानी हो, जन-जन के बने जुबानी हो।
पौरुष की प्रखर निशानी हो, इस वीर धीर का क्या कहना॥

गुलशन तेरा आबाद रहे, सावन भादव सी बहार बहे।
हर दिन हम मोद मनाते रहे, इस संघ चमन का क्या कहना॥

राहें सूनी आबाद करो, गुण सुमनों से भंडार भरो।
कुछ करने बस आशीषें दो, इस दिव्य पुरुष का क्या कहना॥

तर्ज - दुनिया में देव...

मरुधर माटी बलिदानी भिक्षु की अमर कहानी

● साध्वी सुरेखा ●

मरुधर माटी बलिदानी भिक्षु की अमर कहानी,
'कंटालियो' आज बण्यो गुलजार है
हो श्रद्धा-भक्ति रो जहाँ खिल्यो मंदार है (आँ)

मां दीपा के आंगन में कोई मानों कल्पतरु उतरा मानों...
अवतारी भिक्षु आये मन आंगन हो गया हराभरा आंगन ...
तीर्थ स्थल बन गई माटी, मुस्कानों की वह घाटी
अम्बर से बरस रही रसधार है। हो श्रद्धा...

योग सिद्धियां लेकर कोई योगी पुरुष भू पर आया योगपुरुष...
जनम जनम का संचित वैभव साथ, स्वयं के है लाया साथ...
कांटो में फूल खिला जो, मरुधर को रत्न मिला वो
धरती की पूर्ण हुई मनुहार है।। हो श्रद्धा...

सिंह स्वपन माता ने देखा सहज बना वह फलदायी सहज...
भिक्षु वाणी देश विदेशां पहुंची संघ री पुण्याई पहुंची...
मीठी इक्षु सी धारा, युग को है मिला किनारा
नत मस्तक सारा यह संसार है।। हो श्रद्धा...
भिक्षु त्रि जन्म सदी उपहार है।

लय : प्रज्ञा के दीप जलेंगे

तप की धुनी रमाते बीती

● शासनश्री साध्वी सुमनश्री ●

चिर विराग की ओढ़ी निर्मल, ज्यों की त्यों धर दीन्ही चदरियां।
तप की धुनी रमाते बीती, आर्य भिक्षुकी पूरी उमरियां।
सिद्ध पुरुष की पूरी उमरियां॥

ओढर दानी बन कर आये जीवन भर बांटा ही बांटा।
कुदरत को पहचान चले तुम फूलों में होता है कांटा।
जीवन जोत उजर गयी बाती परम ज्ञान की खुली गठरियां॥

सत्साहस के महावज्र से संघर्षो के पर्वत तोड़ें।
संशय में भटके कदमों को आस्था की मंजिल से जोड़ें।
गूंज उठी भू नभ में तेरी, स्वयं प्रकाशी गीत लहरियां ॥

निपट अकेले महासंत के पीछे आज जुड़ा है मेला।
बीत गई पतझड़ की मौसम आई है बासंती बेला।
मलयज सी शीतल छाया है ढ़ली धाम की दुःसह दुपहरियां॥

जब भी तुम्हें बदलना चाहा युग के आक्रामक तेवर ने।
बदल दिया पर जग को तेरे अप्रतिहत पौरुष के स्वर ने।
सत्य सूर्य से हटी स्वयं ही असत् तिमिर की श्याम बदरियां॥

क्षीण हुई जब सत् शिवधारा, तब तुमने अवतार लिय।
'अंधेरी ओरी' में तुमने, दीप अलौकिक जला दिया।
त्रिशताब्दी क्या सहस्त्राब्दी तक सदा बहेगा यह गण दरिया॥

जैन शासन : अतिशय आत्मानुभूति के क्षण

● शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा ●

जैन शासन की पावन परम्परा में जब कभी समय के कालचक्र ने अपना प्रभाव दिखाया, तब-तब कोई महामना अवश्य क्रान्तद्रष्टा बन कर आए, जो महावीर वाणी पर स्वयं गतिमान् हुए तथा जनता को भी चारित्रिक जागृति का संदेश दिया। इस प्रकार के चारित्रिक उन्नयन का साक्षात् साक्षी है तेरापंथ धर्म संघ। आचार्य भिक्षु इस धर्म संघ के प्रवर्तक हुए। वे सिंह स्वप्निष माता दीपा बाई के गर्भ में आए। उनको तथा पारिवारिक जनों को स्वप्न-फल विशेषज्ञों ने कहा— 'दीपा बाई! तुम ऐसे पुत्र को जन्म देनेवाली हो जो सिंह की तरह गूंजेगा। चक्रवर्ती जैसे महापुरुषों की माताएं ऐसे स्वप्न देखा करती हैं।' आचार्य भिक्षु सचमुच रहस्यमय पुरुष थे। उन्होंने विवाह किया, एक पुत्री का जन्म हुआ।

सौभाग्य यह रहा कि उन्होंने तीस वर्ष की वय (आयु) में स्थानकवासी सम्प्रदाय के वरिष्ठ आचार्य रूघनाथजी महाराज के पास दीक्षा ली। उनकी अनुशासित जीवन शैली, स्वाध्याय-प्रवण प्रतिभा आदि देखकर लोग सोचते थे कि यह भीखण (आचार्य भिक्षु) रूघनाथजी महाराज का उत्तराधिकारी बनेगा, परन्तु भवितव्यता कुछ और थी। आचार्य भिक्षु ने गहराई से तत्त्व को समझा तथा वर्तमान वातावरण को भी जाना। प्रत्येक साधु सम्प्रदाय में चेला-चेली की भूख लगी है, वहाँ वैराग्य की कसौटी नहीं है। रुपये देकर चेला-चेली खरीदे जा रहे हैं। एकेन्द्रिय की हिंसा हो रही है, पर अगर पंचेन्द्रिय का पोषण है तो वहाँ पुण्य बन्ध का निरूपण किया जा रहा है।

आचार्य भिक्षु ने कहा— 'हिंसा में अगर पंचेन्द्रिय का पोषण हो रहा है, तो वहाँ पुण्य का बन्ध नहीं पाप का ही बंध है?'

उस समय प्रचारित किया जा रहा था कि भगवान् महावीर ने केवलज्ञान से पूर्व तेजोलेश्या लब्धि फोड़ कर गोशालक को बचाया, पर आचार्य भिक्षु ने कहा–

''छह लेश्या हूंति जद वीर में, हूंता आंठु ही करम।
छद्मस्थ चूक्या तिण समे, कोई मूरख थापै धरम॥'

अर्थात् लेश्या फोड़ना चारित्र का प्रमाद है। केवलज्ञान प्राप्ति के बाद जब सर्वानुभूति व सुनक्षत्र मुनियों पर जब गोशालक ने तेजोलब्धि फोड़ कर उनका प्राणान्त किया, तब तो भगवान महावीर ने शीतल तेजोलब्धि नहीं फोड़ी। तथ्य या निष्कर्ष यह है कि मुनि कभी लब्धि नहीं फोड़ सकता। इसी प्रकार धन से जो खरीदा जा सके, वह धर्म नहीं है। वह तो आत्म-आराधना का महान् दर्शन है।

विरोधियों की भाषा में लोग कह रहे थे कि तेरापंथी लोग दान-दया का निषेध बता रहे हैं, पर आचार्य भिक्षु के मन में कोई घबराहट नहीं थी। उन्होंने दृढ़ता के साथ कहा कि जहाँ हिंसा है वहाँ निर्जरा नहीं, और निर्जरा के बिना पुण्य नहीं। आचार्य भिक्षु ने कहा— 'जो तत्त्व समझ में न आए, वह बहुश्रुत (ज्ञानी) व्यक्तियों से समझो। यदि फिर भी समझ में न आए तो केवलीगम्य कर दो, पर गण में भ्रान्ति मत फैलाओ।'

वर्तमान में आचार्य भिक्षु के यशस्वी पट्टधर, युगप्रधान, परम वंदनीय आचार्य श्री महाश्रमणजी की पावन सन्निधि तेरापंथ धर्म संघ का गौरव है। आचार्य भिक्षु का एक वह भी समय था जब उन्होंने विरोधों, संघर्षों व समता से झेलते हुए एकाकी होकर कहा था— 'मर पूरा देस्या, आत्मा रा कारज सारस्या।'

आज उनके पदचिह्नों पर वर्तमान में लगभग ८०० साधु-साध्वी तथा लाखों की संख्या में श्रावक-श्राविकाएं एक गुरु के अनुशासन में सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन और सम्यक् चारित्र की आराधना के साथ आनंदानंदभूति कर रहे हैं। इतना ही नहीं, बल्कि समणी वृन्द के सहयोग से विदेशों की धरा पर भी प्रवासी श्रावक-श्राविकाएं इससे लाभान्वित हो रहे हैं।

संबोधि

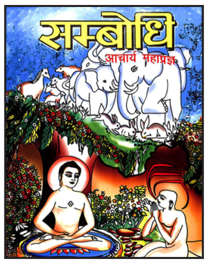

परिशिष्ट

– आचार्यश्री महाप्रज्ञ

ध्यान के तीन प्रकार और हैं—कायिक ध्यान, वाचिक ध्यान और मानसिक ध्यान।

कायिक ध्यान

शरीर का प्रकंपन पूर्णतः कभी नहीं रुकता। उसकी ऊर्मियों का प्रवाह निरंतर चलता रहता है। जब हम स्थिर होकर बैठते हैं तब भी चलता रहता है। फिर शरीर का अप्रकंपन कैसे हो सकता है? यहां अप्रकंपन का प्रयोग सापेक्ष है। यद्यपि शरीर के प्रकंपन पूर्णतः नहीं रुकते, फिर भी हाथ, पैर आदि अवयवों की चेष्टाएं नहीं होतीं, शरीर बाह्याकार में स्थिर हो जाता है तब अप्रकंपन का एक बिंदु बनता है। यही कायिक ध्यान है। यह अप्रकंपन का सामान्य बिंदु है। इसमें मात्रा-भेद होता है। एक व्यक्ति प्रथम अभ्यास में अपने शरीर के प्रकंपनों को रोकता है, वह सामान्य स्थिरता होती है। अभ्यास करते-करते वह अप्रकंपन की सुदृढ़ स्थिति तक पहुंच जाता है। मात्रा-भेद के आधार पर कायिक ध्यान की अनेक श्रेणियां बन जाती हैं।

आनापान ध्यान

श्वास का प्रकंपन भी पूर्णतः नहीं रुकता। अंतर् में प्राण का प्रवाह चालू रहता है। हमारे शरीर के रोमकूप सूक्ष्म आनापान को ग्रहण करते रहते हैं। उसे मंद किया जा सकता है, रोका जा सकता है। आनापान ध्यान का प्रथम बिंदु श्वास को मंद करने का अभ्यास है। स्वस्थ मनुष्य का श्वास जिस गति से चलता है उसमें मंदता लाना, उसके प्रकंपनों को कम करना, इस दिशा में पहला प्रयत्न है। इस प्रयत्न में दो बातें मुख्य हैं—

(१) श्वास की संख्या को कम करना।

(२) प्राणवायु की मात्रा को कम करना।

मृदु-मंदता में श्वास दीर्घ हो जाता है। मध्य-मंदता में प्राणवायु की मात्रा कम हो जाती है। अतिमंदता में महाप्राण की स्थिति घटित होने लग जाती है। श्वास-निरोध या कुंभक सहज ही हो जाता है।

वाचिक ध्यान

जैसे शरीर और श्वास की ऊर्मियां निरंतर प्रवाहित रहती हैं, वैसे वाणी की ऊर्मियों का प्रवाह निरंतर नहीं रहता। हम जब बोलने का प्रयत्न करते हैं तभी उसका प्रवाह होता है। बोलने की आकांक्षा और उसका प्रयत्न नहीं करना ही उन प्रकंपनों को रोकना है। यही वाचिक ध्यान है।

मानसिक ध्यान

मन के तीन मुख्य कार्य हैं—स्मृति, मनन और कल्पना। अतीत की स्मृति, वर्तमान का मनन और भविष्य की कल्पना होती है। हम जो मनन और चिंतन करते हैं उसकी आकृतियां बनती हैं। ये आकृतियां मनन समाप्त होने पर आकाश-मंडल में फैल जाती हैं। वे हमारे मस्तिष्क के भीतर भी अपना प्रतिबिम्ब छोड़ जाती हैं, जिसे हम धारणा, वासना या अविच्युति कहते हैं। यह धारणा हमारे कोष्ठों में संचित रहती है। जब कभी कोई निमित्त मिलता है तो हमारे स्मृति कोष्ठ जाग्रत हो जाते हैं, मन गतिशील हो जाता है।

जब हम मनन करना चाहते हैं तब मानसिक ऊर्मियों का प्रवाह चालू हो जाता है। जितने समय तक हमारा मन चलता है, उतने समय तक यह प्रवाह भी चालू रहता है। हम स्मृति और मनन के आधार पर कल्पना करते हैं। उस समय भी मन की ऊर्मियां प्रवाहित हो जाती हैं।

स्मृति को रोककर मानसिक ऊर्मियों को किसी एक विषय में प्रवाहित कर देना मानसिक ध्यान है। इस ध्यान में मानसिक प्रकंपन समाप्त नहीं होते, किंतु उनकी गति एक दिशा में हो जाती है और जब तक वह गति एक दिशा में रहती है तब तक मानसिक ध्यान बना रहता है। जैसे ही मानसिक ऊर्मियों का प्रवाह अनेक दिशाओं में गतिशील होता है, ध्यान भंग हो जाता है।

(क्रमशः)

श्रमण महावीर

समन्वय की दिशा का उद्घाटन

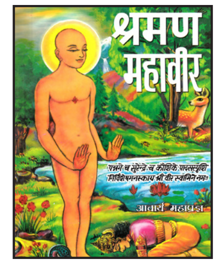

सदृशता और विसदृशता का सिद्धान्त वस्तु की यथार्थता है; इसीलिए कोई भी यथार्थवादी विचार एकांगी नहीं हो सकता, अपेक्षा से शून्य नहीं हो सकता।

भगवान महावीर ने विचार और व्यवहार— दोनों क्षेत्रों में समन्वय के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। उनकी परम्परा ने विचार के क्षेत्र में समन्वय के सिद्धान्त की सुरक्षा ही नहीं की है, उसे विकसित भी किया है; किन्तु व्यवहार के क्षेत्र में उसकी विस्मृति ही नहीं की, बल्कि उसकी अवहेलना भी की है।

हरिभद्रसूरि ने नास्तिक को दार्शनिकों के मंच पर उपस्थित कर दर्शन-जगत् को समन्वय की शक्ति से परिचित करा दिया। आस्तिक दर्शन नास्तिक को दर्शन की कक्षा में सम्मिलित करने की कल्पना नहीं करते थे, हरिभद्र ने उसे आकार दे दिया।

उपाध्याय यशोविजयजी के सामने प्रश्न आया कि आस्तिक कौन और नास्तिक कौन? उन्होंने समन्वय-दृष्टि से देखा और वे कह उठे— 'पूरा नास्तिक कोई नहीं है और पूरा आस्तिक भी कोई नहीं है। चार्वाक आत्मा को नहीं मानता, इसलिए नास्तिक है; तो एकान्तवादी दर्शन वस्तु के अनेक धर्मों को नहीं मानते, फिर वे नास्तिक कैसे नहीं होंगे? धर्मों को स्वीकार करने वाले एकान्तवादी दर्शन यदि आस्तिक हैं, तो धर्मों को स्वीकार करने वाला चार्वाक आस्तिक कैसे नहीं है?

आचार्य अकलंक ने कहा— 'आत्मा चैतन्य धर्म की अपेक्षा से आत्मा है, शेष धर्मों की अपेक्षा से आत्मा नहीं है। आत्मा और अनात्मा में समान धर्मों की कमी नहीं है।' सिद्धसेन, समन्तभद्र, अकलंक, हरिभद्र, हेमचन्द्र आदि आचार्यों ने समन्वय की परम्परा को इतना उजागर किया कि जैन दर्शन का सिन्धु सब दृष्टि-सरिताओं को समाहित करने में समर्थ हो गया।

वेदान्त का अद्वैत जैन दर्शन का 'संग्रह नय' है। चार्वाक का भौतिक दृष्टिकोण जैन दर्शन का 'व्यवहार नय' है। बौद्धों का पर्यायवाद जैन दर्शन का 'ऋजुसूत्र नय' है। वैयाकरणों का शब्दाद्वैत जैन दर्शन का 'शब्द नय' है। जैन दर्शन ने इन सब दृष्टिकोणों की सत्यता स्वीकार की है, किन्तु एक शर्त के साथ। शर्त यह है कि इन दृष्टिकोणों के मनके समन्वय के धागे में पिरोए हुए हों तो सब सत्य हैं और यदि ये अपनी सत्यता प्रमाणित कर दूसरों के अस्तित्व पर प्रहार करते हों तो सब असत्य हैं। समन्वय का बोध सत्य का बोध है। समन्वय की व्याख्या सत्य की व्याख्या है। अनन्त सत्य एक दृष्टिकोण से गम्य और एक शब्द से व्याख्यायित नहीं हो सकता।

समन्वय सिद्धान्त के प्रसंग में एक जिज्ञासा उभरती है कि महावीर ने सब दर्शनों की दृष्टियों का समन्वय कर अपने दर्शन की स्थापना की या उनका कोई अपना मौलिक दर्शन है?

महावीर के दो विशेषण हैं— सर्वज्ञ और सर्वदर्शी। वे सबको जानते थे और सबको देखते थे। सर्वज्ञान और सर्वदर्शन के आधार पर उन्होंने अपने दर्शन की व्याख्या की। उसका मौलिक स्वरूप यह है कि प्रत्येक द्रव्य में अनन्त धर्म हैं और प्रत्येक धर्म अपने विरोधी धर्म से युक्त है। एक द्रव्य में अनन्त विरोधी युगल एक साथ रह रहे हैं। यह सिद्धान्त विभिन्न दृष्टियों के समन्वय से निष्पन्न (उत्पन्न) नहीं हुआ है, बल्कि इस सिद्धान्त से समन्वय का दर्शन फलित हुआ है। समन्वय का सिद्धान्त मौलिक नहीं है; मौलिक है— एक द्रव्य में अनन्त विरोधी युगलों का स्वीकार और प्रतिपादन।

सामान्य और विशेष— दोनों द्रव्य के धर्म हैं। इसलिए महावीर को समझने वाला सामान्यवादी वेदान्त और विशेषवादी बौद्ध का समर्थन या विरोध नहीं कर सकता। वह दोनों में समन्वय देखता है, संगति देखता है। जब हम पर्याय की ओर पीठ कर द्रव्य को देखते हैं, तब हमें सामान्य केवल सामान्य, अद्वैत केवल अद्वैत दिखाई देता है और जब हम द्रव्य की ओर पीठ कर पर्याय को देखते हैं, तब हमें विशेष केवल विशेष, द्वैत केवल द्वैत दिखाई देता है। किन्तु महावीर को समझने वाला इस बात को नहीं भूलता कि कोई भी द्रव्य पर्याय से शून्य नहीं है और कोई भी पर्याय द्रव्य से शून्य नहीं है। केवल सामान्य या केवल विशेष को देखना दृष्टि के कोण हैं, मर्यादाएँ हैं। वास्तविकता के सागर में सामान्य और विशेष—दोनों एक साथ तैर रहे हैं।

समन्वयवादी बाह्य और अंतरंग, स्थूल और सूक्ष्म, मूर्त और अमूर्त दोनों के लिए समन्वय-सूत्र को खोजकर वस्तु की समग्रता का बोध करता है।

(क्रमशः)

3 बातें ज्ञान की

– आचार्यश्री महाश्रमण

तीन
उत्तम पुरुष

उत्तम पुरुष और उनके प्रकार

उत्तम पुरुष का दूसरा प्रकार है— भोगपुरुष। भोग के क्षेत्र में उत्तम होते हैं चक्रवर्ती। संसार में सबसे अधिक शक्तिसंपन्न और सत्ताधारी यदि कोई व्यक्ति है तो वह है छह खंडों का अधिपति चक्रवर्ती। जहां आध्यात्मिक दृष्टि से तीर्थंकर को श्रेष्ठ बताया गया, वहीं भौतिकता की दृष्टि से चक्रवर्ती को श्रेष्ठ माना गया।

दुनिया में तिरेसठ व्यक्ति उच्च कोटि के होते हैं— चौबीस तीर्थंकर, बारह चक्रवर्ती, नौ वासुदेव, नौ बलदेव और नौ प्रतिवासुदेव। ये कुल तिरेसठ पुरुष शलाकापुरुष कहलाते हैं। इन तिरेसठ विशिष्ट पुरुषों में अध्यात्म-जगत् का संचालन करने वाले भी हैं और भौतिक जगत् का संचालन करने वाले भी हैं। धर्म के क्षेत्र में चौबीस तीर्थंकर होते हैं। उनका भौतिकता से कोई लेना-देना नहीं होता। वे धर्मक्षेत्र के अधिकृत व्यक्ति होते हैं। भौतिक जगत् के अधिकृत व्यक्ति चक्रवर्ती होते हैं। भौतिक दुनिया में उनसे बड़ा कोई नहीं होता। इसलिए उनको भोगपुरुष कहा गया है।

उत्तम पुरुष का तीसरा प्रकार है—कर्मपुरुष। कर्म के क्षेत्र में उत्तम होते हैं वासुदेव। तीन खंडों का अधिपति वासुदेव सत्ताधारी होने के बावजूद मरकर नियमतः नरक में ही जाता है। एक ओर हाथ में सत्ता है तो दूसरी ओर वह पाप कर्मों का बंधन करने वाला भी होता है। सत्ता और पाप कर्म का योग होने से परिणामतः उसे नरक में जाना पड़ता है। चक्रवर्ती अपने पद से मुक्त होकर तीर्थंकर भी बन सकता है। इसलिए जो चक्रवर्ती होता है, उसके लिए नरक में जाना जरूरी नहीं होता, परन्तु वासुदेव की गति नरक ही होती है। कहा भी जाता है—'राजेश्वरी नरकेश्वरी' अर्थात् जो वासुदेव जैसा सम्राट बनेगा, उसे नरकेश्वर बनना ही पड़ेगा, नरक में जाना ही पड़ेगा। तीर्थंकर मृत्यु के बाद निश्चित ही मोक्ष जाते हैं। चक्रवर्ती की यदि चक्रवर्ती पद पर रहते हुए मृत्यु हो जाए तो उसकी गति नरक होती है और यदि वह चक्रवर्तित्व का त्याग कर संयम ग्रहण करे तो उसकी गति स्वर्ग अथवा मोक्ष होती है। जैसे सोलहवें तीर्थंकर भगवान शांतिनाथ, सत्रहवें तीर्थंकर भगवान कुंथुनाथ और अठारहवें तीर्थंकर भगवान अरनाथ पहले चक्रवर्ती बने, फिर उसी जन्म में तीर्थंकर भी बन गए।

दुनिया का यह सौभाग्य है कि हमेशा कोई न कोई तीर्थंकर कहीं न कहीं अवश्य रहते हैं। दुनिया तीर्थंकर से कभी खाली नहीं रहती। महाविदेह क्षेत्र पांच होते हैं, भरत क्षेत्र पांच होते हैं और ऐरावत क्षेत्र भी पांच होते हैं। ये पन्द्रह कर्मभूमियां कहलाती हैं। भरत क्षेत्र और ऐरावत क्षेत्र में काल के पहले आरे से लेकर छठे आरे तक की व्यवस्था है। महाविदेह में ऐसी व्यवस्था नहीं होती। पांच महाविदेहों में जब एक साथ एक सौ साठ तीर्थंकर होते हैं और उसी समय पांच भरत क्षेत्र और पांच ऐरावत क्षेत्र में भी पांच-पांच तीर्थंकर हों तो एक साथ कुल एक सौ सत्तर तीर्थंकर हो जाते हैं। प्रत्येक भरत क्षेत्र और प्रत्येक ऐरावत क्षेत्र में एक साथ एक से ज्यादा तीर्थंकर नहीं हो सकते। कई बार भरत क्षेत्र और ऐरावत क्षेत्र तीर्थंकर के बिना भी रह जाते हैं। जैसे वर्तमान में भरत क्षेत्र और ऐरावत क्षेत्र में कोई तीर्थंकर विद्यमान नहीं हैं, परन्तु महाविदेह क्षेत्र में अभी भी सीमंधर स्वामी आदि बीस तीर्थंकर विचरण कर रहे हैं। महाविदेह क्षेत्र ही ऐसा क्षेत्र है जो तीर्थंकर से पूर्णतया खाली कभी नहीं रहता। इस प्रकार अनंतकाल बीत गया, आगे भी अनंतकाल है। दुनिया में कम से कम बीस और अधिक से अधिक एक साथ एक सौ सत्तर तीर्थंकर विद्यमान रह सकते हैं। दुनिया में धर्म की दृष्टि से पूर्ण अंधकार कभी नहीं होता। हमेशा कहीं न कहीं, कोई न कोई महासूर्य अवश्य चमक रहा होता है।

जीवन में उत्तमता का महत्त्व होता है। व्यक्ति धार्मिक दृष्टि से उत्तमता की ओर आगे बढ़ने का प्रयास करे। साधना के क्षेत्र में, ज्ञान के क्षेत्र में, सेवा आदि के क्षेत्र में आगे बढ़ने का प्रयास करे। चाहे दो कदम ही आगे बढ़े, किन्तु आगे बढ़ने का लक्ष्य होना चाहिए। एक चींटी भी चलते-चलते सैकड़ों योजन तक पहुंच सकती है और यदि गति न हो तो तीव्र गति वाला गरुड़ भी वहीं का वहीं रह जाता है। आदमी को पुरुषार्थ करना चाहिए और यह सोचना चाहिए कि जिस क्षेत्र में काम करूं, उस क्षेत्र में आगे बढ़ूं, उसमें कौशल प्राप्त करूं। यदि कोई वक्ता है तो यह सोचे कि वक्तृत्व में और कैसे निखार ला सकता हूं। यदि कोई लेखक है तो यह सोचे कि लेखन में और विकास कैसे कर सकता हूं। व्यक्ति को दक्षता, चातुर्य और निपुणता को पाने का प्रयास करना चाहिए। प्रयास करने से कुछ न कुछ अवश्य प्राप्त हो सकता है।

तीन पदों से उऋण होना दुःशक्य

ठाणं में बताया गया है— **तिण्हं दुप्पडियारं समणाउसो! तं जहा—अम्मापिउणो, भट्टिस्स, धम्मायरियस्स।** (3/87)

आयुष्मान् श्रमणों! तीन पद दुष्प्रतिकार हैं। उनसे उऋण होना दुःशक्य है—

1. माता-पिता 2. भर्ता (पालन-पोषण करने वाला) 3. धर्माचार्य।

(क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स
की प्रति पाने के लिए क्यूआर
कोड स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan

समाचार प्रकाशन हेतु
abtyptt@gmail.com पर ई-मेल अथवा
8905995002 पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

जुलाई 2026
सप्ताह के विशेष दिन

27 जुलाई आचार्यश्री भिक्षु 301वां जन्म दिवस एवं 269वां बोधि दिवस	**28 जुलाई** भगवान वासुपूज्य निर्वाण कल्याणक एवं चातुर्मासिक पक्खी
29 जुलाई 267वां तेरापंथ स्थापना दिवस	**01 अगस्त** भगवान श्रेयांशनाथ निर्वाण कल्याणक

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
20 जुलाई - 26 जुलाई 2026

आचार्य श्री भिक्षु त्रिजन्मशताब्दी पूर्णाहुति पर विशेष

विलक्षण प्रतिभा के धनी आचार्य भिक्षु

● साध्वी चेलनाश्री ●

जैन दर्शन आत्म-अस्तित्व की स्वीकृति का दर्शन है। आत्मा है, कर्म है, पूर्वजन्म और पुनर्जन्म भी है; जहाँ कोडहं' (दोष) से 'सोडहं' (शुद्धि/समाधान) तक की यात्रा चलती रहती है। आचारांग सूत्र में यह बात स्पष्ट दिखाई देती है। भगवान महावीर ने प्रतिपादन किया है कि पूर्वजन्म और पुनर्जन्म का संज्ञान किया जा सकता है। इस शक्यता में तीन हेतुओं का निर्देश किया गया है–

1. **स्वस्मृति**
2. **पर-व्याख्या**
3. **दूसरे से सुनना।**

इसी आप्तवाली के आधार पर आचार्य भिक्षु की जीवन-गाथा को भी समझा जा सकता है। आत्म-समर्पण के अनूठे साधक और इसी आधार पर आगम-राशि का पारायण करने वाले भीखण जी स्थानकवासी संप्रदाय में दीक्षित हुए। उन्होंने गहन अध्ययन किया, लेकिन राजनगर के श्रावकों ने साध्वाचार के विरुद्ध एक हलचल पैदा कर दी। संत भीखन के भीतर एक कंपन शुरू हो गया। रात्रि के मंद ज्वर ने जीवन में एक नया अध्याय और जोड़ दिया कि सिद्धांतों के साथ कोई समझौता नहीं हो सकता। संकल्प की जगी चेतना ने गुरु के अपनत्व की त्याग कर दिया—'मेरे आदि, मध्य और अंत का केंद्र बिंदु आत्मा ही बनी रहेगी।' यहीं से उस दिव्य पुरुष की आत्म-विशुद्धि की यात्रा का शुभारंभ हुआ। उनकी क्रांति में दम था। संघर्षों को उन्होंने विवेकपूर्वक झेला; वे सहिष्णुता के धनी थे। उनमें बुद्धि की प्रखरता व अनुभव की निपुणता थी। अवरोध व विरोधी वातावरण में वे **'मर पूरा देस्या आत्मा रा कारज सारस्या'** के लिए कृत-संकल्पित हो गए। उन्होंने भारमलजी स्वामी को संबोधित करते हुए कहा, 'आने वाला समय कठिनाइयों से भरा रहेगा। तुम क्या चाहते हो? तुम्हारी इच्छा और निर्णय अटल है।' आगे बढ़ना तुम्हें मंजूर था, रुकना कहाँ मंजूर था; चलते रहे आँधी-तूफानों में, गजब का वह आत्मबल था।

अनेकांत के आलोक में आचार्य भिक्षु

भगवान महावीर का अनेकांतवाद व आइंस्टीन का सापेक्षवाद उनकी जीवनशैली में प्रतिध्वनित था। उनके विचारों में मुखरित थी। उन्होंने संघ में अनेकांत को व्यापक रूप दिया। मर्यादाओं का निर्माण और क्या है? आचार्य भिक्षु ने शुद्ध आचार व शुद्ध विचार के विकास के अपना लक्ष्य बनाया। दूसरों की निंदा के क्षेत्र नहीं गए । उन्होंने अपनी शक्ति का संचय किया और एक संवैधानिक आदर्श स्थापित किया। उनका दृष्टिकोण विधेयात्मक (सकारात्मक) था। उन्होंने विचारों में सामंजस्य का साम्राज्य स्थापित किया। अनाग्रही सोच का विस्तार व सह-अस्तित्व की चेतना का जागरण करने वाले वे एक आध्यात्मिक पुरुष थे। वे दूसरों को मुक्त करना चाहते थे, इसलिए उन्होंने मुक्तता की स्वतंत्रता दी और विवेक को जगाया। विचारों की स्वतंत्रता तो दी, किंतु मुक्त गगन में विचरते मन को भी मर्यादा की डोर से बाँधकर रखा। इससे संघ शक्ति-संपन्न बना और एक नेतृत्व की शालीन परंपरा का सूत्रपात हुआ। फ्रांस में जन्मे हेनरी फेयोल (Henri Fayol) के प्रशासनिक प्रबंधन के सिद्धांतों से आचार्य भिक्षु द्वारा निर्मित संविधान काफी मिलता-जुलता है–

Unity of Command - आदेश की एकता
Unity of Direction - दिशा की एकता

आचार्य भिक्षु ने लिखा है–

'सर्व साध्वियाँ एक आचार्य की आज्ञा में रहें।'
'विहार और चातुर्मास आचार्य की आज्ञा से करें।'

उन्होंने अपने आसपास योग्यता के परिवेश को तैयार किया। योग्य शिष्य ही बलिदान कर सकता है; विनम्रता, सहिष्णुता और समर्पण उसी से शोभित हो सकते हैं। उग्र प्रकृति के धनी मुनि नाथोजी आवेश के कारण संघ से चले गए। संत जन ने स्वामीजी से निवेदन किया, तो आचार्य भिक्षु ने कहा—'हाथ पर बड़ा फोड़ा हो गया हो और वह बड़ा कष्ट दे रहा हो, अगर वह फूट जाए तो क्या होगा? आराम होगा या कष्ट?' संतों ने कहा—'शांति मिलेगी।' आचार्य भिक्षु ने कहा—'नाथोजी का चले जाना कोई दुःख की बात नहीं है, उनका जाना संघ के स्वास्थ्य के लिए अच्छा है।'

श्रम-सौंदर्य से भरा अलौकिक व्यक्तित्व

शासन माता साध्वीप्रमुखा श्री कनकप्रभाजी ने अपनी कविता में लिखा है–

जो अंधेरे में उजाला बो चुका है,
आज उसकी याद में कुछ गीत गाएँ।
जो बनाकर सुधा विष को पी चुका है,
उस फरिश्ते की कहानी हम सुनाएँ॥
जो पुजारी अनवरत प्रभु-देवता का,
उस सृजन की सफलता को सिर नवाएँ॥

आचार्य भिक्षु ने सक्रियता का जीवन जिया, उन्हें कभी विश्राम की आवश्यकता अनुभूत नहीं हुई। अपना कार्य स्वयं अपने हाथों से करने की वृत्ति उनमें प्रारंभ से ही थी। विहार करना, व्याख्यान देना और गोचरी जाना—यह उनका नित्य क्रम बना हुआ था। वे रात-रात भर जागकर तत्त्व-चर्चा करते थे। एक बार दो आगंतुक तत्त्व-चर्चा करने आए; पूरी रात्रि व्यतीत हो गई। जब उन्होंने तत्त्व को परिपूर्णता के साथ समझा, तो गुरु-धारणा स्वीकार कर ली। तभी प्रतिक्रमण की वेला हुई। स्वामीजी ने कहा—'संतों उठो, प्रतिक्रमण का समय होने वाला है।'

साधु उठकर पूछने लगे

आप कब सोए?' स्वामीजी ने कहा—'पहले यह तो पूछो कि आप कब सोए?' एक बार किसी ने स्वामीजी से कहा—'इस वृद्धावस्था में भी आप खड़े-खड़े प्रतिक्रमण क्यों करते हैं? आने वाले संत तो बैठकर अवश्य करेंगे।' तब सत्तर वर्ष की उम्र में भी वे लगभग अपना नांगला ओर 'झोलका' (पात्र आदि रखने का झोला) स्वयं रखते थे और दस किलो वजन अपने कंधों पर स्वयं उठाते थे। आचार्य भिक्षु के वैशिष्ट्यमय जीवन के पृष्ठों को जब-जब पढ़ते हैं या सुनते हैं, तब मन रोमांच से भर जाता है। वे विलक्षण प्रतिभा के धनी थे।

ज्योतिपुंज आचार्य श्री महाश्रमणजी की सन्निधि में आचार्य भिक्षु जन्म-त्रिशताब्दी का भव्य आयोजन दूर-संचार के माध्यम से देखकर मैं मंत्रमुग्ध हो गया। और जब साधु-साध्वीवृंद के मुख से प्रवचन-माला सुनी, तब लगा कि इस अनुसंधान के द्वारा उनके जीवन के अनेक अनछुए पृष्ठों पर प्रकाश डाला जा सकता है। ऐसे दिव्य पुरुष के चरणों में शत-शत नमन।

रहस्यमयी जीवन शैली

● साध्वी उदितप्रभा ●

आचार्य भिक्षु का जीवन अनेक समवायो का पर्याय रहा है। वे बचपन से ही स्वाभिमानी व्यक्ति थे। किसी के द्वारा किया गया अपमान उन्हें सह्य नहीं था—चाहे वह चाचा के द्वारा किया गया मज़ाक हो, ससुराल में गालियों की बौछार हो, या अन्य किसी के द्वारा की गई भविष्यवाणी हो।

उन्होंने अपनी प्रत्युत्पन्नमति से गलत कुरीतियों और प्रवृत्तियों को कभी पोषण नहीं दिया। बढ़ती हुई अंधरूढ़ियों का परिष्कार करना भिक्खण जी का परम लक्ष्य था। वे सत्य के जिज्ञासु थे और उनका लक्ष्य था आत्मतत्व को प्राप्त करना। उन्होंने गुरु के मोह को छोड़कर सत्य की राह पर धर्म-क्रांति के लिए कठिन मार्ग पर कदम बढ़ा दिए। उन्हें ज्ञात था कि अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा, परन्तु उन्हें समभाव से सहन करना ही हमारा परम लक्ष्य होगा।

उनका चिंतन यही था— 'मर पूरा देस्यां पर आत्मारा कारज-सारस्यां।'

इसी लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए उन्होंने अपने प्रिय शिष्य भारीमाल जी से भी कह दिया था कि तुम्हारे पिता उग्र प्रकृति के हैं, वे आने वाली कठिनाइयों को सहन नहीं कर पाएंगे, तुम अपने चिंतन पर दृढ़ रहो—क्योंकि उन्हें शिष्यों की भीड़ बढ़ाने का मोह नहीं था। वे भगवान महावीर द्वारा बताए हुए मार्ग को आत्मसात करना चाहते थे। संगठन की मज़बूती के लिए शिष्य-प्रथा को खत्म कर 'एक आचार, एक विचार और एक आचार्य' होना संघ में मान्य रखा, जिससे साधक सच्ची साधना करके अपने आत्म-स्वरूप को प्राप्त कर सके।

आचार्य भिक्षु भगवान महावीर की वाणी के प्रति पूर्ण समर्पित थे। शुरुआत में उन्होंने सोचा कि जनता मिथ्यात्वी है, वह तत्व को समझना नहीं चाहती। तब उन्होंने निराश होकर सिरियारी की नदी की तप्ती रेत में एकांतर तप के साथ आतापना शुरू कर दी। कुछ समय पश्चात दो विनीत शिष्य—थिरपाल जी व फतेहचन्द जी ने निवेदन किया—'गुरुदेव, तपस्या हम करेंगे, आप जनता को प्रतिबोध (उपदेश) दें।' शिष्यों के विनम्र निवेदन को स्वीकार कर उन्होंने पुनः जनता को प्रतिबोध देना शुरू किया। आचार्य भिक्षु को 'लौह पुरुष' भी कहा है। किसी कवि ने सत्य ही कहा है–

वृक्ष की भांति संसार में फलता है कोई-कोई,
दीपक की भांति संसार में जलता है कोई-कोई।
आदर्श की बात करने में प्रवीण हो बन्धुओं!
आदर्श के पथ पर चलता है कोई-कोई।

आचार्य भिक्षु एक आदर्श पुरुष थे। अनेक भयंकर विरोधों के बावजूद भी उन्होंने मर्यादाओं का सजगता से पालन किया। वे अपने शिष्यों को भी सदैव सजग रहने की प्रेरणा देते थे। उन्होंने अपने विनीत शिष्य भारीमाल स्वामी से कहा—'अगर मैं ईर्यासमिति में गलती करूँ, तो तुम्हें तेला करना होगा।' तब भारीमाल जी ने विनय से स्वीकार करते हुए कहा—'गुरुदेव! अगर कोई दूसरा भी गलत कहे, तो हमें तेला तो करना ही होगा, उसे निर्जरा मानकर स्वीकार कर लेना।' स्वामी जी को संघ में कोई भी नई मर्यादा लागू करनी होती, तो वे सर्वप्रथम अपने परम विनीत शिष्य भारीमाल जी पर उसका व्यावहारिक प्रयोग करते और शिष्य उसे 'तहत्त' कहकर शिरोधार्य करते।

स्वामी जी दीक्षा लेने वालों की कड़ी कसौटी करते थे। जो उस कसौटी पर खरा उतरता, उसे ही दीक्षा प्रदान करते। काफी समय तक संघ में साध्वियों की दीक्षा नहीं हुई थी। एक बार तीन बहनें दीक्षा के लिए आईं। स्वामी जी ने परीक्षा लेते हुए पूछा—'अगर दीक्षा के बाद तुम तीन में से किसी एक का देवलोक गमन हो गया, तो शेष दो को संथारा (आमरण अनशन) करना होगा, क्या तैयार हो?' तीनों बहनों ने दृढ़ता और निष्ठा से इसे स्वीकार किया। ऐसी कठोर और पवित्र थी उनकी मर्यादा।

आचार्य भिक्षु के पास श्रद्धा का अमित बल था। वे जितने तार्किक थे, उतने ही श्रद्धालु भी थे। वे भगवान महावीर और उनकी वाणी पर स्वयं का सर्वस्व न्यौछावर कर चलते थे। आज उनका वही समर्पण भाव चारों ओर गुंजायित है—'है यह तेरापंथ।'

आचार्य भिक्षु की महाप्रयाण त्रिशताब्दी के पावन उपलक्ष्य में हम आपकी मर्यादाओं को शत-शत नमन करते हैं। आपके बताए गए मार्ग पर चलते हुए, वर्तमान अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी की पावन सन्निधि में हमारा यह धर्मसंघ संयम के पथ पर गति और प्रगति करता रहे।

आचार्य श्री भिक्षु त्रिजन्मशताब्दी पूर्णाहुति पर विशेष

झरोखे से झांकता आचार्य भिक्षु का तपस्वी जीवन

● मुनि जिनेशकुमार ●

महापुरुष का अन्तःकरण परमार्थ से अभिभूत होता है। वे जैसे अपना श्रेयस चाहते हैं, वैसे ही दूसरों का भी। आचार्य भिक्षु ने श्रेयस का मार्ग चुना और उसे जनता को भी दिखाना चाहते थे। इस मार्ग में अनेक उतार-चढ़ाव आने के बावजूद उन्होंने कभी तितिक्षा को नहीं छोड़ा। उनका जीवन-दर्शन अनेक विधाओं में गुम्फित था, जिसे उनके जीवन के संस्मरण पूरी तरह उजागर करते हैं।

सहनशीलता

धर्म की पहली कसौटी सहनशीलता है, जो अनुकूल-प्रतिकूल स्थिति में समभाव रखना सिखाती है। 'सहन करना मेरा आत्मधर्म है और इससे पवित्रता बढ़ती है'– एक बार आचार्य भिक्षु देसूरी जा रहे थे, तो मार्ग में घाणेराव के लोग मिले। उन्होंने पूछा, 'तुम्हारा नाम क्या है?' आचार्य भिक्षु ने कहा, 'मेरा नाम भीखण है।' तब वे बोले, 'क्या तेरापंथी भीखण तुम ही हो?' आचार्य जी ने हामी भरी। उनमें से एक व्यक्ति बोला, 'गजब हो गया, सुबह-सुबह तुम्हारा मुंह देखा है, इसलिए मैं नरक में जाऊंगा।' आचार्य भिक्षु ने सहजता से पूछा, 'भाई! तुम्हारा मुंह देखने वाले कहां जाते हैं?' उसने गर्व से कहा, 'मेरा मुंह देखने वाले स्वर्ग जाते हैं।' आचार्य भिक्षु ने मुस्कुराकर कहा, 'जैन परंपरा के अनुसार किसी का मुंह देखने से स्वर्ग या नरक नहीं मिलता, लेकिन तुम्हारे कथनानुसार हमने तो तुम्हारा ही मुंह देखा है, अतः हम तो स्वर्ग या मोक्ष जाएंगे! तुम अपनी जानो।' यह सटीक उत्तर सुनकर सामने वाला शर्मिंदा हो गया।

आचार

आचार्य भिक्षु के व्यक्तित्व का मुख्य घटक उनका कठोर आचार पक्ष था। वे जीवन में आचरण की शुद्धता को सर्वाधिक महत्व देते थे। एक बार एक भाई ने उनसे पूछा, 'भीखणजी! यदि कोई साधु जंगल में रास्ता भटक जाए और पीछे से आती हुई बैलगाड़ी में बैठकर अपनी मंजिल तय कर ले, तो क्या दोष है?' भिक्षु स्वामी ने मर्मस्पर्शी उत्तर दिया, 'वह तो गाड़ी आ रही है; यदि उस मार्ग में गधा आता हो और वह उसकी सवारी कर ले, तो क्या दोष है? साधुत्व के आचार पक्ष को छोड़कर यदि कोई सवारी करता है, तो हमें क्या आपत्ति है?' यह अकाट्य तर्क सुनकर वह भाई निरुत्तर हो गया।

पारस्परिक सौहार्द

संघीय जीवन के विकास का महत्वपूर्ण सूत्र पारस्परिक सौहार्द है। जिस संघ में साधु-साध्वियां आपस में सौहार्द और प्रेम नहीं रखते, वह कभी प्रगति के शिखर को नहीं छू सकता। जहां बड़ा संघ होता है, वहां वैचारिक टकराहट की संभावना रहती है, लेकिन आचार्य श्री अपनी मेधा से उसका तत्काल समाधान कर देते थे। एक बार दो साधुओं के बीच विवाद छिड़ गया। दोनों आचार्य भिक्षु के पास आए। एक ने कहा, 'गुरुदेव! यह रसलोलुप है।' दूसरा बोला, 'मैं नहीं, बल्कि यह अधिक रसलोलुप है।' स्वामीजी ने समस्या का अनूठा समाधान निकाला। उन्होंने कहा, 'मेरी स्वीकृति लिए बिना तुम दोनों विगय खाने का त्याग करो। जो मुझसे पहले स्वीकृति मांगेगा, वह कच्चा साबित होगा और दूसरा पक्का।' दोनों ने आज्ञा शिरोधार्य की और चार महीने तक दूध, दही, घी, तेल, मिठाई, चीनी आदि का त्याग कर दिया। पूरा वर्षाकाल बीतने के बाद एक साधु का मन डोल गया। उसने गुरुदेव से आकर घी खाने की स्वीकृति मांगी। इस तरह बिना किसी विवाद और जांच के समस्या का सहज समाधान हो गया।

गुणग्राही

आचार्य श्री की दृष्टि सदैव गुणग्राही थी; वे बुराई में से भी अच्छाई खोज लेते थे। एक बार एक व्यक्ति ने उनसे आकर कहा, 'भीखणजी! लोग आपके बहुत अवगुण निकालते हैं।' स्वामीजी ने सहज भाव से कहा, 'निकाल ही तो रहे हैं, हमारे भीतर डाल तो नहीं रहे हैं। फिर इसमें अफसोस कैसा? यह तो अच्छा ही हो रहा है—कुछ अवगुण मैं स्वयं निकालने का प्रयास कर रहा हूँ और कुछ वे निकाल रहे हैं।' स्वामीजी ने मंद मुस्कान के साथ कहा कि वे तो एक प्रकार से मेरा सहयोग ही कर रहे हैं, क्योंकि अवगुणों को निकाले बिना मुक्ति संभव नहीं है। यह सुनकर सामने वाला अवाक् रह गया।

दीक्षा

दीक्षा केवल वेश बदलना नहीं, बल्कि भोग से योग की ओर प्रस्थान करना है। आचार्य भिक्षु मनुष्यों के सच्चे पारखी थे और पूरी जांच-परख के बाद ही दीक्षा देते थे। एक बार खैरवा के चतरोजी शाह दीक्षा की अनुमति मांगने आए। स्वामीजी ने उनसे कहा, 'दीक्षा की बात करना सरल है, परंतु उसकी अनुपालना करना खांडे (तलवार) की धार पर चलने के समान है। तुम दीक्षा की बात तो करते हो, किन्तु परिवार के लोगों को मोहवश रोते देखकर क्या तुम्हारी आंखों में आंसू नहीं आएंगे?' चतरोजी ने कहा, 'महाराज! आंसू तो मेरे भी आ सकते हैं।' स्वामीजी ने मर्म समझाते हुए कहा, 'भले मनुष्य! बेटी ससुराल जाती है तो उसका रोना स्वाभाविक है, लेकिन यदि जमाई भी रोने लग जाए तो कैसा लगेगा? ठीक वैसे ही, परिवार के लोग मोहवश रोते हैं, लेकिन यदि दीक्षार्थी स्वयं उन्हें देखकर रोने लग जाए, तो ऐसी स्थिति में दीक्षा संभव नहीं है।'

संघ

आचार्य भिक्षु की दृष्टि मूलग्राही थी। उन्होंने संघ का निर्माण आचार-विचार के विशुद्ध पालन के लिए ही किया था। उनके शब्द थे— 'चारित्र चोखो पलावण तांई ए मर्यादा बांधी छै।' जब उनसे पूछा गया कि आपका यह संयमित मार्ग कब तक चलेगा, तो उन्होंने कहा, 'जब तक साधु-साध्वी शुद्ध आचार-विचार का पालन करते रहेंगे और नीति-रीति के प्रति सावधान रहेंगे, तब तक यह धर्म शासन चलता रहेगा।' ये संस्मरण इस बात के जीवंत साक्षी हैं कि आचार्य भिक्षु का महान व्यक्तित्व कितनी अनगिनत दिशाओं को छूता था।

भविष्यदृष्टा आचार्य भिक्षु

● शासन श्री साध्वी मंजुरेखा ●

तेरापंथ धर्मसंघ एक प्राणवान संघ है, जिसका मुख्य आधार 'अनुशासन' है। स्व-अनुशासन ही नेतृत्व क्षमता को जन्म देता है। महान वैज्ञानिक आइंस्टीन ने भी लिखा है— 'अनुशासन से हर जगह विजय प्राप्त की जा सकती है।' इसी अनुशासन व मर्यादा के निर्माता आचार्य भिक्षु थे, जिनका नाम ही मंगल मंत्र है। आचार्य भिक्षु एक सिद्धयोगी पुरुष थे, जिनके संस्कारों में योगसिद्धियां चलती थीं। एक श्वास में पूरा 'लोगस्स' व 'णमोकार मंत्र' का स्पष्ट जप करना उनकी प्राणवान साधना थी, जिसे 'रत्न मंत्र' कहा गया। उनके जप से असंभव कार्य भी संभव हो जाते थे।

संतुलन का नाम ही अनुशासन है

प्रतिभा, प्रज्ञा और पुरुषार्थ के धनी स्वामी जी ने सत्य को व्यवहार के धरातल पर जिया। अनुशासन के माध्यम से ही विनय, समर्पण और सहिष्णुता के आदर्शों को जीवन में उतारा जा सकता है।

संघ के गणस्तम्भ

तेरापंथ में अनुशासनप्रिय साधुओं को प्रथम स्थान मिला। मुनि सतयुगजी, मुनि बेणीरामजी, मुनि हेमराजजी और मुनि रायचंदजी संघ के 'गणस्तम्भ' कहलाए। सर्व-आत्मसमर्पण करने वाले मुनि भारमल को भी गुरुदेव से विशेष आशीष मिला।

शारीरिक व मानसिक संतुलन

जैसे हमारे शरीर की 600 खरब कोशिकाओं का नियंत्रण मस्तिष्क करता है, वैसे ही तेरापंथ संघ का नियंत्रण एक आचार्य की आज्ञा से होता है। अनुशासन ही प्राण शक्ति का संतुलन है।

नई संभावनाओं के द्वार व कठिन राह

आचार्य भिक्षु का स्वनियंत्रण ही मर्यादा को प्रतिष्ठित करता था। उनके विचारों की यथार्थता को विरोधियों ने भी स्वीकार किया। स्थान, आहार-पानी और वस्त्रों के भारी अभाव के बावजूद उनका हर कदम अध्यात्म से सुशोभित रहा और उनकी बनाई मर्यादाएं हीरे की तरह निखरती गईं।

कठिनाइयों में भी मंजिल को ढूंढा

स्वामी जी का जीवन एक योद्धा जैसा था, जो संघर्षों के आगे कभी झुके नहीं।

तप-त्याग की गाथा

बगड़ी और मारवाड़ की धरती पर उन्होंने पांच वर्षों तक आहार-प्राप्ति के लिए असाधारण कष्ट झेले, पर कदम पीछे नहीं हटाए।

संघीय संविधान का निर्माण

उन्होंने मुनि श्री थिरपाल जी और मुनि श्री फतेचंद जी को 'रत्नाधिक' बनाया। सिद्धांतों से बिना समझौता किए उन्होंने **'एक आचार, एक विचार तथा एक समाचारी'** का दृढ़ निश्चय किया।

अहंकार का विसर्जन

'कोई भी साधु-साध्वी अपना अलग शिष्य न बनाए'—इस कठोर मर्यादा से उन्होंने अहंकार और मम्कार को समूल नष्ट कर दिया।

मौलिक अवधारणाएं

उदार चरित्र के नायक आचार्य भिक्षु ने समाज को अनेक नवीन सिद्धांत दिए–

साध्य और साधन

अशुद्ध साधन कभी भी मोक्ष (साध्य) तक नहीं पहुंचा सकता।

अहिंसा का स्वरूप

पंचेन्द्रिय के पोषण के लिए एकेन्द्रिय (वनस्पति/पृथ्वी आदि) की हिंसा करना सर्वथा अनुचित है। उन्होंने आगमों के आधार पर 'दया और करुणा' के वास्तविक रूप को जन-जन तक पहुंचाया।

प्रमाद को क्षमा नहीं

वे शुद्ध आचार के प्रबल पक्षधर थे और लापरवाही (प्रमाद) को कभी सहन नहीं करते थे।

चंडावल का प्रसंग

जब कुछ साध्वियों द्वारा आवश्यकता से अधिक कपड़ा रखने का संदेह हुआ, तो मुनि अखैराम जी को भेजकर कपड़ा वापस मंगवाया गया। मर्यादा के अनुसार, प्रमाद के कारण उन साध्वियों के 'पानी का जोड़' (प्रायश्चित/तप) को बढ़ा दिया गया।

अंतिम सांस के क्षण

स्वामी जी को मुनि भारमलजी जैसे विनीत शिष्य मिले, जिनका समर्पण बेमिसाल था। आचार्य भिक्षु ने भारमलजी के साथ अपने पवित्र आत्मिक संबंध को स्वीकार किया। अपने अंतिम समय को पहले ही भांपकर आचार्य श्री ने फरमाया—'सभी साधु-साध्वी अब मेरे उत्तराधिकारी मुनि भारमलजी की आज्ञा में चलें।' स्वामी जी का यही अनुशासनात्मक दर्शन आज भी प्रासंगिक है कि संयम ही हर समस्या का समाधान है।

आचार्य श्री महाश्रमण जी के कर्तृत्व को नमन

आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी समारोह एवं योगक्षेम वर्ष वर्तमान शासनकाल के स्वर्णिम पृष्ठ हैं। आचार्य श्री महाश्रमण जी की पावन सन्निधि में साधु-साध्वियों के व्यापक प्रशिक्षण और सामूहिक सामायिक जैसे कार्यक्रम संपन्न हुए। 'प्रेक्षा पाथेय' प्रदान करते हुए आपने फरमाया था कि आचार्य भिक्षु के सिद्धांतों को समझते हुए हमें आत्म-चिंतन करना है। जन्म त्रिशताब्दी के अवसर पर इससे बड़ा और कोई उपहार नहीं हो सकता।

आचार्य श्री भिक्षु त्रिजन्मशताब्दी पूर्णाहुति पर विशेष

अध्यात्म के महासूर्य : आचार्य भिक्षु

● डॉ. साध्वी सरलयशा ●

तीन सौ वर्ष पूर्व अवतरित आचार्य भिक्षु के पारदर्शी सूक्ष्म सिद्धांतों को आत्मसात करने के लिए 'भिक्षु त्रि-जन्म शताब्दी' का वर्षभर चलने वाला महान उत्सव मनाया गया। आडंबरों से मुक्त इस उत्सव में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अपनी धवल सेना और अनुयायियों को 'गहरे पानी पैठ' का संबोध देकर भिक्षुमय बनने का आह्वान किया।

विशिष्ट परिवेश और जन्म की सार्थकता

विशिष्ट जन्म: आषाढ़ त्रयोदशी के दिन माता दीपां की कुक्षि से बालक भिक्षण (भिवण) का अवतरण हुआ। अनेक शुभ-मंगल चिह्नों से युक्त उनकी शरीर-रचना तीर्थंकरों के जन्मजात लक्षणों की स्मृति कराने वाली थी।

जागृति और त्याग: शाह शालिभद्र की तरह उन्होंने भरी जवानी में सपत्नीक संयम अंगीकार करने का संकल्प किया और भोग पर त्याग की विजय का परचम फहराया।

क्रांति का सूत्रपात: आचार्य भिक्षु का जन्म जिनशासन के अभ्युदय, सत्य क्रांति, धर्मक्रांति और शुद्ध साध्वाचार का प्रतीक सिद्ध हुआ। वे मर्यादा और अनुशासन के शिखर पुरुष कहलाए।

सत्य संधित्सु (सत्य के पुजारी) आचार्य भिक्षु संयम, तप और त्याग के जीवंत प्रतीक थे। उनका फौलादी संकल्प था—'मर पूरा देस्या, आत्मा रा कारज सारस्या।'

1. कठोर साधना के बल पर उन्होंने तेरापंथ धर्मसंघ की स्थापना की।
2. उन्होंने तात्विक तथ्यों को युक्तियों और उपमाओं के माध्यम से लोगों को समझाया।
3. पाखंडियों और वेषधारी धर्म के ठेकेदारों पर कड़ा प्रहार कर धर्म का तेजस्वी रूप प्रकट किया।

अद्वितीय व्यवस्था कौशल

संघ की सुदृढ़ता और चिरजीविता के लिए उन्होंने व्यवस्था पक्ष को सबसे मजबूत आधार बनाया: एकता का सूत्र: उन्होंने 'एक आचार, एक विचार एवं एक आचार्य' की सुंदर व्यवस्था का सूत्रपात किया।

अनुशासन: मर्यादाओं के सुरक्षा-कवच से संघ के प्रत्येक सदस्य को सुरक्षित और शक्ति-संपन्न बनाया तथा 'आणाय मामगं धम्मं' का बोध-पाठ हृदयंगम करवाया।

वैश्विक पहचान : उनके इसी व्यवस्था कौशल के कारण पीढ़ी-दर-पीढ़ी तेरापंथ धर्मसंघ निखरता गया, जिसकी बेमिसाल बानगी वर्तमान में आचार्य प्रवर के नेतृत्व में भी दिखाई देती है।

जॉर्ज एलेन के शब्दों में, 'सेहत, खुशी और सफलता हर आदमी के जूझने पर निर्भर होती है।' इस सत्य को सत्यापित करने वाले आचार्य भिक्षु का फौलादी साहस आने वाली सदियों का मार्ग निर्धारित करता रहेगा।

दीपा-नंदन मन भाए

● साध्वी उदित प्रभा ●

दीपा-नंदन मन भाए, मानस कलियाँ विकसाए,
हर्षित हैं दसों दिशाएं, धरती अम्बर गुंजाए।
ये शासन तो लगे हमें प्यारा है, जीवन का सहारा है...

कंटालिया की पुण्य भूमि पर, सिंह-स्वप्न स्यूं जन्म लियो,
मारवाड़ की शुष्क धरा पर, कल्पतरु फलवान बन्यो।
वा धरती की पुण्याई, माता दीपा हरसाई...
ये शासन तो लगे हमें प्यारा है...

विद्यालय में चरण नहीं, विद्या ने तेरा वरण किया,
प्रत्युत्पन्न मति से तुमने, जन-जन का भ्रम दूर किया।
तुम धर्म संघ के प्रहरी, शासन की नींवें गहरी...
ये शासन तो लगे हमें प्यारा है...

सत्य साधना करने खातिर, संघर्षों को झेल लिया,
'मर देस्यां पूरा तप-जप', स्यूं मन में था संकल्प किया।
साहस था अजब तुम्हारा, कठिनाइयों से नहीं हारा...
ये शासन तो लगे हमें प्यारा है...

मर्यादाएं कठिन तुम्हारी, मर्यादित जीवन-शैली,
घोर विरोधों में भी रहती, अनुपम समता अलबेली।
दीर्घ दृष्टि सदा निहारी, आग्रही बुद्धि भी हारी...
ये शासन तो लगे हमें प्यारा है...

भिक्षु शासन नंदनवन की, गण गरिमा पल-पल गाते,
महाश्रमण की शीतल छाया, शांति सदन में हरसाते।
त्रिशताब्दी वर्ष सुहाना, अविचल अविकल सुख पाना...
ये शासन तो लगे हमें प्यारा है, जीवन का सहारा है...

तर्ज : सूरज कब दूर गगन से...

सत्य रो पुजारी बाबो युग अवतारी हो

● साध्वी सोमयशा ●

सत्य रो पुजारी बाबो, युग अवतारी हो
भिक्षु नाम में, भरयो है चमत्कार॥ भजले भक्ति स्यूं॥

कंटालिय में जन्म लियो हो कनेडा में चमक्यो
सिंहवृत्ति स्यूं झेल्या कष्ट अपार॥ भजले...

अनुशासन मर्यादा री बै फौलादी लकीरां हो
तेरापंथ री शक्ति री बणगी ढाल॥ भजले भक्ति...

विश्व में विख्यात बण्यो तेरापंथ रो कारवो
पीढीदर पीढी, आचारज इणरी शान॥ भजले...

'ॐ भिक्षु' रे समरण स्यूं कष्ट रा हिमगिरी ढह ज्यावे
पग-पग पर पावै, है जय-जयकार॥ भजले...

तीर्थंकर सम महाश्रमण रो दीपै चौथो आरो है
भवजल पार, पुगासी नावड़ली ने थाम॥ भजले...

जन्म-जन्म री पुण्याई स्यूं भैक्षवगण ओ पायो है
जन्म शताब्दी तारणहार री उपहार॥ भजले...

तर्ज - बाबे ने मनावा

❖ **दुनिया में चार चीजें दुर्लभ मानी गई हैं– मनुष्यता, धर्मश्रवण, श्रद्धा और संयम में पराक्रम।**

– आचार्य श्री महाश्रमण

आचार्य भिक्षु : भारत के आध्यात्मिक 'Unlearning Guru'

● श्रेयांस कोठारी ●

'मनुष्य का सबसे बड़ा कारागार उसका अज्ञान नहीं, बल्कि उसका वह ज्ञान है जिसे वह अंतिम सत्य मान बैठता है।' आज पूरी दुनिया में 'Unlearning' (पुरानी मान्यताओं को छोड़ने) पर चर्चा हो रही है। हार्वर्ड, एमआईटी और आधुनिक नेतृत्व विशेषज्ञ मानते हैं कि भविष्य उसी का है जो केवल नया सीखना नहीं जानता, बल्कि समय आने पर अपनी जड़ मान्यताओं और सुविधाजन्य विश्वासों को छोड़ने का साहस भी रखता है। यह विचार आज भले ही आधुनिक लगता हो, पर लगभग ढाई शताब्दी पहले संत आचार्य भिक्षु ने इसे अपने जीवन से जीकर दिखाया था।

आचार्य भिक्षु को सामान्यत

हम तेरापंथ के प्रवर्तक, धर्म-सुधारक और निर्भीक संत के रूप में जानते हैं। किंतु यदि सूक्ष्मता से देखें तो उनका सबसे बड़ा कार्य नया ज्ञान देना नहीं, बल्कि गलत समझ को हटाना था। वे जानते थे कि सत्य का सबसे बड़ा शत्रु अज्ञान नहीं, बल्कि वह आधा-अधूरा ज्ञान है जो स्वयं को पूर्ण सत्य घोषित कर चुका हो।

'Unlearning' का मार्ग और आचार्य भिक्षु का दर्शन

जिस तरह एक प्रसिद्ध ज़ेन कथा में गुरु भरे हुए कप में और चाय न डालने की सीख देते हैं क्योंकि भरे हुए पात्र में नया कुछ समा नहीं सकता, आचार्य भिक्षु का जीवन भी इसी 'मन को खाली करने' की साधना था। उन्होंने लोगों से ग्रंथ नहीं छीने, बल्कि मन का भ्रम दूर किया।

एक मूर्तिकार से जब किसी ने पूछा कि इतनी सुंदर प्रतिमा कैसे बनाई, तो उसने कहा— 'मैंने प्रतिमा नहीं बनाई, वह तो पहले से पत्थर में थी। मैंने केवल वह अतिरिक्त हिस्सा हटा दिया जो प्रतिमा नहीं था।' आचार्य भिक्षु का कार्य भी ऐसा ही था–

१. सत्य की पुनर्स्थापना: उन्होंने किसी नए धर्म का निर्माण नहीं किया, बल्कि धर्म पर जमी उस धूल और विकृतियों को हटाया जो समय के साथ सत्य को ढँक चुकी थीं।

२. तत्त्व को प्रधानता: उनके लिए कसौटी परंपरा नहीं बल्कि तत्त्व था; बहुमत नहीं बल्कि सत्य था। उन्होंने किसी व्यवस्था को केवल इसलिए स्वीकार नहीं किया क्योंकि वह सदियों से चली आ रही थी।

३. कठिन मार्ग का चयन: नया विचार सुनना मनुष्य को प्रिय लगता है, लेकिन पुरानी मान्यता छोड़ना उसे भीतर तक झकझोर देता है। आचार्य भिक्षु ने लोकप्रिय होने के बजाय सत्य के प्रति ईमानदार रहने का कठिन मार्ग चुना।

आज के युग में प्रासंगिकता

आज का समय सूचना (Information) का युग है। मोबाइल और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के कारण ज्ञान की कोई कमी नहीं है, फिर भी मनुष्य में स्पष्टता और विवेक की कमी दिखाई देती है। आचार्य भिक्षु की प्रासंगिकता यहीं सबसे अधिक है–

१. सोचने की पद्धति: वे हमें केवल जानकारी नहीं देते, बल्कि तटस्थ होकर सोचने की विवेकपूर्ण पद्धति देते हैं।

२. वैचारिक स्वतंत्रता: वे हमें यह साहस देते हैं कि किसी विश्वास को केवल इसलिए स्वीकार न करें क्योंकि वह प्राचीन, लोकप्रिय या बहुसंख्यक लोगों द्वारा मान्य है।

३. आंतरिक वैचारिक क्रांति: उनकी सबसे बड़ी आध्यात्मिक क्रांति केवल एक नए संघ की स्थापना नहीं थी, बल्कि मनुष्य को अपने ही विचारों का निरीक्षक बनाना था। उन्होंने अनुयायियों की भीड़ के बजाय विचारशील व्यक्तियों की परंपरा निर्मित की।

वास्तविक संदेश और सच्ची श्रद्धांजलि

यदि आज आचार्य भिक्षु हमारे बीच होते, तो वे हमें नया सिद्धांत देने के बजाय आत्म-निरीक्षण का एक प्रश्न देते। वास्तविक 'Unlearning' यही है कि हम अपने भीतर से इन विकारों को मुक्त करें–

१. क्रोध, अहंकार और संकीर्णता का विसर्जन।

२. अंधानुकरण और जड़ रूढ़ियों का पूर्ण त्याग।

३. वह सुविधाजन्य विश्वास छोड़ना, जिसे कभी सत्य की कसौटी पर परखा ही न गया हो।

उनका जीवन सिखाता है कि विकास केवल नया जोड़ने से नहीं, बल्कि कई बार व्यर्थ और अनावश्यक को हटाने से शुरू होता है। उनकी जन्म त्रिशताब्दी वर्ष की पूर्णाहुति पर उन्हें स्मरण करने का सबसे सुंदर तरीका केवल उनका गुणगान करना नहीं, बल्कि स्वयं से यह प्रश्न पूछना है— 'मैंने जीवन में बहुत कुछ सीखा है, पर क्या मैंने अपनी रूढ़ियों को छोड़ना भी सीखा है?

सत्य का द्वार तभी खुलता है जब मन अपने पूर्वाग्रहों और अहंकार का बोझ हल्का करने का साहस करता है। यही आचार्य भिक्षु की सबसे बड़ी विरासत है—सत्य तक पहुँचने के लिए अपने ही मन की सफाई करने की कला।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा एवं तेरापंथ युवक परिषद के समाचार

लिलुआ

तेरापंथ सभा भवन लिलुआ में तेरापंथ युवक परिषद्,लिलुआ, सत्र 2025–26 की वार्षिक साधारण सभा आयोजित हुई। सुभारंभ नमस्कार महामंत्र से हुआ, उसके पश्चात विजय गीत का संगान परिषद के सहमंत्री दीपक बागरेचा,संगठन मंत्री संयम सेठिया, कार्यकारणी सदस्य मयंक बांठिया और विनय बाफना ने किया और श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन चुनाव अधिकारी रंजीत सेठिया ने किया। स्वागत भाषण परिषद अध्यक्ष अमित नाहटा ने दिया। मंत्री अंकुश छाजेड़ ने मंत्री विस्तृत प्रतिवेदन दिया जिसकी सभी ने ॐ अर्हम की ध्वनि से सराहना की। आय व्यय का ब्योरा कोषाध्यक्ष जयंत घोड़ावत की अनुपस्थिति में संगठन मंत्री संयम सेठिया ने प्रस्तुत किया जिसको सभा सदस्यों ने पास किया। वर्षभर के कार्यों का लेखा जोखा प्रस्तुत करते हुए मंत्री ने सभी सदस्यों के कार्य की सराहना की एवं परिषद के नियुक्त सदस्यों को भी सम्मानित किया। चुनाव अधिकारी रंजीत सेठिया ने आगे की कार्यवाही शुरू की, सहमति से दीपक बागरेचा को अध्यक्ष 2026–27 के रूप में सर्वसम्मति के साथ मनोनीत किया गया। सभी सदस्यों व अन्य पदाधिकारीगण ने दीपक को बधाई दी।

मुंबई

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, मुंबई के शपथ ग्रहण समारोह 'अनुगूंज – दायित्व के संकल्पों की' का आयोजन तेरापंथ भवन कांदिवली में हुआ।युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की सुशिष्या 'शासनश्री' साध्वी विद्यावतीजी 'द्वितीय' आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में यह आयोजन हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वी श्रीजी द्वारा नमस्कार महामंत्र संघान से हुई। मंगलाचरण कांदिवली/मालाड महिला मंडल द्वारा किया गया।संघ गायिका मीनाक्षी भुतोड़िया ने भक्ति गीत की मनमोहक प्रस्तुति दी। श्रावक निष्ठा पत्र का वांचन वरिष्ठ उपाध्यक्ष समीर वकील ने करवाया। स्वागत भाषण निवर्तमान अध्यक्ष माणक धींग ने किया। 'शासनश्री' साध्वी विद्यावतीजी ने नवमनोनीत टीम को निरंतर सक्रिय रहने का मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। साध्वीश्री प्रियवंदा जी ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा कि नवमनोनीत अध्यक्ष सुरेन्द्र कोठारी अपने कार्यकाल को यशस्वी बनाते हुए धर्मसंघ की गौरववृद्धि करे व समाज को विकास की नई ऊंचाई प्रदान करें। साध्वी प्रेरणा जी, साध्वी मृदुयशा जी तथा साध्वी ऋद्धियशा जी ने भी अपना वक्तव्य दिया। समारोह में नवनिर्वाचित अध्यक्ष सुरेन्द् कोठारी को निवर्तमान अध्यक्ष माणक धींग ने शपथ दिलाई। तत्पश्चात अध्यक्ष सुरेन्द्र कोठारी ने अपनी संपूर्ण नवनिर्वाचित कार्यकारिणी को शपथ दिलाई तथा अपनी टीम की घोषणा की जिसमें मंत्री-गौतम डांगी, कोषाध्यक्ष- रिंकू बाफना, वरिष्ठ उपाध्यक्ष- विनोद बोहरा, दिनेश सुतरिया, महेन्द्र तातेड़, बाबूलाल समदरिया, सतीश मेहता, चैनरूप दुगड़ और गणपत डागलिया को नियुक्त किया। तत्पश्चात मार्गदर्शक, उपाध्यक्ष,सहमंत्री, संगठन मंत्री, प्रचार मंत्री, केन्द्रीय समन्वयक, संरक्षक, परामर्शक और विभिन्न समितियों के संयोजकों एवं कार्यकारिणी सदस्यों के नामों की घोषणा व शपथ दिलाई।

अध्यक्ष सुरेन्द्र कोठारी ने अपने उद्बोधन में कहा महासभा के आयामों को गति देते हुए शिक्षा, चिकित्सा, रोजगार मार्गदर्शन, छात्रवृत्ति, युवा विकास व जरूरतमंद परिवारों की सहायता हेतु प्रभावी कार्य करेंगे तथा निवर्तमान टीम को भी आभार ज्ञापित किया। इस अवसर पर श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन के अध्यक्ष मेघराज धाकड़, मंत्री परमार, पूर्व अध्यक्ष भीकमचंद नाहटा, विश्व भारती के महामंत्री सलील लोढ़ा, भारत जैन महामंडल के राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष भूपेश कोठारी आदि ने नई टीम को शुभकामनाएं प्रेषित की। 'अनुगूंज' का यह आयोजन केवल एक शपथ समारोह नहीं, बल्कि मुंबई तेरापंथ समाज के लिए एक नई और गौरवशाली सामाजिक यात्रा का प्रेरणामय शुभारंभ सिद्ध हुआ।

साउथ कोलकाता

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सानिध्य में बृहत्तर कोलकाता की 8 तेरापंथ युवक परिषदों के नवमनोनीत अध्यक्षों, प्रबंधमंडल, कार्यकारिणी एवं क्षेत्र सहयोगी टीमों का सामूहिक शपथ ग्रहण समारोह तेरापंथ भवन, पोद्दोपुकुर (साउथ कोलकाता) में भव्यता एवं गरिमामय वातावरण के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद्, साउथ कोलकाता द्वारा किया गया। समारोह में साउथ कोलकाता, साउथ हावड़ा, उत्तर हावड़ा, कोलकाता मेन, टॉलीगंज, लिलुआ, बेहाला एवं हिन्दमोटर परिषदों की नवमनोनीत टीमों ने पद एवं गोपनीयता की शपथ ग्रहण की। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनिश्री के नमस्कार महामंत्रोच्चार से हुआ। मंगलाचरण बृहत्तर कोलकाता की परिषदों के मनोनीत एवं निवर्तमान अध्यक्षों द्वारा विजय गीत के संगान से किया गया। स्वागत वक्तव्य तेयुप साउथ कोलकाता के निवर्तमान अध्यक्ष अंकित दुगड़ ने प्रस्तुत किया। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के पूर्व अध्यक्ष रतन दुगड़ ने सभी नवमनोनीत अध्यक्षों एवं उनकी टीमों को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई तथा संगठनात्मक दायित्वों के सफल निर्वहन हेतु प्रेरणादायी विचार व्यक्त किए। अपने प्रेरक उद्बोधन में मुनि श्री जिनेश कुमार जी ने कहा कि युवा राष्ट्र की अमूल्य संपदा एवं परिवर्तन के संवाहक हैं। उन्होंने कहा कि पद ग्रहण करना मात्र एक व्यवस्था है, जबकि सेवा भाव से दायित्व निभाना वास्तविक धर्म है। उन्होंने नवमनोनीत पदाधिकारियों को संदेश दिया कि वे अपने पद को भार नहीं बल्कि उपहार समझें तथा उत्साह, निष्ठा, समर्पण एवं सेवा भावना के साथ संगठन के तीन प्रमुख आयाम — सेवा, संस्कार एवं संगठन — को सशक्त बनाने हेतु कार्य करें। अभातेयुप के उपाध्यक्ष प्रथम अनंत बागरेचा ने सभी परिषदों को शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए योगक्षेम वर्ष के अवसर पर लाडनूं में सेवा, उपासना एवं प्रशिक्षण के स्वर्णिम अवसर का लाभ लेने का आह्वान किया। साउथ कोलकाता सभा के अध्यक्ष राजेन्द्र भूतोड़िया ने भी अपने मंगल उद्गार व्यक्त किए। इस अवसर पर तेरापंथ युवक परिषद्, साउथ कोलकाता के नवमनोनीत अध्यक्ष प्रशांत श्यामसुखा ने सभी परिषदों की नवगठित टीमों को शुभकामनाएं देते हुए संगठनात्मक एकता एवं सक्रिय सहभागिता के लिए प्रेरित किया। समारोह के दौरान विभिन्न परिषदों के अध्यक्षों ने अपनी-अपनी नवमनोनीत टीमों की घोषणा की। साथ ही श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सॉल्टलेक के अध्यक्ष जयसिंह डागा एवं उनकी टीम का भी शपथ ग्रहण सम्पन्न हुआ।

कोलकाता

अणुव्रत समिति कोलकाता की 11वीं वार्षिक साधारण सभा का आयोजन भिक्षुगार, महासभा भवन में संपन्न हुआ। अणुव्रत समिति कोलकाता की वर्ष 2025-26 की 11वीं वार्षिक साधारण सभा महासभा भवन के भिक्षु सभागार में सम्पन्न हुई। बैठक की कार्यवाही अणुव्रत गीत-संगान से प्रारंभ हुई। अणुव्रत आचार संहिता का वाचन अणुविभा के सहमंत्री पंकज राज सेठिया ने किया। मंत्री सुरेन्द्र मुनोत द्वारा गत बैठक की कार्यवाही का वाचन किया गया, जिसे सदन ने ध्वनि मत से स्वीकृति प्रदान की गई। अध्यक्षीय उद्बोधन में अध्यक्ष नवीन दुगड़ ने परम पूज्य अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ,मुख्य मुनिवर, साध्वी प्रमुखा जी, साध्वी वर्या , अणुव्रत के परिवेक्षक मुनि मनन कुमार जी, कोलकाता में विराजित मुनि श्री जिनेश कुमार जी ठाणा तीन के प्रति श्रद्धा और कृतज्ञता ज्ञापित की जिनके प्रेरणादायी मार्गदर्शन और सानिध्य से हमारी समिति निरंतर आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों के संवर्धन में सक्रिय रही। सभा में उपस्थित अणुविभा के सह- मंत्री पंकज राय सेठिया एवं प्रचार प्रसार मंत्री पंकज दूधेडिया, समिति के पदाधिकारीगण एवं सभा में पधारे हुए सभी महानुभावों का स्वागत अभिवादन किया। गत वर्ष समिति के द्वारा किए गए कार्यों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया एवं एवं भविष्य के कार्यक्रमों की जानकारियाँ प्रस्तुत की। मंत्री प्रतिवेदन में सुरेन्द्र मुनोत द्वारा वर्ष 2025-26 का मंत्री प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया, गत वर्ष किए गए कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की तत्पश्चात सदन ने मंत्री प्रतिवेदन स्वीकृति के साथ पारित किया गया। कोषाध्यक्ष लक्ष्मीपत जी द्वारा भेजे 2025 - 26 अंकेक्षित खाता पत्रों की प्रस्तुति एवं स्वीकृति प्राप्त हुई। आगामी वर्ष हेतु .. प्रतीक एंड कंपनी को अंकित के रूप में नियुक्त किया गया उन्होंने इसकी स्वीकृति दी। विशेष वक्तव्यों में अणुविभा के सह मंत्री पंकज राज सेठिया ने कहा कि अणुव्रत समिति कोलकाता द्वारा केन्द्र से प्राप्त सभी कार्यक्रमों को बहुत ही उत्साह से करके अपनी अलग पहचान बनाई है। अणुविभा के प्रचार प्रसार मंत्री पंकज दुधोडिया ने अपने विचार , सुझाव रखे। अणुव्रत समिति कोलकाता के निवर्तमान अध्यक्ष प्रदीप सिंघी, पूर्व अध्यक्ष महेन्द्र पारख , उपाध्यक्ष कन्हैया लाल कोठारी, प्रदीप बैद ,सुशील चोरड़िया (पूर्व नेशनल प्रेसिडेंट TPF), सुशील कोठारी टॉलीगंज अध्यक्ष, प्रकाश दुगड़ संगठन मंत्री, राजेन्द्र लिंगा, जय सिंह ,उम्मेद सेठिया,विनय सेठिया, डालम चन्द गिडिया, महावीर जैन, नवरत्न बैद आदि ने अपने विचार रखे। अंत में मंत्री श्री सुरेंद्र जी मुणोत ने सभा मे पधारे हुए सभी महानुभावों का आभार ज्ञापित किया।

हावड़ा

अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी के निर्देशन में अणुव्रत समिति हावड़ा द्वारा सत्र 2025-27 की प्रथम वार्षिक साधारण सभा समिति के अध्यक्ष दीपक नखत की अध्यक्षता में उत्तर हावड़ा स्थित तेरापंथ सभागार में आयोजित हुई। साधारण सभा का प्रारंभ अणुव्रत गीत के सामूहिक संगान से हुआ, अणुव्रत आचार संहिता का वाचन अणुविभा के न्यासी रतन लाल दुगड़ ने करवाया। समिति के अध्यक्ष दीपक नखत ने पधारे सभी का स्वागत वक्तव्य दिया। मंत्री ने गत बैठक की कार्यवाही का वाचन किया जिसे सदन ने पारित किया। मंत्री प्रतिवेदन मंत्री द्वारा प्रस्तुत किया गया जिसे सदन ने पारित किया।आय व्यय का ब्यौरा कोषाध्यक्ष श्री पारस बरडिया ने रखा जिसे सदन ने पारित किया। अणुविभा के न्यासी श्री रतन लाल दुगड़ ने अपना वक्तव्य रखा। मुनिश्री जिनेश कुमारजी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करवाया। मंत्री बिरेंद्र बोहरा ने संचालन एवं आभार ज्ञापन किया। मुनिश्री के मंगलपाठ के साथ सभा का समापन हुआ।

अमराईवाड़ी-ओढ़व

नवनिर्वाचित सभा की कार्यकारिणी का जैन संस्कार विधि से शपथ ग्रहण समारोह फ्लोरा होटल, अमराईवाड़ी-ओढ़व में गरिमामय वातावरण में सम्पन्न हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि मेवाड़ मण्डल अहमदाबाद के अध्यक्ष रमेश पगारिया थे। समारोह का सफलतापूर्वक संयोजन निवर्तमान मंत्री निर्मल ओस्तवाल ने किया। निवर्तमान अध्यक्ष नवरतन चिपड़ के प्रेरक उद्बोधन के पश्चात नवनिर्वाचित अध्यक्ष गणपत हिरण ने पद एवं गोपनीयता की शपथ ग्रहण कर अपनी कार्यकारिणी को शपथ दिलाई। अभातेयुप से निकुंज पारिख, तेयुप अध्यक्ष सुनील चिपड़, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा संजू चिप्पड़ एवं अन्य पदाधिकारीगण ने नवगठित टीम को शुभकामनाएँ प्रेषित कीं। निर्मल ओस्तवाल को ज्ञानशाला संयोजक एवं कोमल हिरण को मुख्य प्रशिक्षिका मनोनीत किया।

ज्ञानशाला शिविर का सफल आयोजन

उदयपुर।

श्री जैन तेरापंथ सभा उदयपुर के तत्वावधान में ज्ञानशाला शिविर में बच्चों ने दिखाया पूर्ण उत्साह। कार्यक्रम का शुभारंभ ज्ञानशाला की बहनों द्वारा मंगलाचरण पर (परमेष्ठी वंदना) वंदना द्वारा किया गया।

तत्पश्चात योगा, प्रेक्षा, मेडिटेशन ट्रेनर अंतिमा सिंघवी ने बच्चों को बताया कि हमारे जीवन में योगा, प्रेक्षा ध्यान का कितना महत्व है। हमें केवल स्वस्थ रहने के लिए ही नहीं अपितु हमारे जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए योग और प्रेक्षा अध्ययन अत्यंत जरूरी है। उन्होंने बच्चों को बैलून के माध्यम से सरल तरीके से बताया कि हमारे फेफड़ों के लिए ऑक्सीजन कितना जरूरी है। अंतिमा ने छोटी-छोटी योग क्रियायो के माध्यम से सभी को बताया कि हम अपने ब्रेन को कैसे एक्टिव कर सकते हैं, आंखों की रोशनी बढ़ा सकते हैं, याददाश्त बढ़ाने आदि के लिए योग क्रियाएं बताइ। लंच के बाद बच्चों को जैन क्रिकेट खिलाया गया। क्रिकेट बहुत ही रोमांचक रहा । जैन आध्यात्मिक प्रश्नोत्तरी के माध्यम से खिलाया गया।

आयोजन में नियोजन अधिकारी सूर्य प्रकाश मेहता, सभा अध्यक्ष राजकुमार कच्छारा, युवक परिषद से विनीत फुलफ़गर एवं अजीत छाजेड़ आदि उपस्थित थे। सभी ने बच्चों का प्रोत्साहन बढ़ाया।

सभा अध्यक्ष राजकुमार ने सभी बच्चों को बताया कि वह तीन दिन शिविर में जो भी सीखे हैं उसे जीवन में उतारने का प्रयास करें। तत्पश्चात ज्ञानशाला मुख्य प्रशिक्षका चंद्रा पोखरना ने पधारे हुए अतिथियों का स्वागत किया।

प्रशिक्षिका में सर्वाधिक उपस्थिति का पुरस्कार मीना नंद्रेचा को दिया गया। अंत में मुख्य संयोजिका चंद्रा पोखरना की ओर से सभी प्रशिक्षिकाओं को उनकी सेवाओं की प्रोत्साहन के लिए उपहार दिए गए।

निःशुल्क नेत्र एवं स्वास्थ्य जांच शिविर सम्पन्न

हावड़ा।

श्री महावीर विद्या जैन परिवार द्वारा निःशुल्क नेत्र एवं स्वास्थ्य जांच शिविर का सफल आयोजन किया गया। यह परिवार द्वारा पिछले सात महीनों में आयोजित छठा सेवा शिविर था, जिसमें लगभग 150 लोगों ने स्वास्थ्य जांच एवं परामर्श का लाभ उठाया। शिविर में एएसजी आई हॉस्पिटल के विशेषज्ञ चिकित्सकों ने नेत्र जांच कर आवश्यक परामर्श दिया। वहीं आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर की टीम ने विभिन्न स्वास्थ्य जांच सेवाएं उपलब्ध कराईं। प्रसिद्ध आयुर्वेदाचार्य वैद्य डॉ. राधेश्याम श्रीवास्तव ने आयुर्वेदिक चिकित्सा एवं स्वास्थ्य संबंधी परामर्श देकर सेवाएं प्रदान कीं। वहीं आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर के रवि दुगड़ ने भी शिविर को सफल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। पश्चिम बंगाल सरकार के मंत्री उमेश राय मुख्य अतिथि रहे।

बोलती किताब

विजयी बनो

गुरु कृपा से उपजा विचार

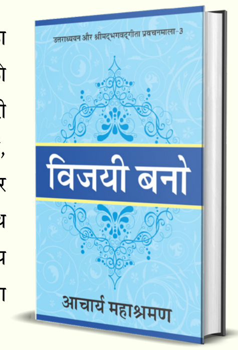

प्रवचन और अध्यात्म का मार्ग ही मानवता के कल्याण का मार्ग है। पिछले कई वर्षों से नियमित रूप से धर्मग्रंथों को आधार बनाकर लोक-कल्याण के लिए प्रवचन करना मेरी जीवनचर्या का एक मुख्य हिस्सा रहा है। इसी श्रृंखला में, परमपूज्य गुरुदेव आचार्य महाप्रज्ञ जी की पावन प्रेरणा और इंगितानुसार मुझे 'श्रीमद्भगवद्गीता' और जैन धर्म के महान ग्रंथ 'उत्तराध्ययन' पर सौ से भी अधिक व्याख्यान देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। गुरुदेव का मार्गदर्शन ही इस आध्यात्मिक यात्रा का मुख्य संबल रहा है।

किसी भी मौखिक ज्ञान को जब तक लिपिबद्ध न किया जाए, उसका लाभ भावी पीढ़ियों तक पहुँचना कठिन होता है। इस व्याख्यानमाला के महत्वपूर्ण और गूढ़ वक्तव्यों को अक्षरों में ढालने का महती कार्य साध्वी सुमतिप्रभा ने किया है। उन्होंने मेरे व्याख्यानों को अत्यंत खूबसूरती से निबंधों का आकार दिया। पिछले कुछ वर्षों से वे पूरे समर्पण, गहरी निष्ठा और एकाग्रता के साथ इन आध्यात्मिक वक्तव्यों के संपादन और निबन्धीकरण के कार्य में जुटी हुई हैं, जिससे यह ज्ञान स्थायी रूप ले सका।

यह नव-प्रकाशित पुस्तक केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि दो महान दार्शनिक विचारधाराओं का अद्भुत समन्वय है। जहाँ एक ओर श्रीमद्भगवद्गीता कर्म और ज्ञान का मार्ग दिखाती है, वहीं दूसरी ओर उत्तराध्ययन सूत्र जीवन के आत्मिक सत्य और अनुशासन से परिचित कराता है। यह कृति इन दोनों महान परंपराओं के मूल तत्वों को बेहद सरल और सुगम भाषा में पाठकों के सामने प्रस्तुत करती है, जिससे धर्म की वास्तविक समझ विकसित होती है।

अंततः, यह पुस्तक श्रीमद्भगवद्गीता में अटूट विश्वास रखने वाले, उत्तराध्ययन में गहरी आस्था रखने वाले साधकों और सत्य की खोज में लगे हर जिज्ञासु के लिए एक उत्कृष्ट मार्गदर्शिका सिद्ध होगी। वैचारिक स्पष्टता और आत्मिक शांति की तलाश कर रहे लोगों के लिए यह ग्रंथ बेहद उपयोगी और संग्रहणीय है। इसी मंगल भावना के साथ सभी पाठकों के प्रति मेरी हार्दिक शुभाशंसा और आत्मिक आशीर्वाद।

इस पुस्तक को ऑनलाइन पढ़ने के लिए
अभी डाउनलोड करें
सम्बोधि ई-लाइब्रेरी ऐप्प
Sambodhi E-Library
SCAN HERE
Readable & Audible Mobile Application

पुस्तक प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
आदर्श साहित्य विभाग,
जैन विश्व भारती लाडनूं
+91 87420 04849
books.jvbharati.org
books@jvbharati.org

पृष्ठ 2 का शेष

'ज्ञान और चारित्र के...

साध्वी प्रमुखा श्री जी की भावांजलि और फिटनेस का राज : आचार्यश्री के प्रवचन के उपरान्त साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुत विभा जी ने श्रद्धाभिव्यक्ति देते हुए फरमाया कि–

१.आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का आहार का कठोर संयम।

२.अपने आवेश और क्रोध पर उनका पूर्ण नियंत्रण।

३.उनके मस्तिष्क की निरंतर सक्रियता। इन्हीं तीन कारणों से वे ९०वें दशक में भी शरीर, मन और वाणी से पूरी तरह स्वस्थ व सक्रिय थे।

शपथ ग्रहण एवं अन्य कार्यक्रमः सभा में विभिन्न आध्यात्मिक उपक्रम भी संपन्न हुए।

१. जैन विश्व भारती के अध्यक्ष अमर चंद लुंकड़ ने अपनी श्रद्धापूर्ण अभिव्यक्ति दी।

२. मुनि राजकुमार जी ने आचार्यप्रवर से आठ की तपस्या का प्रत्याख्यान ग्रहण किया।

३. छठे प्रेक्षा इंटरनेशनल कन्वेंशन में नवनिर्वाचित अध्यक्ष संपतलाल नाहटा को निवर्तमान अध्यक्ष अरविंद संचेती ने शपथ दिलाई, जिस पर आचार्यश्री ने नई टीम को पावन मंगल पाठ सुनाया

हवा, जल और भोजन...

३.संग्रह का त्याग (मिनिमलिज्म): घरों में जो सहज रूप से और जितना मिले, उसे ही समता भाव से ग्रहण करें।

लेख पत्र का सामूहिक उच्चारण और कल्याणक बख्शीश : प्रवचन के दौरान आचार्यश्री ने चतुर्दशी के संबंध में विशेष हाजरी का वाचन किया।

१. कल्याणक बख्शीश: उत्कृष्ट संयम और आराधना के लिए आचार्यश्री ने साध्वी चन्दनप्रभा जी को २१ कल्याणक और साध्वी पद्म प्रभा जी को ५ कल्याणक बख्शीश किए।

२.ज्ञान की परीक्षा : इसके बाद आचार्यश्री ने साध्वी पद्मप्रभा जी से दसवें आलियं के पांचवे अध्ययन के श्लोक सुनाने को कहा। श्लोकों का बिल्कुल सटीक उच्चारण करने पर प्रसन्न होकर पूज्यप्रवर ने उन्हें ५ और कल्याणक प्रदान किए।

भिक्षु भक्ति का आयोजन

सिरियारी।

आचार्य श्री भिक्षु समाधि स्थल संस्थान में मुनि मुनिव्रतजी के सान्निध्य एवं मुनि चैतन्य कुमार 'अमन' के निर्देशन में भिक्षु भक्ति का अयोजन हुआ। भीलवाड़ा से संगायिका अंतिमा दक ने अपने सुमधुर स्वरों में भावपूर्ण भजनों का संगान कर अपने एक से बढ़कर एक गीतों की प्रस्तुति दी। इस अवसर पर मुनि चैतन्य कुमार 'अमन' ने अपने गीतों की प्रस्तुति देते हुए कहा- आचार्य भिक्षु का लक्ष्य था आत्मकल्याण किन्तु इसके साथ ही उन्होंने जन-कल्याण का कार्य भी किया। उन्होंने प्रकाश, सत्य और अमृत की यात्रा की। अपने प्रवचनों के माध्यम से जन मानस को अमृत बांटा। खुद ने अपमानों, तिरस्कारों के जहर की घंटी को निगलते हुए भी सौहार्द स्नेह का अमृत बांटा। अपने आचार विचार संस्कार और व्यवहार से जन-जन के मन को जीत लिया। मुनि अमन ने बताया आचार्य भिक्षु की आगामी आसाड़ शुक्ला त्रयोदशी उनकी जन्म त्रिशताब्दी की सम्पन्नता तथा चतुर्थ शताब्दी प्रारंभ होगी। उनका वह दिन 301 वां जन्म दिन होगा जो कि अतिमहत्वपूर्ण है। सभी का का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम सुचारू रूप से चल रहा है।

पृष्ठ 24 का शेष

दुनिया जीतना तो खेल...

इन्द्रिय संयम और संतोष ही साधना का मूल: आचार्यश्री ने आध्यात्मिक गहराई को छूते हुए परम सत्य को सामने रखाः

१. कषायों पर विजय : अध्यात्म की दृष्टि से कषायों पर विजय प्राप्त करना बहुत उच्च कोटि की साधना है।

२. वीतरागता की दिशा : वर्तमान समय में यदि पूर्ण वीतरागता उपलब्ध न भी हो, तो हमें ज्यादा से ज्यादा उसकी दिशा में गति करनी चाहिए।

३. साधु के लक्षण : साधु को सरल, भद्र और विनीत होना चाहिए तथा छल-कपट और अहंकार से दूर रहना चाहिए।

४. समता का भाव : हमारे भीतर सेवा की भावना हो तथा सेवा लेने और देने वाले, दोनों के मन में समता व शांति रहे।

पण्णा समिक्खए
प्रज्ञा से देखो
योगक्षेम वर्ष
लाडनूं 2026-2027

भिक्षु वाणी

किसी को सूत्र और अर्थ सिखाकर शुद्ध मार्ग में स्थापित करना तथा उसे सम्यग्दर्शन और चारित्र प्रदान करना, यह धर्मदान है। अनुकम्पा आदि दस दानों में इसका आठवां स्थान है।

महामना आचार्यश्री भिक्षु के जन्म त्रिशताब्दी

के पावन अवसर पर श्रद्धासुमन

:: श्रद्धाप्रणति ::

तेरापंथ युवक परिषद संस्था भीलवाड़ा

पण्णा समिक्खए
प्रज्ञा से देखो
योगक्षेम वर्ष
लाडनूं 2026-2027
भिक्षु वाणी
जीव जीता है, वह दया नहीं है। मरता है, वह हिंसा नहीं है।
मारने वाला हिंसक कहलाता है। नहीं मारना शुद्ध दया है।
महामना आचार्यश्री भिक्षु
के जन्म त्रिशताब्दी
के पावन अवसर पर नमन
:: अभिवंदन ::
तेरापंथ युवक परिषद, चेन्नई

प्रेरणा
स्रोत
संथारा साधक
श्री दीपचंद हीरावत
जन्म तिथि : 5 जून 1935
श्रद्धांजली !
श्रद्धा सुमन !
DEEP - JHUMAR
HIRAWAT
CHARITABLE TRUST
चतुर्थ पुण्य तिथि : 11 जुलाई 2026
दीप-झूमर हीरावत चैरिटेबल ट्रस्ट
(सामाजिक, शैक्षणिक, धार्मिक व राष्ट्रीय सेवा एवं विकास के लिए समर्पित)
संस्थापक ट्रस्टी - झूमर देवी हीरावत
संस्थापक प्रबंधकीय ट्रस्टी - आलोक कुमार जैन (हीरावत)
सेवा ही हमारा संकल्प, समाज ही हमारा परिवार
पता : प्लाट नं. 395 बेसमेंट, विनोबा विहार, मालवीय नगर, जयपुर-302017
Mob. 9828014521,
Email id : deepjhumarturst@gmail.com

आचार्य श्री भिक्षु त्रिजन्मशताब्दी पूर्णाहुति पर विशेष

साहस, संकल्प, समता व सकारात्मक सोच के पर्याय : आचार्य भिक्षु

● साध्वी अणिमाश्री, डॉ. साध्वी सुधाप्रभा ●

दुनिया को बदलने, जीवन को आलोक देने और नए पथ का निर्माण करने के लिए साहस, संकल्प, समता, सकारात्मक सोच और सत्य के ध्येय की आवश्यकता होती है। तेरापंथ के आद्य प्रणेता आचार्य भिक्षु का व्यक्तित्व इन्हीं असाधारण गुणों का समाहार था। उनके जीवन में 'चार सकार' का दुर्लभ योग था, जिसने उन्हें अध्यात्म-जगत में 'सिंह पुरुष' के रूप में प्रतिष्ठित किया।

१. साहस

१. विपरीत परिस्थितियों का सामना : आचारांग-सूत्र के अनुसार, 'वीर पुरुष ही महापथ का अनुगमन करते हैं।' आचार्य भिक्षु ने जब नए पथ (तेरापंथ) की शुरुआत की, तब प्रकृति, समाज और उनके अपने लोग भी खिलाफ हो गए। लेकिन साहस के पुरोधा होने के कारण विरोधों के भूचाल भी उनके कदमों को रोक नहीं पाए।

२. सत्य कहने में निर्भीकता: साहसिक मनोवृत्ति के कारण वे किसी की भी गलती का बखान करने से घबराते नहीं थे। वे अपने आराध्य भगवान महावीर की छद्मस्थ अवस्था की एक चूक का भी सार्वजनिक बखान करते थे।

३. मुनि भारमलजी के साथ प्रसंग : जब मुनि भारमलजी ने बढ़ते विरोध को देखते हुए भगवान महावीर की चूक का सार्वजनिक बखान न करने का निवेदन किया, तो आचार्य भिक्षु ने पूछा— 'क्या मैं गलत कह रहा हूँ?' भारमलजी के 'नहीं' कहने पर स्वामीजी ने दृढ़ता से कहा— 'फिर घबराने की कहाँ जरूरत है?'

२. संकल्प

१. वज्र जैसा अडिग संकल्प : आचार्य भिक्षु वज्रसंकल्पी और फौलादी सीने वाले पुरुष थे। उनकी धर्मक्रांति को रोकने या उनके संकल्प को डिगाने के अनेक प्रयास किए गए, पर कोई भी उन्हें अपने मार्ग से च्युत नहीं कर सका।

२. पाली चातुर्मास का प्रसंग : पाली के बावेचाजी और हाकिम जेठमलजी ने उन्हें वहां से निकलवाने की नाकाम कोशिश की। जब वे सफल नहीं हुए, तो उन्होंने रात्रि में स्वामीजी के व्याख्यान के समय ढोल बजाकर और नृत्य-गायन कर विघ्न डालना शुरू किया।

३. विरोधियों को थकाया : श्रावकों ने जब स्वामीजी से अन्य जगह चलने का निवेदन किया, तो उन्होंने कहा— 'नहीं भाई! यही स्थान उपयुक्त है।' कई दिनों के व्यवधान के बाद अंततः विरोधी खुद थक गए और उन्होंने यह हरकत बंद कर दी। जैसे काली घटाएं सूर्य के अस्तित्व को नहीं मिटा सकतीं, वैसे ही विरोध उनके संकल्प को नहीं झुका पाए।

३. समता

१. पृथ्वी जैसी सहनशीलता: दशवैकालिक सूत्र के अनुसार, 'पृथ्वी सब कुछ सहन करती है।' आचार्य भिक्षु की समता भी वैसी ही थी। जब किसी ने कहा कि 'भीखणजी करोड़ कसाइयों से भी बुरे हैं,' तो उन्होंने समभाव से कहा— 'हम ऐसे ही हैं। कसाई तो बकरों को मारते हैं पर उनका कुछ नहीं बिगाड़ते, हम तो उनके श्रावकों को समझाकर उनके मत का खंडन करते हैं, इसलिए वे ऐसा कहते हैं।'

२. कटु वचनों को फूलों की तरह लिया : उन्हें केवल गोचरी, स्थान या वस्त्र के कष्ट ही नहीं मिले, बल्कि तीव्र वाक्-प्रहारों का भी सामना करना पड़ा। लोग उन्हें गोशालक, निन्हव और दान-दया के विरोधी कहकर खरी-खोटी सुनाते थे।

३.भगवान महावीर की वाणी का प्रभाव : भगवान महावीर ने कहा था कि दूसरों के दुर्वचन पर क्रोधित होने वाला भिक्षु मूर्ख के समान हो जाता है, अतः कांटों जैसी भाषा सुनकर भी मौन रहकर उपेक्षा करनी चाहिए। आचार्य भिक्षु ने इस वाणी को आत्मसात किया, जिससे वे समता के महासुमेरु और क्षमासुर बने।

४. सकारात्मक सोच

१. सफलता और सुख का टॉनिक : सकारात्मक सोच रखने वाला व्यक्ति कभी बुराई नहीं देखता, केवल अच्छाई देखता है। आचार्य भिक्षु के सामने कई ऐसे कड़वे प्रसंग आए जो निराशा पैदा कर सकते थे, लेकिन उनकी सकारात्मक सोच ने उन्हें हमेशा प्रसन्नता का उपहार दिया।

२. हाट से निकाले जाने का प्रसंग : पाली में एक हाट में ठहरने के बाद, किसी अन्य संत के कहने पर गृहस्वामिनी ने स्वामीजी से चातुर्मास से पहले ही जगह खाली करने को कह दिया। आचार्य भिक्षु बिना किसी विवाद के स्थिति को भांपकर वहां से उदयपुरिया बाजार की एक मेड़ी में चले गए, जहाँ उनका व्याख्यान बहुत सफल रहा।

३. उपकार की अनूठी भावना : कुछ दिनों बाद भारी वर्षा के कारण उस पहली हाट की छत गिर गई। यह जानकर आचार्य भिक्षु ने द्वेष रखने के बजाय कहा— 'जिन्होंने हमसे हाट छुड़ाई, उन्होंने हमारे ऊपर उपकार ही किया है। अगर हम वहां होते, तो पता नहीं आज हमारा क्या होता।'इस सकारात्मक चिंतन ने उनके आभामंडल को और प्रभावशाली बना दिया।

निष्कर्ष

आचार्य भिक्षु साहस, संकल्प, समता एवं सकारात्मक सोच के जीवंत आदर्श थे। जयाचार्य ने *'भिक्षु जस रसायन' में उनके लिए सही कहा है कि वे सिंह की तरह वीर, सुमेरु की तरह धैर्यशाली और अपनी टेक निभाने वाले बांके सम्राट थे। ये 'चार सकार' हमारे साधनामय जीवन को उद्भासित करने और वीतरागता की ओर बढ़ने के प्राणवान सूत्र हैं।

'मर्यादा के महाप्राण'

पवन मांडोत, प्रधान संपादक तेरापंथ टाइम्स

जैन शासन के अम्बर पर, जो बनके दिवाकर छाए थे,
वह भिक्षु थे जो दुनिया में, सत्य की अलख जगाए थे।
जहाँ रूढ़ियों का जंजाल खड़ा, पाखंड की ऊँची दीवारें,
वहाँ आगम के मंथन से, नव-चेतना के सुर लाए थे।।१।।

न रुके कभी, न झुके कभी, संकट में भी अविचल ही रहे,
अपमान के तीखे बाणों को, वे समता रस से सहते रहे।
भूखे-प्यासे रहकर भी जो, आत्म-ध्यान में लीन रहे,
तपती बालू के आसन पर, वे घोर तपस्या करते रहे।।२।।

तेरह संतों की शक्ति से, जो तेरापंथ की नींव धरी,
प्रभु महावीर के शासन में, भिक्षु ने शुद्ध साधना वरी।
'प्रभो! यह सब कुछ तेरा है', कह अपना शीश नवाया था,
लौकिक-लोकोत्तर दान का, जिसने सच्चा मर्म सिखाया था।।३।।

एक गुरु और एक विधान की, मर्यादा की जो रीति दी,
निज पर शासन करने की, अद्भुत आत्मिक वो प्रीति दी।
भारमल, जयाचार्य, तुलसी, महाप्रज्ञ ने जिसे बढ़ाया,
सद्भावना, नैतिकता का, जन-जन में सुंदर फूल खिलाया।।४।।

ग्यारहवें अधिनायक बनकर, अब महाश्रमण अनुशासक हैं,
उसी भिक्षु की मर्यादा के, वे परम प्रखर प्रकाशक हैं।
जो रोपा था इक बीज कभी, वह आज वटवृक्ष महान है,
इस पावन भिक्षु परंपरा को, हमारा कोटि-कोटि प्रणाम है।।५।।

जय महावीर! जय भिक्षु! जय महाश्रमण!
जय दीपां नंदन! जय बालू नंदन! जय गण चंदन!

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
20 जुलाई - 26 जुलाई 2026

भगवान महावीर-गौतम के प्रश्नोत्तर में है हर शंका का समाधान : आचार्यश्री महाश्रमण

जैन विश्व भारती के सुरम्य परिसर में 'द्वादशांगविद भगवान गौतम' विषय पर बही अमृत देशना; आचार्य भिक्षु की समझाने की कला को बताया बेमिसाल

लाडनूं।
07 जुलाई, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता, शांतिदूत, युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने जैन विश्व भारती के सुरम्य परिसर में योगक्षेम वर्ष के संदर्भ में आयोजित प्रातः कालीन मंगल प्रवचन कार्यक्रम में चतुर्विध धर्मसंघ को 'द्वादशांगविद भगवान गौतम' विषय पर पावन देशना प्रदान की। उत्तरज्झयणाणि आगम के प्रसंगों को उद्घाटित करते हुए आचार्यश्री ने कहा कि भगवान महावीर के प्रमुख गणधर भगवान गौतम बारह अंगों के वेत्ता थे। वर्तमान समय में भले ही द्वादशांगविद् मिलना मुश्किल है, परन्तु साधु-साध्वियों और समणियों को एकादशांगविद् (ग्यारह अंगों का वेत्ता) या किसी एक आगम का वेत्ता बनने का पुरुषार्थ अवश्य करना चाहिए।

श्रावस्ती नगरी में दो महान संतों का दिव्य विहरण : आचार्यश्री ने कालक्रम और इतिहास के झरोखे से दो महान परंपराओं के संतों के मिलन

की पृष्ठभूमि समझाते हुए निम्नलिखित मुख्य बिंदु स्पष्ट किए।

१. केशी कुमार श्रमण का आगमन : भगवान पार्श्व की परंपरा के महान व्यक्तित्व, विद्या और आचार के पारगामी तथा अतीन्द्रिय ज्ञान से संपन्न केशी कुमार श्रमण अपनी शिष्य संपदा के साथ ग्रामानुग्राम विहार करते हुए श्रावस्ती नगरी के तिंदुक नामक उद्यान में पधार कर प्रवास करने लगे।

२.भगवान महावीर का विहरण: उसी समय दूसरे महान संत भगवान महावीर, जो सर्व लोक में विश्रुत थे, तीर्थंकर और सर्वज्ञ थे, वे भी विहरण शील थे। भगवान महावीर वीतराग और साधना के शिखर पर विराजमान थे।

द्वादशांगविद् भगवान गौतम और उनके प्रश्नोत्तर: लोक प्रदीप भगवान महावीर के प्रमुख शिष्य इंद्रभूति गौतम की ज्ञान संपदा और उनकी विशेषताओं को रेखांकित करते हुए पूज्यप्रवर ने बताया:

१. विद्या-आचार के पारगामी : भगवान महावीर के इस महायशस्वी शिष्य का नाम इंद्रभूति गौतम था। वे भगवान महावीर के प्रमुख शिष्य और गणधर थे, जिनके पास विशाल शिष्य संपदा थी।

२. बारह अंगों के वेत्ता : भगवान गौतम परम ज्ञानी और द्वादशांगविद्

> शास्त्रों को सिर्फ पढ़ना काफी नहीं, आगमों की गहराई में उतरने से ही सच्चा ज्ञान मिलता है।
> **-आचार्यश्री महाश्रमण**

(बारह अंगों के ज्ञाता) थे। वे सदा भगवान महावीर से प्रश्न करते थे। इतने प्रश्न संभवतः किसी अन्य ने प्रभु से नहीं किए।

३. आगमों का आधार : आज आगमों में संकलित इन्हीं प्रश्नोत्तरों के माध्यम से ही चारित्रात्माओं और समाज को सच्चा बोध व सही राह मिल पा रही है।

आगम कार्य, अर्थ की गहराई और आचार्यों की ज्ञान संपदा : आचार्यश्री ने आगमों के संपादन कार्य में लगे संतों को मार्गदर्शन देते हुए प्रमुख बातें कहीं:

१. अर्थ खोजने की कला : जो चारित्रात्माएं आगमों के कार्य में संलग्न हैं, उन्हें आगम की गहराई में जाने का अवसर मिलता है। एक शब्द के अनेक अर्थ हो सकते हैं, पर ऐसा सटीक अर्थ खोजना चाहिए जिससे संस्कृत छाया और अनुवाद में अभेद (समानता) रहे।

२. आचार्य भिक्षु का अनूठा तरीका : वर्तमान समय में महामना आचार्य श्री भिक्षु के साहित्य को देखने से पता चलता है कि उनके पास कितना अगाध ज्ञान था। उनका समझाने का तरीका अद्भुत था; वे दृष्टांत के माध्यम से अपनी बात सामने वाले को आसानी से समझाकर समाधान कर देते थे और उनमें अभय का भाव था।

३. जयाचार्य से महाप्रज्ञ जी तक की संपदा : इसी प्रकार प्रज्ञा पुरुष श्रीमज्जयाचार्य का भी अपना विशिष्ट ज्ञान और वैदुष्य था। परम पूज्य आचार्य श्री तुलसी और आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के पास भी विपुल ज्ञान संपदा थी।

साधु-साध्वियों और समणियों को स्वाध्याय की प्रेरणा : प्रवचन के अंत में आचार्यश्री ने ज्ञान के विकास और आगम वेत्ता बनने के लिए पावन पाथेय प्रदान किया।

'स्मार्ट माइंड' से बहस जीत सकते हैं, जीवन तो सरलता से बदलता है : आचार्यश्री महाश्रमण

भावात्मक ऋजुता और वक्रता' विषय पर अमृत देशना: अनावश्यक बहस और छल-कपट से दूर रहकर ही मिलेगी सच्ची सफलता

लाडनूं।
08 जुलाई, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता, अहिंसा यात्रा प्रणेता, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने 'भावात्मक ऋजुता और वक्रता' विषय को विवेचित करते हुए फरमाया कि श्रावस्ती नगरी में एक स्थान पर कुमार श्रमण अपने शिष्य समुदाय के साथ और दूसरे स्थान पर इन्द्रभूति गौतम स्वामी अपने शिष्यों के साथ विराजमान थे। दोनों के शिष्यों ने जब एक-दूसरे के वस्त्रों और नियमों (चातुर्याम व पंच शिक्षात्मक धर्म) में अंतर देखा, तो उनके मन में शंकाएं उठीं। इसी शंका के समाधान के लिए दोनों महापुरुषों ने समागम कर चर्चा करने का विचार किया।

श्रावस्ती नगरी में दो महान संतों का दिव्य समागम : आचार्यश्री ने कालक्रम और इतिहास के झरोखे से दो महान परंपराओं के संतों के मिलन की

> जब तक हमारे स्वभाव में सरलता और भद्रता नहीं आती, तब तक हमारा सारा ज्ञान सिर्फ एक दिखावा है।
> **-आचार्यश्री महाश्रमण**

पृष्ठभूमि स्पष्ट की।

१. चंद्र-सूर्य के समान शोभायमान : गौतम स्वामी अपने शिष्यों के साथ वहां पहुंचे जहां कुमार श्रमण विराजमान थे। कुमार श्रमण द्वारा यथोचित सत्कार के बाद दोनों संत वहां विराजमान हुए, जो मानों चंद्र और सूर्य के समान शोभायमान हो रहे थे।

२. दिव्य शक्तियों का समागम : इस ऐतिहासिक समागमन में हजारों लोगों के साथ-साथ दिव्य शक्तियों की भी उपस्थिति थी। चातुर्याम धर्म और पंच शिक्षात्मक धर्म की समीक्षा कुमार

श्रमण केशी और महामना गौतम स्वामी के बीच हुई आध्यात्मिक चर्चा के संदर्भ में पूज्यप्रवर ने फरमाया।

व्यवस्थागत भेद का कारण : कुमार श्रमण केशी के पूछने पर कि दोनों का साध्य मोक्ष है फिर धर्म के ये दो प्रकार कैसे हो गए? महामना गौतम ने कहा कि प्रज्ञा समीक्षा करती है, ये केवल ऊपरी व्यवस्थागत भेद हैं।

मूल तत्त्व अध्यात्म साधना: चातुर्याम और पंच महाव्रतों के धर्म में काफी समानता है। मूल तत्त्व अध्यात्म की साधना है, आचार और क्रिया में यह अंतर भावात्मक ऋजुता और वक्रता के कारण हो जाता है।

तीर्थंकर व्यवस्था, ऋजुता, वक्रता और जड़ता की स्थिति : आचार्यश्री ने कालखंडों के अनुसार साधुओं के स्वभाव व मति के अंतर को रेखांकित करते हुए प्रमुख बातें कहीं।

१. २४ तीर्थंकरों की व्यवस्था : भरत क्षेत्र में प्रत्येक २४ तीर्थंकरों की व्यवस्था होती है। पहले तीर्थंकर के साधु ऋजु जड़, चौबीसवें तीर्थंकर के साधु वक्र जड़ और शेष बाईस तीर्थंकरों के शिष्य ऋजुप्राज्ञ (सरल और समझदार) होते हैं।

२. स्वभाव और मस्तिष्क का संबंध : स्वभाव का संबंध मोहनीय कर्म से और मस्तिष्क का ज्ञानावरणीय कर्म से है। प्रथम तीर्थंकर के साधु स्वभाव से भले पर कम समझदार होते हैं, जिन्हें समझाना कठिन है। वहीं अंतिम तीर्थंकर के साधु वक्र स्वभाव के होते हैं, जो तर्क देकर मान्य बातों और नियमों में भी गली निकाल लेते हैं।

३.महाव्रतों की आवश्यकता: ऋजु प्राज्ञ साधुओं के लिए चार नियम ही काफी होते हैं, जबकि वक्र जड़ व ऋजु जड़ साधुओं के लिए पांच महाव्रत आवश्यक होते हैं। मोहनीय कर्म हल्का और कषाय मंद हो, तो भावात्मक ऋजुता आ सकती है।

साधु-साध्वियों को स्वभाव में सरलता रखने की प्रेरणा : प्रवचन के अंत में आचार्यश्री ने उत्तम आचरण के लिए पावन पाथेय प्रदान किया।

१. छल-कपट से बचने का संदेश : हम भगवान महावीर के शासन के साधु हैं पर यह जरूरी नहीं कि सभी साधु वक्र हों। हमारे ज्ञान और मति के साथ-साथ स्वभाव में ऋजुता (सरलता) भी होनी चाहिए।

२. सरल और भद्र बनने का प्रयास : साधु को अनावश्यक तर्क, झूठ और छल-कपट से बचना चाहिए। स्वभाव में सरलता हो और आदमी भद्र रहे, ऐसा प्रयास होना चाहिए।

आचार्य भिक्षु : जीवन दर्शन

भिक्षु और भारीमल

आचार्य भिक्षु के प्रति भारीमालजी सर्वात्मना समर्पित थे। वे आचार्य भिक्षु के हाथों दीक्षित हुए और उन्हीं के पास शिक्षित हुए। बचपन से लेकर स्वामीजी की समाधि-मृत्यु तक उनका अनुराग अखण्ड और अविच्छिन्न रहा। एक कहावत चल पड़ी– 'ऐसी कीजै प्रीतड़ी, जैसी भिक्खू भारीमालो।'

भगवान् महावीर और गौतम में जो संबंध था, उसी की पुनरावृत्ति हुई आचार्य भिक्षु और भारीमाल में। एक बार गौतम निराश हो गए तब भगवान् महावीर ने उन्हें आश्वासन दिया था। आचार्य भिक्षु के समाधि-मृत्यु के अवसर पर भारीमाल का मन खिन्न हो गया। वे बोले– गुरुदेव! अब आपका विरह हो रहा है। कितना दुःसह होगा यह मेरे लिए।

आचार्य भिक्षु ने आश्वासन की भाषा में कहा– तुम चिन्ता मत करना। संयम का भलीभांति पालन करना। तुम मृत्यु के बाद देव बनोगे और महाविदेह क्षेत्र में मुझसे अधिक ज्ञानी और महान् साधुओं के दर्शन कर पाओगे।

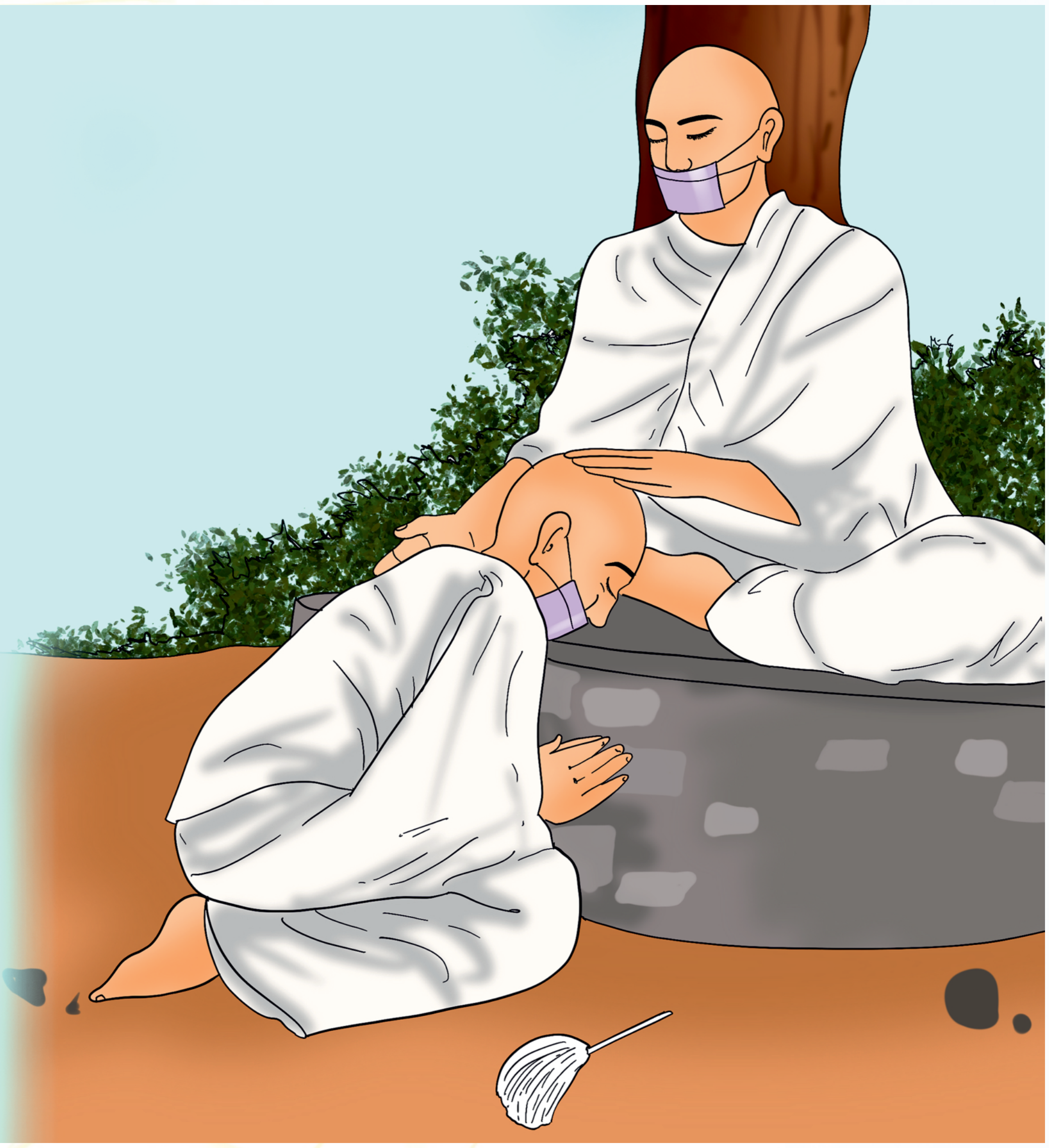

साप्ताहिक प्रेरणा

''ॐ भिक्षु जय भिक्षु'' की एक माला फेरे।।

क्या आप जानते हैं?

फिटकरी से शोधित किया हुआ पानी अचित्त माना जाए। उसे तपस्या में भी पीने में आपत्ति नहीं।

जानें तेरापंथ को पहचाने स्वयं को

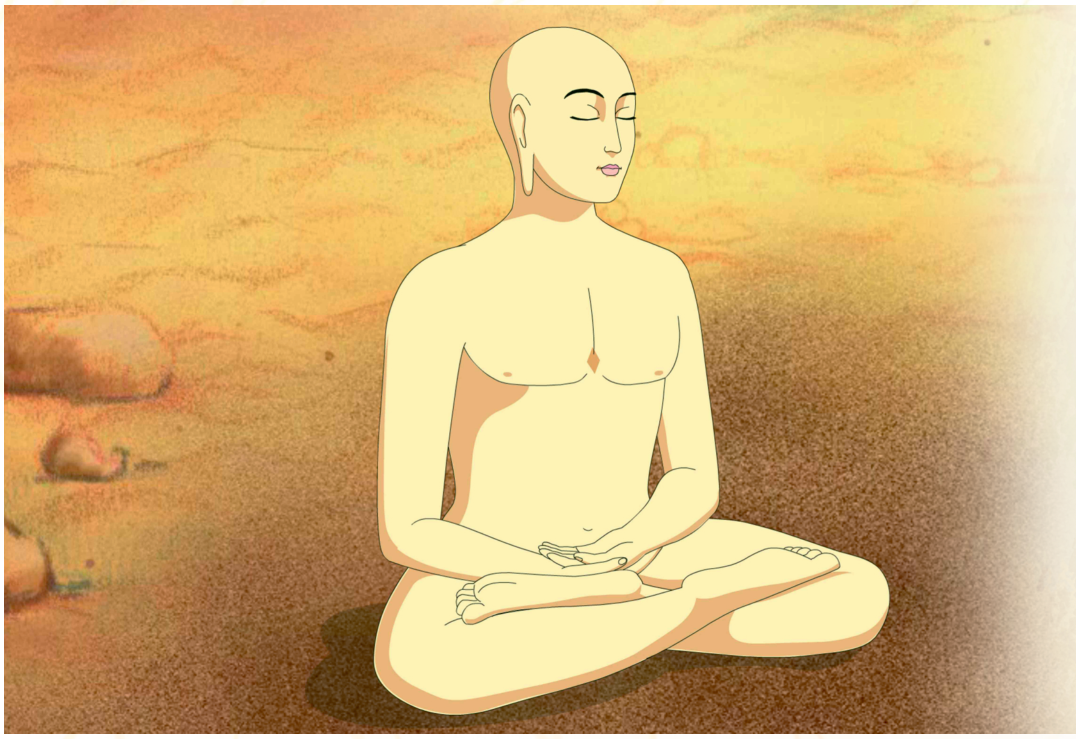

महावीर कौन-2?

12. सब कुछ प्राप्त होते हुए भी अहं रहित होना।
13. सदा सजग सत्पुरूषार्थ में संलग्न रहना।
14. दो माता व दो पिता का होना।
15. श्रावक व्रतों का विस्तार से विश्लेषण व निरूपण करना।
16. अनेकान्तवाद का प्रवर्तन करना।
17. कष्ट सहिष्णुता इतनी की 23 तीर्थंकरों को कष्टा एक तरफ कर दिया जाय तो भी अकेले महावीर प्रभु के कष्टों की सघनता की बराबरी नहीं कर सकते।

तो बंधुओ इतनी विशेषताएं मिले तब जाकर कोई महावीर बन पाता है। इन विशेषताओं को हम भी अपने जीवन में, अपने व्यवहार में उतारने का प्रयास करें, उनके दर्शन को हृदयंगम करें, तो हम वास्तव में महावीर के अनुयायी कहलाने के योग्य होंगे। महावीर को मानना आसान है पर महावीर को जानना मुश्किल है। महावीर को मानना आसान है पर महावीर की मानना मुश्किल, तो हम महावीर को जाने और अपनी आत्मा का उद्धार करें, कल्याण करें।

संदर्भ पुस्तकें : आचार्य भिक्षु जीवन दर्शन, भिक्खु दृष्टांत, श्रावक संदेशिका

दुनिया जीतना तो खेल है, असली 'बाहुबली' वही जो अपने लोभ और अहंकार को हरा दे : आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री प्रदान किया आंतरिक शत्रुओं को जीतने का सक्सेस मंत्र; जीवन को बैलेंस करने के लिए बताए 5 पावरफुल सूत्र

लाडनूं।
10 जुलाई, 2026

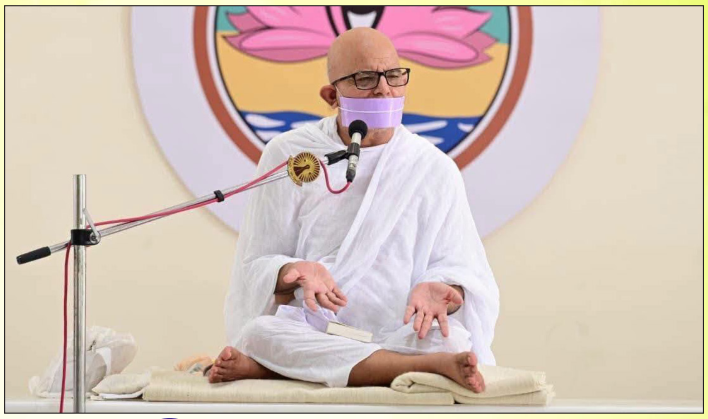

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने 'शत्रु कौन है' विषय पर गहन पाथेय प्रदान किया। आचार्यश्री ने उत्तरज्झयणाणि आगम के माध्यम से कुमार श्रमण केशी और गौतम स्वामी के ऐतिहासिक संवाद का प्रसंग रखते हुए फरमाया कि जब मुनि केशी ने पूछा कि हजारों शत्रुओं के बीच रहकर आपने उन्हें कैसे परास्त किया? तब गौतम स्वामी ने उत्तर दिया कि एक आत्मा जो न जीती हुई है, वही शत्रु होती है। वस्त्र या उपकरण केवल बाहरी पहचान हैं, मूल विजय तो अपने भीतर के शत्रुओं पर पानी होती है।

आगम के अनुसार ये हैं हमारे आंतरिक शत्रु : पूज्यप्रवर ने स्पष्ट किया कि यदि एक आत्मा शत्रु बन जाए, तो उसका पूरा परिवार ही शत्रु की तरह व्यवहार करता है।

१. **न जीती हुई आत्मा :** जो मन हमारे वश में नहीं है, वही मुख्य शत्रु है।

२. **चार कषाय :** क्रोध, मान (अहंकार), माया (छल-कपट) और लोभ मनुष्य के बड़े दुश्मन हैं।

३. **पांच इन्द्रियां :** अनियंत्रित और असंयमित इन्द्रियां जो जीव को सही मार्ग से भटकाती हैं। गौतम स्वामी ने ज्ञान के उपाय के अनुसार इन सबको जीता है और इन्हें जीतकर ही वे आनंदपूर्वक विहार कर रहे हैं।

> **दूसरों को गुलाम बनाना बहुत आसान है, लेकिन जो खुद के भटके हुए मन को अपना गुलाम बना ले, वही असली सिकंदर है।**
> –आचार्यश्री महाश्रमण

जीवन व्यवहार को बदलने वाले ५ पावन सूत्र : आचार्यश्री ने साधु और गृहस्थ दोनों के व्यावहारिक जीवन के लिए ५ मुख्य सूत्रों की आराधना करने की प्रेरणा दी।

१. **भाव क्रिया :** हम जो भी कार्य करें, यथासंभव हमारा पूरा ध्यान और एकाग्रता उसी कार्य में होनी चाहिए।

२. **प्रतिक्रिया विरति :** जीवन में कोई भी प्रतिकूल बात सामने आए तो तुरंत प्रतिक्रिया देने से बचें और धैर्य रखें।

३. **मैत्री :** संसार के सभी प्राणियों के प्रति मन में शुद्ध मैत्री का भाव जाग्रत रहे।

४. **मिताहार :** शरीर और साधना के निर्वाह के लिए भोजन और आहार का पूरा संयम रहे।

५. **मितभाषण :** साधु हो या सामान्य मनुष्य, हर किसी को अपनी वाणी पर पूर्ण संयम रखना चाहिए।

(शेष पेज 18 पर)

योगक्षेम वर्ष चित्रमय झलकियां

सम्पादकीय

संपादकीय कलम से.....

प्रिय धर्मप्राण बंधुओं...

समय के चक्र में कुछ क्षण ऐसे आते हैं, जो इतिहास की सीमाओं को लांघकर अमर हो जाते हैं। आज 'तेरापंथ' टाइम्स का यह विशेषांक हमारे अंतस को उसी अमरता और गहरी आध्यात्मिक चेतना से स्पंदित कर रहा है। हमारे आराध्य, आद्य प्रवर्तक क्रांतिधर्मी स्वामी श्री भिक्षु की त्रिजन्मशताब्दी की यह पावन पूर्णाहुति केवल एक उत्सव का समापन नहीं, बल्कि उस वैचारिक क्रांति के पुनर्जागरण का क्षण है, जिसने ढाई सौ वर्ष पूर्व समाज को शुद्धाचार की नई परिभाषा दी थी। कंटालिया में जनमे और सिरियारी की भूमि पर महाप्रयाण कर 'सिरियारी के संत' कहलाए स्वामीजी ने सत्य और अहिंसा का जो राजपथ निर्मित किया, आज उसी पर चलकर हमारा तेरापंथ संपूर्ण विश्व-क्षितिज पर दैदीप्यमान है।

आचार्य भिक्षु एक ऐसे युगद्रष्टा थे, जिनके भीतर बुराइयों के विरुद्ध चट्टान की तरह खड़े रहने की प्रतिरोधात्मक शक्ति जागृत थी। तत्कालीन समाज में फैली शिथिलता को दूर करने के लिए उन्होंने सुख-सुविधाओं को ठुकराकर सत्य के मार्ग पर एकाकी चलने का साहसिक निर्णय लिया। 'एक आचार, एक अनुशासन और एक आचार्य' का जो अद्वितीय सिद्धांत उन्होंने दिया, वही आज हमारे इस विराट धर्मसंघ का प्राणतत्व है। नवम अधिनायक आचार्य श्री तुलसी के वात्सल्य, दसवें आचार्य श्री महाप्रज्ञ की प्रज्ञा और वर्तमान में हमारे ग्यारहवें अनुशास्ता, युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की पावन निश्रा में—जो आज लाडनूं की धरा को अपने चातुर्मास से पावन कर रहे हैं—यह संघ आज संयम और सदाचार के नए सोपान तय कर रहा है।

इस ऐतिहासिक मोड़ पर सबसे जीवंत प्रश्न यह है कि स्वामीजी के इन सिद्धांतों को हमारी आज की 'युवा शक्ति' अपने जीवन में कैसे आत्मसात करे? स्वामीजी का संपूर्ण जीवन आत्म-विश्वास का साक्षात दस्तावेज है। जब केलवा की उस अंधेरी कोठरी में उन्होंने प्रवेश किया, तब उनके पास कोई भौतिक कवच नहीं, बल्कि कठोर साधना का अटूट संबल था, तो स्वामीजी के जीवन से ये तीन सूत्र अवश्य अपनाने होंगेः

भीड़ से अलग सत्य का साहसः स्वामीजी ने सिखाया कि यदि आप सत्य के साथ हैं, तो अकेले खड़े रहने से भी मत डरिए।

क्षण-जागरूकता (टाइम मैनेजमेंट)ः स्वामीजी का मूलमंत्र था— 'खणं जाणाई पंडिए'। यदि युवा शक्ति समय के हर पल की कीमत पहचान ले, तो वह अवसाद (Stress) से मुक्त होकर करियर और जीवन दोनों में शिखर छू सकती है।

आंतरिक अनुशासनः स्वामीजी का 'एक अनुशासन' का नियम हमारे व्यक्तिगत जीवन के लिए भी है। जब आधुनिक तकनीकी सोच के साथ आचार्य भिक्षु जैसा कड़ा आत्म-नियंत्रण जुड़ जाएगा, तब एक चरित्रवान व्यक्तित्व का निर्माण होगा।

आइए, इस त्रिजन्मशताब्दी पूर्णाहुति के पुनीत अवसर पर, हम सब लाडनूं में विराजे हमारे अनुशास्ता के चरणों में यह संकल्प निवेदित करें कि हम केवल भिक्षु के सिद्धांतों के प्रशंसक नहीं, बल्कि उनके जीवन मूल्यों के सच्चे संवाहक बनेंगे।

–कार्यकारी संपादक, तेरापंथ टाइम्स)

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - पवन एच जैन द्वारा मै.आर.डी. प्रिंटर्स एण्ड पब्लिसर्स प्राइवेट लिमिटेड बी 48, सेक्टर 8, नोएडा, गौतमबुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश - 201301 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।